राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्
नवदेहली

गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ ग्रन्थमाला

॥ ३६ ॥

पंजाबी-संस्कृत पाठमाला

शिवकुमार मिश्र

शैलकुमारी मिश्रा

बनमाली बिश्वाल

पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला

Punjabi-Sanskrit-Pathmala

(ਪੰਜਾਬੀ-ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ-ਪਾਠਮਾਲਾ)

प्रधान संपादक

डॉ० गयाचरण त्रिपाठी

प्राचार्य

लेखक

डॉ० शिवकुमार मिश्र

प्रोफेसर

डॉ० शैलकुमारी मिश्र
वरिष्ठ प्रवक्ता

डॉ० बनमाली बिश्वाल
प्रवक्ता

श्रीगङ्गानाथझा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ

चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क, इलाहाबाद-२११००२

१९९२

Rashtriya Sanskrit Sansthan

(Under the auspices of the Ministry of Human Resources Development, Govt. of India)

New Delhi

Ganganatha Jha
Kendriya Sanskrit Vidyapitha
TEXT SERIES

General Editor

Dr. G. C. Tripathi

No. 35

PUNJABI-SANSKRIT-PATHMALA

by

Prof. Dr. S.K. Mishra
Dr. Shail Kumari Mishra
Dr. Banamali Bishwal

ALLAHABAD
1992

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(केन्द्रीयमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्याङ्गभूतम्)
देहली

—•—

गङ्गानाथझाकेन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठग्रन्थमाला
प्रधानसम्पादकः
डॉ० गयाचरण त्रिपाठी

—•—

पञ्चत्रिंशं प्रसूनम्

—•—

पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला

—•—

लेखका :
प्रो० डॉ० शिवकुमार मिश्रः
डॉ० शैलकुमारी मिश्रा
डॉ० बनमाली बिश्वालः

—•—

गङ्गानाथझाकेन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्
चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क
प्रयागः
१९९२

प्रकाशकः
डॉ० गयाचरण त्रिपाठी
प्राचार्यः
गङ्गानाथझाकेन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्
चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क
इलाहाबाद-२

•

•

मूल्यम्

978-93-83135-51-6

•

मुद्रकः
शाकुन्तल मुद्रणालयः
३४, वलरामपुर हाउस
इलाहाबाद-२

FOREWORD

It gives us a feeling of great satisfaction to be able to publish this Introductory course of Sanskrit Language prepared especially for those mature students whose mother tongue is Punjabi. The course has been developed after a great deal of pedagogical thinking and great number of deliberations with the noted scholars. It is a natural sequel, or better still, the fulfilment of our academic endeavour which started with the publication of the "Punjabi-Sanskrit dictionary."

The basic idea behind the compilation of this Punjabi-Sanskrit dictionary was to prepare a glossary of those words in Punjabi which have been directly derived from Sanskit, or have come down to Punjabi through the intermediate languages like *Prākṛta* and *Apabhraṁśa* The purpose behid this endeavour was (a) to make the Punjabi speakers aware of the rich heritage of Sanskrit in their language and (b) to prepare a Sanskrit language course for Punjabi speakers by using, at the initial stage, only those words and expressions which are commonly used in Punjabi and thus form the natural vocabulary of a Punjabi-speaking person. This would save considerable

energy of a beginner because instead of wasting his time in aquiring new words, he can rather concentrate upon learning the grammar, as vocabulary and grammar are the two main ingredients of any language course. The present volume is an outcome of this desire and it underlines our motto to give an impetus to the study of Sanskrit in Punjab where, of late, it has suffered a heavy set-back.

The course is divided into thirty-one lessons. It gives the essentials of Sanskrit grammar in the most simple and lucid manner and very cautiously the basic vocabulary of Sanskrit choosing first from our Punjabi-Sanskrit glossary and then from other sources too—in order to widen the horizon of the student All lessons are properly graded in respect to vocabulary and grammar. The instructions and explanations are given first in Punjabi and then in Hindi, so that the Punjabi speaking people have the advantage of learning Sanskrit basically through their own language.

One of the tasks of the Rashtriya Sanskrit Sansthan is to publish simplified manuals and teaching-aids of Sanskrit language which may help people learn this language with less labour and in a shorter time This objective is partially achieved with the publication of these lessons.

This series of lessons constitutes the first volume of the present work. A second advanced volume is also envisaged which is under preparation and shall hopefully see the light of day soon.

These lessons have been prepared after careful planning with great diligence and foresight by the

members of the Language Unit, notably Prof. Shiv Kumar Mishra, Dr. (Smt.) Shail Kumari Mishra and Dr. Banamali Biswal. All these scholars, especially Prof. Shiv Kumar Mishra, have a long and mature experience of teaching Sanskrit language to students of all levels and they are personally conversant with the students' problems. After their first draft, the lessons have been thoroughly revised by some eminent scholars who have excellent knowledge of both Punjabi and Sanskrit, notably by Prof. Vasishtha, L. B. Shastri Vidyapeetha, Delhi. We, therefore, hope that they will serve their purpose of imparting knowledge of basic Sanskrit in a very simplified manner to anyone whose mother tongue is Punjabi.

It is our considered opinion that if Sanskrit is to be learnt 'without tears', there cannot be one general Sanskrit manual for the whole of India. A person whose mother-tongue is Tamil, may have completely different problems in learning Sanskrit than the one whose mother tongue is Bengali, for example. Various Sanskrit manuals are therefore required to be made available taking in view the chief characteristics of the mother tongue of the learner and the vocabulary of Sanskrit already assimilated by him through his mother tongue. This would lead to a considerable saving in time and labour of the student. We hope that this *Punjabi-Sanskrit Pāṭhamālā* would be a kind of pioneer in its field and show the way to the Sanskrit *Pāthamālās* for the other Indian languages as well.

I sincerely thank the members of our Languge Unit, especially Prof. S. K. Mishra under whose able guidance this splendid work has been accomplished and assure them

that most of Punjabi students shall be grateful to them for bringing this divine, yet difficult language within their reach. Sri Upendra Tripathi of the Shākuntal Mudraṇālaya deserves my special thanks for printing this work, which contains a lot of Punjabi language written in the Gurumukhi script, in neat and correct form here in Allahabad itself.

Allahabad
April 18th, 1992

GAYA CHARAN TRIPATHI
Principal
G N. Jha Research Institute

भूमिका

जब कोई भी ग्रन्थ लिखा जाता है, तो प्रश्न होता है कि यह किनके लिए है। 'पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला' के संदर्भ में भी यह जिज्ञासा स्वाभाविक है। जिज्ञासा के समाधान में कहा जा सकता है कि इस पुस्तक का प्रणयन पंजाबी-भाषा-भाषी शिक्षित प्रौढों को सरल पद्धति से संस्कृत सिखलाने के उद्देश्य से किया गया है। सरल पद्धति से संस्कृत-शिक्षण का तात्पर्य संस्कृत-शिक्षण-हेतु वर्तमान प्रविधि को सरलीकृत एवं आधुनिकीकृत करने से है। भाषाविदों एवं शिक्षाविदों द्वारा अनुभव किया गया है कि संस्कृत-शिक्षण की वर्तमान प्रविधियां एकांगी अथवा वर्तमान परिवेश में अप्रासगिक होने के कारण संस्कृत-शिक्षण के निर्धारित उद्देश्यों को संप्राप्त करने में सफल नहीं हैं। अतः आवश्यकता है इन प्रविधियों के अनुशीलन की, अनुचिन्तन की।

1. आधुनिक प्रविधि की तलाश (Search of New Method of Teaching Sanskrit)

किसी भी भाषा-शिक्षण में दो प्रमुख प्रतिवन्धक तत्त्व होते हैं—शब्दावली एवं व्याकरण। संस्कृत में ये दोनों ही तत्त्व अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक जटिल हैं। संस्कृत में पर्यायवाची शब्दों का बाहुल्य है। शब्दों एवं धातुओं के रूप एवं लिङ्ग की समस्या कुछ कम कठिन नहीं है। सन्धि-समास तथा उपसर्ग-प्रत्ययों से बने पद भी कुछ कम उलझन उत्पन्न नहीं करते। शब्दावली की इस जटिलता को कम किया जा सकता है। यह स्वीकृत तथ्य है कि संस्कृत (वैदिक तथा लौकिक) आर्यभाषाओं की जननी एवं आर्येतर भाषाओं की संपोषिका है। संस्कृत से विकसित होने के कारण इन आधुनिक आर्य एवं आर्येतर भारतीय भाषाओं में संस्कृत के प्रायः अस्सी प्रतिशत शब्द लेखन, पठन एवं व्यवहार में नित्य प्रयुक्त होते हैं। भाषाविदों एवं शिक्षाविदों ने यह अनुभव किया कि यदि इन

आधुनिक भारतीय भाषाओं में से संस्कृतमूलक एवं समानार्थक शब्दों का चयन करके उनके आधार पर संस्कृत में क्षेत्रीय, प्रदेशीय तथा राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शैक्ष्य सामग्री का निर्माण किया जाय, तो शब्दावली की समस्या का समाधान अवश्य हो जायेगा। क्योंकि, शिक्षण-सामग्री में शिशिक्षुओं को अपनी ही क्षेत्रीय भाषा या मातृभाषा के शब्दों को पाकर सुखद आश्चर्य होगा। अब उन्हें संस्कृत के नये शब्द सीखने के लिये अतिरिक्त श्रम नहीं करना पड़ेगा। शिशिक्षु इससे बचे समय का सदुपयोग व्याकरण की गुत्थियों को सुलझाने में कर सकेगा। सुपरिचित शब्दावली द्वारा संस्कृत-शिक्षण सरल एवं प्रभावी हो सकेगा—ऐसा अनुमान करना स्वाभाविक एवं सहज है। आवश्यकता है आधार-भाषा (Base Language)—क्षेत्रीय अथवा मातृभाषा के अनुरूप लक्ष्य भाषा (Target Language)—संस्कृत की शिक्षण-योजना के उपक्रम की।

व्याकरण की जटिलता को भी कई उपायों से कम किया जा सकता है। आज भी संस्कृत के पाठ्यक्रमों एवं पुस्तकों में शिशिक्षु के शैक्षिक स्तरों का ध्यान रखे बिना अनेक अनावश्यक व्याकरण-बिन्दु (Grammatical items) समाहित चल रहे हैं। शब्दों, धातुओं एवं उनके रूप तथा अव्ययों के अनेक ऐसे प्रयोग इन पुस्तकों में देखे जा सकते हैं, जिनका संस्कृत के मूल उद्देश्यों (Basic Objectives) की संप्राप्ति में कोई योगदान नहीं है। प्रारम्भ में इन व्याकरण-तत्त्वों का संस्कृत-साहित्य के अध्ययन में भी कोई विशेष महत्त्व नहीं है। अतः इन्हें प्रथम स्तर के पाठ्यक्रम एवं पुस्तक से हटा देना ही श्रेयस्कर होगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि सम्पूर्ण संस्कृत-वाङ्मय के अध्ययन की दृष्टि से ये व्यर्थ हैं। हमारा मात्र तात्पर्य इनके श्रेणीकरण (Gradation) से है। प्राथमिकता उन व्याकरण-तत्त्वों को दी जानी चाहिए, जो व्यावहारिक दृष्टि से भाषा-ज्ञानोपार्जन में सर्वाधिक उपयोगी हों, बहु-प्रयुक्त हों तथा जिनकी बारम्बारता (Freqency) अधिक हो।

जब किसी भाषा-विशेष को आधार बनाकर सरल एवं आधुनिक प्रविधि द्वारा संस्कृत-शिक्षण की योजना बनाई जायेगी, तब इस भाषा-विशेष की प्रकृति (शब्द-भण्डार, वाक्य-संरचना, व्याकरण-तत्त्व आदि), मांग एवं अपेक्षाओं के अनुरूप ही पाठ्यक्रम एवं शैक्ष्य सामग्री का निर्माण अपरिहार्य होगा। वस्तु का चयन, श्रेणीकरण एवं प्रस्तुतीकरण—सब उस

भाषा-विशेष की प्रकृति के अनुकूल होंगे क्योंकि अपेक्षाएँ बदल जाने से प्रविधि (Teaching Technique) भी बदल जायगी।

यह प्रविधि सम्पूर्ण रूप से तो नई नहीं कही जा सकती, क्योंकि संस्कृत-शिक्षण की प्रचलित प्रविधियों में से विश्लेषण-प्रविधि के अधिकांश गुण इसमें समाहित हैं। इस प्रविधि के द्वारा प्रस्तुत योजना के पाठ्यक्रम में संस्कृत-शिक्षण के लिए निर्धारित अधिकांश उद्देश्यों की संप्राप्ति की जा सकेगी।

संस्कृत-शिक्षण के संदर्भ में उपर्युक्त नूतन चिन्तन एवं तथ्यों को ध्यान में रखकर सर्वप्रथम पंजावी भाषा को आधार-भाषा बनाकर [क्योंकि पंजाव वेदों की आदि-भूमि रही है तथा भाषा-विकास की दृष्टि से पंजावी संस्कृत से अधिक निकट है।] इस विद्यापीठ के भाषानुभाग ने 'पंजावी-संस्कृत शब्दकोश' का निर्माण किया, जो प्रकाशित हो चुका है। इस कोश में संस्कृत-मूलक एवं समानार्थक शब्दों का संकलन एवं विश्लेषण है। उक्त कोश की शब्दावली के आधार पर पंजावी भाषा-भाषियों को संस्कृत सिखलाने के उद्देश्य से भाषानुभाग द्वारा एक संस्कृत-पाठ्यक्रम का भी विकास किया गया, जो चक्रमुद्रित रूप में अनुभाग की सम्पत्ति है।

2. प्रस्तुत शिक्षण-योजना/पाठ्यक्रम की विशेषताएँ (Special Features of the Syllabus)

इस पाठ्यक्रम की सर्वोपरि विशेषता यह है कि इसकी शब्दावली तथा व्याकरण-बिन्दु सम्पूर्णतया नियन्त्रित (Controlled) एवं श्रेणीकृत (Graded) हैं, जो संस्कृत-शिक्षण के मूल उद्देश्यों की संप्राप्ति में साक्षात् उपयोगी हैं। इस पाठ्यक्रम पर विकसित प्रस्तुत पुस्तक 'पंजावी-संस्कृत-पाठमाला' में उन्हीं शब्दों (संज्ञा, क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि) का प्रयोग किया गया है, जो पंजाव-क्षेत्र में तत्सम अथवा तद्भव के रूप में बहुप्रचलित हैं। व्याकरण-बिन्दुओं के चयन (Selection) तथा श्रेणीकरण (Gradation) में शिशिक्षु के शैक्षिक स्तर का पदे-पदे ध्यान रखा गया है। पंजावी भाषा की प्रकृति एवं प्रयोग के अनुरूप ही वाक्य-संरचनाओं का चयन एवं श्रेणीकरण किया गया है। इस पुस्तक में वर्ण-शिक्षा के तत्काल वाद सात पाठों तक सर्वप्रथम भूतकालार्थक 'अस्' धातु का प्रयोग सिखलाया गया है, क्योंकि पंजावी भाषा में भूतकालिक 'सी' ('ਸੀ',

'आसीत्' का अवशिष्ट रूप) प्रत्यय का प्रयोग-बाहुल्य है। अवधेय है कि वर्तमान में विद्यालयों की प्राथमिक संस्कृत-पुस्तकों का आरम्भ प्रायः वर्तमान कालिक वाक्य-संरचनाओं से होता है। व्याकरण-बिन्दुओं के चयन-क्रम में प्रथम स्तरीय इस पाठ्यक्रम में द्विवचन का प्रयोग संस्कृत में स्वल्प प्रयोग तथा भाषान्तरों में अनुपलब्धि के आधार पर छोड़ दिया गया है। विभक्तियों एवं कालों (लकारों) के प्रसंग में अनिवार्य नियमों का ही निर्देश किया गया है, अर्थात् उनके समस्त रूपों का निर्देश नहीं किया गया है। अपवाद-नियमों का प्रायः परिहार कर दिया गया है।

'पंजाबी-संस्कृत शब्द कोश' से लेकर 'पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला' की सम्पूर्ण योजना पंजाबी भाषा-भाषी शिक्षित प्रौढों के संस्कृत-शिक्षण के लिए है, न कि विद्यालयीय या पाठशालीय छात्र-छात्राओं के लिए। छात्र-छात्राओं की संस्कृत-शिक्षा की प्रपूर्ति तो सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्कृत-पाठशालाओं एवं आधुनिक विद्यालयों द्वारा हो जाती है, पर शिक्षित प्रौढ़ों की संस्कृत-शिक्षा का कहीं भी अवसर नहीं है। शिक्षित प्रौढों के संस्कृत-शिक्षण की योजना या कार्यक्रम संप्रति कहीं चल रहा हो, ऐसा श्रुतिगोचर नहीं हुआ है। शिक्षित प्रौढों के संस्कृत-शिक्षण का कार्यक्रम अब और भी आवश्यक हो गया है, क्योंकि नई शिक्षा-नीति के के कारण विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में संस्कृत-शिक्षार्थियों की संख्या में अकल्पनीय ह्रास हुआ है। अपने देश में शिक्षित प्रौढ़ों का एक विशाल समुदाय है। ये शिक्षित प्रौढ़ छात्रावस्था में तो किन्हीं कारणों से संस्कृत-शिक्षा से वंचित रह गये, पर अब मस्तिष्क की प्रौढ़ावस्था प्राप्त करने पर तथा संस्कृत के सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं भाषिक शाश्वत मूल्यों को जानने के बाद मूल-रूप से संस्कृत पढ़ना चाहते हैं। इन शिक्षित प्रौढ़ों के संस्कृत शिक्षण का कार्यक्रम अपनाने से संस्कृत भाषा का व्यापक प्रचार एवं प्रसार हो सकेगा। पंजाब में भी ऐसे शिक्षित प्रौढ़ों की विपुल संख्या है। यद्यपि यह सम्पूर्ण योजना पंजाबी-भाषा-भाषी शिक्षित प्रौढ़ों के लिए है, तथापि यह किसी भी आयु-वर्ग में प्रथम स्तरीय संस्कृत-शिक्षा के लिए प्रविधि में यत्किंचित् परिवर्तन करने पर उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

किसी भी उपक्रम के कतिपय उद्देश्य होते हैं। प्रस्तुत शिक्षण योजना के निम्नांकित उद्देश्य हैं—

3. प्रस्तुत शिक्षण-योजना/पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Objectives of the Syllabus)

— संस्कृत के भाषा-तत्त्वों का ज्ञान कराना।

— संस्कृत-ध्वनियों की आकृति, उनके शुद्ध उच्चारण तथा लेखन से परिचय कराना।

— वर्णों के संयोग से शब्दों का लेखन तथा वर्णों के वियोग से शब्दों का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना।

— पंजावी-भाषा के संस्कृत-मूलक शब्दों के अभ्यास द्वारा संस्कृत-भाषा एवं साहित्य के अध्ययन में अभिरुचि उत्पन्न करना।

— पजावी-भाषा में प्रचलित संस्कृतमूलक एवं समानार्थक शब्दों का व्यावहारिक प्रयोग सिखलाना।

— अर्थ-वोध के साथ सरल संस्कृत-शब्दो एवं वाक्यों को पढ़ने की क्षमता का विकास करना।

— संस्कृत के सरल प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर देने की क्षमता विकसित करना।

— संस्कृत के सरल वाक्य सुनकर उनका अर्थ बताने की क्षमता विकसित करना।

— संस्कृत-वाक्यों का पंजावी-भाषा तथा पंजावी-भाषा का संस्कृत-भाषा में अनुवाद करने की क्षमता का विकास करना।

— पाठों में आगत शाश्वत मूल्यों की वाक्यावली तथा प्रत्येक पाठ के परिशिष्ट भाग में आये हुए श्लोकों के द्वारा सत्प्रवृत्तियों का विकास करना।

प्रस्तुत योजना के सम्पन्न होने पर शिक्षार्थी उपर्युक्त उद्देश्यों की संप्राप्ति कर सकेगा।

4. 'पंजाबी-संस्कृत-पाठमाला' के विषय में (About the book)

'पंजावी-संस्कृत-पाठमाला' का यह पाठ्यक्रम दो स्तरों में विभक्त है—प्रथम स्तर तथा द्वितीय स्तर। विभाजन का आधार शिक्षणीय व्या-

करण-बिन्दु (Teachable Grammatical Points) है। किसी भी भाषा के शिक्षण में व्याकरण की भूमिका को अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। पर व्याकरण संस्कृत का तो प्राण है। अतएव संस्कृत-शिक्षण में व्याकरण की महती भूमिका होती है। विशेषतया वहाँ, जहाँ संस्कृत को तृतीय या चतुर्थ भाषा का स्थान प्राप्त हो। प्राथमिक स्तर का पाठ्यक्रम तो निश्चित रूप से व्याकरण-नियमों पर आधृत होना चाहिए।[1] भाषाविदों तथा शिक्षाविदों द्वारा निर्धारित किया गया कि न्यूनतम 100 व्याकरण विन्दुओं के शिक्षण से शिशिक्षु को पाठ्यक्रम में निर्धारित भाषा-तत्त्वों के उद्देश्यों को संप्राप्त कराया जा सकेगा। इन व्याकरण-विन्दुओं को श्रेणीकृत करने पर सुनिश्चित किया गया कि इनके शिक्षण के लिए कुल 62 काल-खण्डों की अपेक्षा होगी तथा प्रत्येक काल-खण्ड दो घण्टे की अवधि का होगा। इस प्रकार प्रथम स्तर एवं द्वितीय स्तर पर 31-31 कुल 62 पाठ बने। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यह पाठ्यक्रम शिक्षित प्रौढ़ों के संस्कृत-शिक्षण के लिए कुल 62 काल-खण्डों, 62 पाठों तथा 124 घण्टों में सम्पन्न किये जाने की अपेक्षा रखता है।

इन दोनों ही स्तरों पर पाठ्यक्रम में निर्धारित भाषा-तत्त्वों (Linguistic Contents) का ज्ञान कराना मुख्य उद्देश्य रहा है, इसलिये असमन्वित (विच्छिन्न) वाक्यावली पाठों की विवशता वन गई है। क्योंकि प्रारम्भिक स्तर पर विषय-वस्तु (Thematic Content, Subject matter) के मूल तत्त्वों (अभिप्रेरण, अभिरुचि, विविधता आदि) का समान रूप से निर्वहण सहजतया संभव नहीं था। संभव है, इससे एक-रसता का अनुभव हो। पर पाठों के अधिसंख्य वाक्य शाश्वत प्रकृति के हैं तथा शिक्षार्थी के निकट परिवेश के हैं। इसलिए एकरसता का दंश तीक्ष्ण नहीं होगा—ऐसी धारणा है। समस्त निर्देश पहले पंजाबी तथा वाद में हिन्दी भाषा में दिये गये हैं।

5. पाठों के विषय में (About the Lessons)

प्रत्येक पाठ पाँच भागों में विभक्त है—मूलपाठ, शब्दकोश, निर्देश, व्याकरण तथा अभ्यास। प्रत्येक पाठ के आरम्भ में उस पाठ के प्रमुख

---

1. During the first three years, the text must be closely based on grammatical rules.

The Teaching of Sanskrit Pp. 90 Raghunath Safaya.

शिक्षणीय **व्याकरण-बिन्दु** का निर्देश किया गया है। इस प्रमुख शिक्षणीय बिन्दु की धुरी पर सम्पूर्ण पाठ-चक्र चलता है, जो मूलपाठ से आरम्भ होकर अभ्यास, यहाँ तक कि पाठ के परिशिष्ट में आये हुए श्लोकों तक जाता है। पाठों में कहीं तो एक तथा कहीं-कहीं दो या तीन भी पाठ्य-विन्दु आये हैं। कोई-कोई पाठ्यविन्दु एक से दूसरे पाठ तक चला गया है। ऐसा तत्-तत्-पाठ्यविन्दु की सरलता एवं जटिलता के कारण हुआ है। यदि कहीं संश्लिष्ट पाठ्यविन्दु आये भी हैं, तो वे मुख्य बिन्दु के सहायक एवं पूरक के रूप में आए हैं। पर ऐसा अपरिहार्य स्थिति में ही हुआ है। **मूलपाठ** आद्यन्त 'सरलता से जटिलता' के शिक्षाशास्त्रीय सिद्धान्त पर लिखे गये हैं। आरम्भ में वाक्यों का आकार छोटा तथा क्रमशः वड़ा होता गया है। जैसे—

"हंसः आसीत्। बालकः कुत्र आसीत्? अहम् अद्य प्रातः तत्र आसम्। तत् फलं कुत्र आसीत्? ये प्रातः अत्र आसन्, किं ते छात्राः? पीयूषः पठति। सुदेशः पाठं पठति। बालकः दुग्धं पीत्वा हसति" इत्यादि।

मूलपाठों में प्रयुक्त शब्दावली शिक्षार्थी के निकट परिवेश की है। पूर्व पाठों में आगत शब्दों की पुनरावृत्ति पर विशेष ध्यान दिया गया है। शाश्वत प्रकृति एवं नैतिक मूल्यों के वाक्यों द्वारा शिक्षार्थी की सत्प्रवृत्तियों का विकास कराया गया है। **शब्दकोश** के अन्तर्गत पाठ में आये नये एवं कठिन शब्दों (प्रातिपदिकों) का अर्थ हिन्दी तथा पंजाबी में दिया गया है, जिसकी सहायता से शिक्षार्थी अर्थगत कठिनाई स्वयं दूर कर सकता है। इस प्रकार प्रथम स्तर पर कुल 75 नये शब्द, 100 धातुएँ तथा 47 अव्यय सिखलाए गये हैं। **निर्देश** के अन्तर्गत शिशिक्षु की वाक्य-संरचना-सम्बन्धी संभावित समस्त जिज्ञासाओं का समाधान दिया गया है। इस भाग में व्याकरण के नियमों को उदाहरण-सहित अत्यन्त सरल एवं स्पष्ट भाषा में समझाया गया है। शिक्षार्थी को पृथक् से किसी व्याकरण-पुस्तक की सहायता अपेक्षित नहीं है। **व्याकरण** के अन्तर्गत शब्दों एवं धातुओं के रूप समझाये गये हैं। शिक्षण-योजना में **अभ्यास** का वड़ा महत्त्व होता है। शिक्षण और परीक्षण में घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षार्थी भाषा-शिक्षण के निर्धारित उद्देश्यों की संप्राप्ति में कहाँ तक सफल हुआ है—यह परीक्षण (अभ्यास) द्वारा मापित होता है। अभ्यास पठित ज्ञान को सुदृढ़ भी करता है। संस्कृत के परिप्रेक्ष्य में अभ्यास का महत्त्व और भी वढ़ जाता

विषय-सूची

क्रमाङ्क	पाठ-संख्या	विषय-वस्तु	पृ० सं०
1.	प्रथमः पाठः	वर्ण-परिचय	1
2.	द्वितीयः पाठः	असंयुक्त वर्ण	8
3.	तृतीयः पाठः	संयुक्त वर्ण	16
4.	चतुर्थः पाठः	संज्ञा अकारान्त पुं०, अस् धातु लङ्लकार (भूतकाल)	24
5.	पञ्चमः पाठः	सरल अव्यय	31
6.	षष्ठः पाठः	युष्मद्, अस्मद्, कर्त्ताकारक (प्रथमा विभक्ति)	32
7.	सप्तमः पाठः	तत् शब्द (पुं०, स्त्री, तथा पुं०) कर्त्ता कारक प्रथमा विभक्ति, अव्यय	42
8.	अष्टमः पाठः	यत्, किं शब्द (तीनों लिङ्ग) प्रथमा वि०, अस् धातु लट्लकार (वर्तमान काल)	48
9.	नवमः पाठः	अकारान्त पुं०, नपुं०, आकारान्त स्त्री० संज्ञाएं (प्र० वि०) भू, पठ्, चल्, पा, गम्, वद्, हस् लिख् आदि धातुओं का लट्लकार में प्रयोग	53

क्रमाङ्कः	पाठ-संख्या	विषय-वस्तु	पृ० सं०
10.	दशमः पाठः	पूर्व प्रयुक्त सर्वनामों व संज्ञाओं की द्वितोया विभक्ति (कर्म कारक)	59
11.	एकादशः पाठः	सरल धातुओं के साथ 'क्त्वा' प्रत्यय	65
12.	द्वादशः पाठः	सरल धातुओं के साथ 'तुमुन्' प्रत्यय	69
13.	त्रयोदशः पाठः	प्रसिद्ध प्रचलित उपसर्गों के साथ 'ल्यप्' प्रत्यय का प्रयोग	73
14.	चतुर्दशः पाठः	लृट् लकार (भविष्यत् काल), इदं सर्व० शब्द (तीनों लिङ्ग)	79
15.	पञ्चदशः पाठः	लङ्लकार (भूतकाल)	84
16.	षोडशः पाठः	तृतीया विभक्ति, दीर्घ सन्धि	
17.	सप्तदशः पाठः	'क्त' प्रत्यय (प्रथमा विभक्ति) तीनों लिङ्ग	96
18.	अष्टादशः पाठः	क्तवतु प्रत्यय, पुं०, स्त्री० प्रथमा विभक्ति	104
19.	एकोनविंशः पाठः	चतुर्थी, पञ्चमी विभक्ति	109
20.	विंशः पाठः	षष्ठी विभक्ति तथा गुण सन्धि	115
21	एकविंशः पाठः	सप्तमी विभक्ति तथा यण् सन्धि	121
22.	द्वाविंशः पाठः	लोट्लकार (आज्ञार्थक)	127
23.	त्रयोविंशः पाठः	पूर्व प्रयुक्त सभी विभक्तियों की आवृत्ति	123
24.	चतुर्विंशः पाठः	विशेषण	139

क्रमाङ्कः	पाठ संख्या	विषय-वस्तु	पृ० सं०
25.	पञ्चविंशः पाठः	'शतृ' प्रत्यय प्रथमा विभक्ति, वृद्धि सन्धि	144
26.	षड्विंशः पाठः	इकारान्त पुं०, ईकारान्त स्त्री०	149
27.	सप्तविंशः पाठः	उकारान्त पुं० शब्द के सभी विभक्तियों में रूप	154
28.	अष्टाविंशः पाठः	उकारान्त, ऊकारान्त स्त्री० शब्द के सभी विभक्तियों के रूप	158
29.	एकोनत्रिंशः पाठः	ऋकारान्त पुं०, स्त्री० शब्द	163
30.	त्रिंशः पाठः	हलन्त शब्द के कुछ प्रचलित रूप	169
31.	एकत्रिंशः पाठः	शतृ-प्रत्यय (पुं०) द्वितीया और तृतीया विभक्ति	174

संकेत सूची

गु० मु०	=	गुरुमुखी
दे० ना०	=	देवनागरी
पुं०	=	पुंल्लिङ्ग
नपुं०	=	नपुंसकलिङ्ग
स्त्री०	=	स्त्रीलिङ्ग
प्र०	=	प्रत्यय
सर्व०	=	सर्वनाम
प्र० पु०	=	प्रथम पुरुष
म० पु०	=	मध्यम पुरुष
उ० पु०	=	उत्तम पुरुष
ए० व०	=	एकवचन
ब० व०	=	बहुवचन
पृ० सं०	=	पृष्ठ संख्या

ਪ੍ਰਥਮਃ ਪਾਠਃ

ਵਰਣ ਪਰਿਚਯ

वर्णपरिचय

ਵਰਣ ਦੋ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ— ਸਵਰ ਅਤੇ ਵਿਅੰਜਨ।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं—स्वर तथा व्यञ्जन।

स्वर :—

ਗੁਰੁਮੁਖੀ –	ਅ	ਆ	ਇ	ਈ	ਉ	ਊ		
देवनागरी —	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	लृ
ਗੁ० ਮੁ० —	ਏ	ਐ	ਓ	ਔ	ਅਂ	ਅਃ		
दे० *ना०* —	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः		

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਦੇਵਨਾਗਰੀ ਵਰਣਮਾਲਾ ਵਿਚ ਸਵਰਾਂ ਦੇ ਕ੍ਰਮ ਵਿਚ 'ਰਿ' ਤੇ 'ਲ੍ਰਿ' ਸਵਰ ਵੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਗੁਰਮੁਖੀ ਵਰਣਮਾਲਾ ਵਿਚ ਇਹ ਦੋਨੋਂ ਸਵਰ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਫਿਰ ਵੀ ਲੋੜ ਪੈਣ ਤੇ 'ऋ' ਨੂੰ 'ਰਿ' ਲਿਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। 'ਲ੍ਰਿ' ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁਣ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਨਹੀਂ ਹੈ।

देवनागरी वर्णमाला में स्वरों के क्रम में 'ऋ' तथा 'लृ' स्वर भी होते हैं। गुरुमुखी वर्णमाला में ये दोनों नहीं होते, किन्तु आवश्यकता होने पर 'ऋ' को 'रि' लिखा जाता है। 'लृ' का प्रयोग अब भाषा में प्रचलित नहीं है।

ह्रस्वस्वर :—

ਗੁ० ਮੁ० — ਅ ਇ ਉ
दे० ना०— अ इ उ ऋ

दीर्घस्वर :—

ਗੁ० ਮੁ० — ਆ ਈ ਊ — ਏ ਐ ਓ ਔ ਅੰ ਅ:
दे० ना०— आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ अं अ:

2. ਜਿਸਦੇ ਉਚਾਰਣ ਲਈ ਇਕ ਮਾਤ੍ਰਾ ਦਾ ਟੈਮ ਲਗਦਾ ਹੈ ਉਸ ਨੂੰ 'ਹ੍ਰਸਵ' ਸਵਰ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਅਤੇ ਜਿਸਦੇ ਉਚਾਰਣ ਲਈ ਦੋ ਮਾਤ੍ਰਾ ਦਾ ਟੈਮ ਲਗਦਾ ਹੈ ਉਸ ਨੂੰ 'ਦੀਰਘ' ਸਵਰ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਅਰਥਾਤ 'ਹ੍ਰਸਵ' ਸਵਰ ਦੇ ਉਚਾਰਣ ਲਈ ਜਿੰਨਾ ਟੈਮ ਲਗਦਾ ਹੈ ਉਸ ਤੋਂ ਦੁਗਣਾ ਟੈਮ ਦੀਰਘ ਸਵਰ ਦੇ ਉਚਾਰਣ ਵਿਚ ਲਗਦਾ ਹੈ।

ਜਿਵੇਂ 'ਇ' ਦੇ ਉਚਾਰਣ ਲਈ ਇਕ ਮਾਤ੍ਰਾ ਦਾ ਟੈਮ ਅਤੇ 'ਈ' ਦੇ ਉਚਾਰਣ ਲਈ ਦੋ ਮਾਤ੍ਰਾ ਦਾ ਟੈਮ ਲਗਦਾ ਹੈ।

जिसके उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है, उसको ह्रस्व स्वर कहते हैं और जिसके उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। अर्थात् ह्रस्व स्वर के उच्चारण में जितना समय लगता है, उससे दुगुना समय दीर्घ स्वर के उच्चारण में लगता है।

जैसे—'इ' के उच्चारण में एक मात्रा का समय तथा 'ई' के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है।

3. ਵਰਣ ਨੂੰ ਅਖਰ ਵੀ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

वर्ण को 'अक्षर' भी कहा जाता है।

4. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਐ (ऐ) ਦਾ ਉਚਾਰਣ ਕਰਣ ਲਈ "ਅਇ" (अइ) ਜਿਹਾ ਉਚਾਰਣ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਜਿਵੇਂ—

ਐਰਾਵਤ	—	ਅਇਰਾਵਤ ।
ਕੈਲਾਸ਼	—	ਕਇਲਾਸ਼ ।
ਸ਼ੈਲ	—	ਸ਼ਇਲ

संस्कृत भाषा में ऐ का उच्चारण करने के लिए 'अइ' जैसा उच्चारण किया जाता है ।

जैसे—

ऐरावत	—	अइरावत
कैलास	—	कइलास
शैल	—	शइल

5. ਇਸੀ ਤਰਹਾਂ 'ਔ' ਦਾ ਉਚਾਰਣ 'ਅਓ' ਹੋਵੇਗਾ ।

ਜਿਵੇਂ—

ਔਸ਼ਧ	—	ਅਉਸ਼ਧ
ਕੌਰਵ	—	ਕਉਰਵ
ਸੌਰਭ	—	ਸਉਰਭ
ਗੌਰਵ	—	ਗਉਰਵ

इसी प्रकार 'औ' का उच्चारण 'अउ' होगा ।

जैसे—

औषध	—	अउषध
कौरव	—	कउरव
सौरभ	—	सउरभ
गौरव	—	गउरव

व्यञ्जन :—

ਗੁ੦ ਮੁ੦	ਕ	ਖ	ਗ	ਘ	ਙ
ਦੇ੦ ਨਾ੦	क	ख	ग	घ	ङ
ਗੁ੦ ਮੁ੦	ਚ	ਛ	ਜ	ਝ	ਞ
ਦੇ੦ ਨਾ੦	च	छ	ज	झ	ञ
ਗੁ੦ ਮੁ੦	ਟ	ਠ	ਡ	ਢ	ਣ
ਦੇ੦ ਨਾ੦	ट	ठ	ड	ढ	ण
ਗੁ੦ ਮੁ੦	ਤ	ਥ	ਦ	ਧ	ਨ
ਦੇ੦ ਨਾ੦	त	थ	द	ध	न
ਗੁ੦ ਮੁ੦	ਪ	ਫ	ਬ	ਭ	ਮ
ਦੇ੦ ਨਾ੦	प	फ	ब	भ	म
ਗੁ੦ ਮੁ੦	ਯ	ਰ	ਲ	ਵ	ੜ
ਦੇ੦ ਨਾ੦	य	र	ल	व	—
ਗੁ੦ ਮੁ੦	ਸ਼		ਸ	ਹ	
ਦੇ੦ ਨਾ੦	श	ष	स	ह	

5. ਦੇਵਨਾਗਰੀ ਵਿਚ 'ਕ' ਤੋਂ 'ਹ' ਤਕ ਦੇ ਵਰਣਾਂ ਨੂੰ ਵਿਅੰਜਨ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਗੁਰੁਮੁਖੀ ਲਿਪਿ ਵਿਚ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣ 'ਸ-ਹ' ਤੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਕਿੰਤੁ ਨਾਗਰੀ ਲਿਪਿ ਵਿਚ 'ਸ-ਹ' ਸ਼ਾਰੇ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣਾਂ ਦੇ ਅਖੀਰ ਵਿਚ ਲਿਖੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

देव नागरी में 'क' से 'ह' तक के वर्णों को व्यञ्जन कहते हैं। गुरुमुखी लिपि में व्यञ्जन वर्णों का प्रारम्भ 'स-ह' से होता है, किन्तु नागरी लिपि में 'स-ह' सभी व्यञ्जन वर्णों के अन्त में लिखे जाते हैं।

6. ਗੁਰਮੁਖੀ ਵਰਣਮਾਲਾ ਵਿਚ 'ਸ' ਵਰਣ ਇਕ ਹੀ ਹੈ, ਕਿੰਤੁ ਨਾਗਰੀ ਵਰਣਮਾਲਾ ਵਿਚ ਇਸਕੇ ਤਿੰਨ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹਨ। "श, ष, स"। ਕ੍ਰਮਸਾ ਇਹਨਾ ਨੂੰ ਤਾਲਵਿਅ, ਮੂਰਧਨਿਅ ਅਤੇ ਦੰਤਿਅ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। "श" ਤਾਲਵਿਅ ਵਿਅੰਜਨ ਹੈ

ਕਿਉਂਕਿ ਇਸਦਾ ਉਚਾਰਣ ਤਾਲੂ ਤੋਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮੂਰਧਨਿਅ 'ਸ਼' ਦਾ ਉਚਾਰਣ ਮੂੰਹ ਦੇ ਮੂਰਧਾ (ਤਾਲੂ ਤੇ ਦੰਦਾਂ ਦੇ ਗਭੱਲਾ ਹਿਸਾ) ਤੋਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰਹਾਂ ਦੰਤਿਅ 'ਸ' ਦਾ ਉਚਾਰਣ ਕਰਦੇ ਸਮਿਆਂ ਜੀਭ ਨਾਲ ਦੰਦਾ ਦਾ ਸਪਰਸ਼ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

गुरुमुखी वर्णमाला में 'स' वर्ण एक ही है, किन्तु नागरी वर्णमाला में इसके तीन प्रकार हैं—श, ष, स। क्रमशः इनको तालव्य, मूर्धन्य और दन्त्य कहते हैं। 'श' तालव्य व्यञ्जन है, क्योंकि इसका उच्चारण तालु से होता है। मूर्धन्य 'ष' का उच्चारण मुख के मूर्धा-भाग (तालु और दात के मध्य स्थित भाग से) होता है। इसी प्रकार दन्त्य 'स' का उच्चारण करते समय जीभ से दाँतों का स्पर्श होता है।

7. ਦੇਵਨਾਗਰੀ ਵਿਚ ਕੁਛ ਵਰਣ ਦੋ ਤਰੀਕਿਆਂ ਨਾਲ ਲਿਖੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ :—

देव नागरी में कुछ वर्ण दो प्रकार से लिखे जाते हैं—
जैसे :—अ—अ, झ—झ, ण—ण, ल—ल।

ਅਭਿਯਾਸ (अभ्यासः)—

1. ਨਾਗਰੀ ਲਿਪਿ ਦੇ ਸਵਰ ਅਤੇ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣਾਂ ਨੂੰ ਬੋਲਕੇ ਲਿਖਣ ਦਾ ਅਭਿਆਸ ਕਰੋ।

नागरी लिपि के स्वर तथा व्यञ्जन वर्णों को बोलते हुए लिखने का अभ्यास करें।

2. ਹੇਠਾਂ ਲਿਖੇ ਸਵਰ ਵਰਣਾਂ ਨੂੰ ਸਹੀ ਕ੍ਰਮ ਨਾਲ ਲਿਖੋ—

नीचे लिखे स्वर वर्णों को सही क्रम से लिखिए।

अ ई उ ओ ए औ ऐ ऋ अः आ।

3. ਥੱਲੇ ਲਿਖੇ ਸਵਰਾਂ ਨੂੰ ਨਾਗਰੀ ਲਿਪਿ ਵਿਚ ਲਿਖੋ ।

निम्नलिखित स्वरों को नागरी लिपि में लिखिए ।

ਉ ਓ ਊ ਅ ਏ ਅੰ ਅੰ ਅੰ

4. ਹ੍ਰਸਵ ਅਤੇ ਦੀਰਘ ਸਵਰਾਂ ਦਾ ਠੀਕ ਤਰਹਾਂ ਨਾਲ ਉਚਾਰਣ ਕਰਨਾ ਸਿਖੋਂ।

ह्रस्व एवं दीर्घ स्वरों का ठीक प्रकार से उच्चारण करना सीखिए ।

5. ਥੱਲੇ ਲਿਖੇ ਵਿਅੰਜਨਾਂ ਨੂੰ ਨਾਗਰੀ ਲਿਪਿ ਵਿਚ ਲਿਖੋ ।

निम्नलिखित व्यञ्जनों को नागरी लिपि में लिखिए ।

ਕ	ਖ	ਘ	ਚ	ਝ	ਥ	ਢ
ਤ	ਪ	ਧ	ਨ	ਫ	ਟ	ਭ
ਗ	ਰ	ਸ	ਹ	ਯ	ਲ	ਵ

6. ਇਨ੍ਹਾਂ ਮਿਲਦੇ ਜੁਲਦੇ ਅਖਰਾਂ ਦਾ ਫਰਕ ਪਛਾਣੋਂ ।

इन मिलते-जुलते अक्षरों का अन्तर पहचानिए ।

घ	ध	क	फ
ठ	ढ	प	य
व	व	स	ख
भ	म	ण	ग
प	ष	स	झ

7. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਿਅੰਜਨਾਂ ਨੂੰ ਕ੍ਰਮ ਨਾਲ ਲਿਖੋ ।

निम्नलिखित व्यञ्जनों को क्रम से लिखिए ।

घ	ग	झ	च	छ	ध	ङ	द	ड	ट		
ठ	ण	क	ख	ज	थ	त	ढ	न	ब		
भ	फ	प	म	य	ल	व	र	स	श	ष	ह

8. ਨਾਗਰੀ ਲਿਪਿ ਵਿਚ ਤਿੱਨ 'श ष स' ਲਿਖੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸਹੀ ਉਚਾਰਣ ਸਿੱਖੋ ।

नागरी लिपि में तीन 'श ष स' लिखे जाते हैं, उनका सही उच्चारण सीखिए ।

9. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਿਅੰਜਨਾਂ ਨੂੰ ਨਾਗਰੀ ਲਿਪਿ ਵਿਚ ਲਿਖੋ ।

नीचे लिखे व्यञ्जनों को नागरी लिपि में लिखिए ।

ਢ ਮ ਯ ਧ ਸ ਰ ਥ ਖ

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव - देव ! ॥

द्वितीयः पाठः

ਅਸੰਯੁਕਤ ਵਰਣ

असंयुक्त वर्ण

ਸਵਰਾਂ ਦਾ ਉਚਾਰਣ ਦੂਜੇ ਵਰਣਾ ਦੀ ਸਹਾਇਤਾ ਦੇ ਬਿਨਾ ਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਕਿੰਤੂ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣਾਂ ਦਾ ਉਚਾਰਣ ਸਵਰ ਵਰਣਾਂ ਦੀ ਸਹਾਇਤਾ ਨਾਲ ਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

स्वरों का उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता से होता है, किन्तु व्यञ्जन वर्णों का उच्चारण स्वर वर्णों की सहायता से होता है।

जैसे—

क्	+	अ	=	क
ख्	+	अ	=	ख
च्	+	अ	=	च
ट्	+	अ	=	ट
प्	+	अ	=	प
य्	+	अ	=	य

ਸਵਰ ਜਦੋਂ ਵਿਅੰਜਨਾਂ ਨਾਲ ਮਿਲਦੇ ਹਨ ਤਦੋਂ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਅਪਣੇ ਮੂਲ ਰੂਪ ਬਦਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—

स्वर जब व्यञ्जन में मिलते हैं, तब इनके अपने मूल रूप बदल जाते हैं।

जैसे—

स्वर (मूलरूप)		चिह्न (मात्रा)	
अ	—		क् + अ = क
आ	—	ा	क् + आ = का
इ	—	ि	क् + इ = कि
ई	—	ी	क् + ई = की
उ	—	ु	क् + उ = कु
ऊ	—	ू	क् + ऊ = कू
ऋ	—	ृ	क् + ऋ = कृ
ए	—	े	क् + ए = के
ऐ	—	ै	क् + ऐ = कै
ओ	—	ो	क् + ओ = को
औ	—	ौ	क् + औ = कौ
अं	—	ं	क् + अं = कं
अः	—	ः	क् + अः = कः

ਗੁਰਮੁਖੀ ਦੀਆਂ ਚਾਰ ਮਾਤ੍ਰਾਵਾਂ ਨਾਗਰੀ ਲਿਪਿ ਦੀਆਂ ਮਾਤ੍ਰਾਵਾਂ ਨਾਲੋਂ ਅਲਹਿਦਾ ਹੁੰਦਿਆਂ ਹਨ ।

गुरुमुखी की चार मात्राएँ नागरी लिपि की मात्राओं से भिन्न होती हैं ।

उ	—		(ु)
ऊ	—	ੂ	(ू)
ओ	—	ੋ	(ो)
औ	—	ੌ	(ौ)

—2—

ਵਰਣਾਂ ਦੇ ਮੇਲ ਨਾਲ ਸ਼ਬਦ ਰਚਨਾ ।

वर्णों के मेल से शब्द-रचना ।

क्	अ	म्	अ	ल्	अ	=	कमल
र्	आ	म्	अ			=	राम
ह्	अ	र्	इ			=	हरि
क्	अ	व्	इ			=	कवि
न्	अ	द्	ई			=	नदी
स्	आ	ध्	उ			=	साधु
व्	अ	ध्	ऊ			=	वधू
क्	ओ	म्	अ	ल्	अ	=	कोमल
क्	औ	र्	अ	व्	अ	=	कौरव
श्	ऋ	ग्	आ	ल्	अ	=	शृगाल
क्	ए	श्	अ	व्	अ	=	केशव
स्	ऐ	न्	इ	क्	अ	=	सैनिक
ग्	अं	ग्	आ			=	गंगा
र्	आ	म्	अः			=	रामः

ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਵਰਣਾਂ ਵਿਚ ਵਿਭਾਜਨ ।

शब्दों का वर्णों में विभाजन ।

नग	—	न्	अ	ग्	अ		
गरल	—	ग्	अ	र्	अ	ल्	अ
पाद	—	प्	आ	द्	अ		
सखि	—	स्	अ	ख्	इ		

काशी — क् आ श् ई

पितृ — प् इ त् ऋ

कपोत — क् अ प् ओ त् अ

पाठशाला— प् आ ठ् अ श् आ ल् आ

ਯਦਿ 'ਰ' ਦੇ ਨਾਲ 'ਉ ਊ' ਨੂੰ ਜੋੜਿਆਂ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਥੱਲੇ ਲਿਖਿਆ ਰੂਪ ਬਣਦਾ ਹੈ।

'र' के साथ उ ऊ जोड़ने पर निम्नलिखित रूप बनते हैं।

र् + उ = रु

र् + ऊ = रू

ਨਿਰਦੇਸ (निर्देशः)—

1. ਇਸ ਪਾਠ ਵਿਚ ਸਵਰ ਅਤੇ ਵਿਅੰਜਨ ਦੇ ਮੇਲ ਨਾਲ ਸ਼ਬਦ ਰਚਨਾ ਦਿਖਾਈ ਗਈ ਹੈ। ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਸ਼ਬਦ ਕਿਤੇ ਸ਼ਵਰਾਂਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਕਿਤੇ ਵਿਅੰਜਨਾਂਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਵਿਅੰਜਨ ਕੇ ਅੰਤ ਵਿਚ ਸਵਰ ਹੋਵੇ ਉਹ ਸਵਰਾਂਤ ਕਹਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—"राम = र्+आ+म्+अ" ਇਥੇ 'ਰਾਮ' ਸ਼ਬਦ ਕੇ ਅੰਤਿਮ ਅਖਰ 'ਮ' ਵਿਚ ਮਿਲਿਆ ਹੋਇਆ 'ਅ' ਸਵਰ ਹੈ। ਅਤੇ 'ਰਾਮ' ਸ਼ਬਦ ਸਵਰਾਂਤ ਹੈ। ਇਸ ਤਰਹਾਂ ਜ਼ਿਸ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਅਖੀਰ ਵਿਚ ਸਵਰ ਰਹਿਤ ਵਿਅੰਜਨ ਹੋਵੇ ਉਸ ਨੂੰ ਵਿਅੰਜਨਾਂਤ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—सरित्—"स् + अ+र् + इ+त्" "वाक् = व् + आ + क्" 'ਸਰਿਤ' ਅਤੇ 'ਵਾਕ' ਦੇ ਅੰਤਿਮ ਵਿਅੰਜਨ 'त्' 'क्' ਵਿਚ ਕੋਈ ਵੀ ਸਵਰ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਅਤੇ ਇਥੇ ਸਵਰ ਰਹਿਤ ਵਿਅੰਜਨ ਹੋਣ ਨਾਲ 'सरित्' ਅਤੇ 'वाक्' ਸ਼ਬਦ ਨੂੰ ਵਿਅੰਜਨਾਂਤ ਕਿਹਾ ਜਾਵੇਗਾ।

इस पाठ में स्वर और व्यञ्जन के मेल से शब्द-रचना दिखलाई गई है। संस्कृत-भाषा में शब्द कहीं स्वरान्त होता है और कहीं व्यञ्जनान्त होता है। जिस व्यञ्जन के अन्त में स्वर हो, उसे स्वरान्त कहते हैं। जैसे— "राम=र्+आ+म्+अ" यहाँ 'राम' शब्द के अंतिम अक्षर 'म' मेंमिला

'अ' स्वर है। अतएव 'राम' शब्द स्वरान्त है। इसी प्रकार जिस शब्द के अन्त में स्वर-रहित व्यञ्जन हो, उसको व्यञ्जनान्त कहते हैं। जैसे—सरित् स् + अ + र् + इ + त्; वाक्—व् + आ + क्। सरित् और वाक् के अंतिम अक्षर 'त्' एवं 'क्' में कोई स्वर नहीं है। अतः यहाँ स्वर-रहित व्यञ्जन होने से 'सरित्' एवं 'वाक्' शब्दों को व्यञ्जनान्त कहा जाएगा।

2. ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣ ਨੂੰ ਸਵਰ ਰਹਿਤ ਦਿਖਾਵਣ ਲਈ ਉਸ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣ ਦੇ ਥੱਲੇ ਤਿਰਛੀ (﹨) ਲਕੀਰ ਲਗਾਈ ਜਾਂਵਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਲਕੀਰ ਜਿਸ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣ ਦੇ ਥੱਲੇ ਲਗਾਈ ਜਾਵੇਗੀ ਉਸ ਵਰਣ ਨੂੰ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਹਲੰਤ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

स्वर-रहित व्यञ्जन वर्ण दिखाने के लिए उस व्यञ्जन वर्ण के नीचे एक तिरछी (﹨) रेखा लगाई जाती है। यह रेखा, जिस व्यञ्जन वर्ण के नीचे लगाई जाती है, उस व्यञ्जन वर्ण को संस्कृत में हलन्त कहा जाता है।

ਨੋਟ :—ਸਵਰ ਰਹਿਤ ਅਰਥਾਤ ਜਿਸਕੇ ਨਾਲ ਸਵਰ ਨਾਂ ਹੋਵੇ। ਸਵਰ ਸਹਿਤ ਅਰਥਾਤ ਜਿਸਕੇ ਨਾਲ ਸਵਰ ਹੋਵੇ।

नोट :—स्वर-रहित का अर्थ होता है—जिस वर्ण में स्वर न हो और स्वर-सहित का अर्थ होता है—जो स्वर के साथ हो।

ਅਭਿਜਾਸ (अभ्यासः)—

1. ਵਿਅੰਜਨ ਅਤੇ ਸਵਰਾਂ ਨੂੰ ਅੱਡ-ਅੱਡ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित में से व्यञ्जन और स्वर अलग-अलग कीजिए।

जैसे— ता — त् + आ =

दे —

सु —

पू —
वं —
नी —
रि —
हृ —
यो —
लौ —
रै —
शं —

2. ਵਿਅੰਜਨ ਦੇ ਨਾਲ ਸਵਰ (ਮਾਤ੍ਰਾ) ਜੋੜ ਕੇ ਲਿਖੋ । ਜਿਵੇਂ—
व्यञ्जन के साथ स्वर (मात्रा) मिला कर लिखें ।

जसे—	प्	+	आ	= पा
	श्	+	आ	=
	ध्	+	इ	
	न्	+	ई	
	क्	+	उ	
	त्	+	ऊ	
	ज	+	ऋ	
	द्	+	ए	
	ग	+	ऐ	
	स	+	ओ	
	ष	+	औ	
	त्	+	ॠ	

3. ਥੱਲੇ ਦਿਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਵਰਣਾਂ ਵਿਚ ਵੰਡ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
निम्नलिखित शब्दों को वर्णों में विभाजित कीजिए ।

जंसे : —लिपि = ल् + इ + प् + इ ।

पुरुष =
आकाश =
कपाल =
दिवस =
सेवक =
कपोत =
वानर =
गुरु =
रूप =

4. ਵਰਣਾਂ ਨਾਲ ਸ਼ਬਦ ਰਚਨਾ ਕਰੋ । ਜ਼ਿਵੇਂ :—
वर्णों से शब्द-रचना कीजिए ।

जैसे :— प् + आ + न् + अ = पान
द + आ + न् + अ =
अ + म् + ऋ + त् + अ =
ज् + ई + व् + अ + न् + अ =
स् + अ + ल् + इ + ल् + अ =
भ् + अ + ग् + अ + व् + आ + न् =
स् + अं + त् + आ + प् + अ =

5. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਰਣਾਂ ਦੀ ਮਾਤ੍ਰਾ ਸਹੀ ਕਰੋ । ਜ਼ਿਵੇਂ :—
निम्नलिखित शब्दों की मात्रा सही कीजिए ।

जैसे :—गौ = ग् + ओ ग् + औ
नागरी = न् आ ग् अ र इ
घर = घ् आ र अ

शुक	=	श् अ क् अ
भोजन	=	भ औ ज् अ न् अ
वधू	=	व् आ ध् उ

6. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾ ਦੇ ਸਵਰਾਂਤ ਅਤੇ ਵਿਅੰਜਨਾਂਤ ਅੱਡ-ਅੱਡ ਕਰੋ।

नीचे लिखे शब्दों से स्वरान्त और व्यञ्जनान्त शब्दों को अलग कीजिए।

कवि, नदी, सरित्, मोहन, विद्युत्, नारी, भगवान्, भिक्षुक।

7. ਕੁਝ ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਸ਼ਬਦ ਲਿਖੋ ਜਿੰਨਰਾਂ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿਚ ਸਵਰ ਨਾਂ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਜਿਹੜੇ ਇਸ ਪਾਠ ਵਿਚ ਨਾਂ ਆਏ ਹੋਵਣ।

कुछ ऐसे स्वर-रहित शब्द लिखिए जो इस पाठ में नहीं आये हों।

8. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਨਾਗਰੀ ਲਿਪਿ ਵਿਚ ਲਿਖੋ।

निम्नलिखित शब्दों को नागरी लिपि में लिखिए।

ਬਲ, ਖਲ, ਪੁਤੀ, ਧਤੂਰਾ, ਕੇਲਾ, ਰੋਟੀ, ਦੌੜੋ, ਮੇਲਾ।

अनाहूतः प्रविशति अपृष्टो बहु भाषते।
अविश्वस्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः॥

ਤ੍ਰਿਤੀਯਃ ਪਾਠਃ

ਸੰਜੁਕਤ ਵਰਣ

संयुक्त वर्ण

ਜਦੋਂ ਦੋ ਜਾਂ ਦੋ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਵਿਅੰਜਨਾਂ ਵਿਚਕਾਰ ਸਵਰ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਤਦੋਂ ਸੰਜੁਕਤ ਵਿਅੰਜਨ ਬਣਤਾ ਹੈ । ਜਿਵੇਂ—

जव दो या दो से अधिक व्यञ्जनों के बीच में स्वर नहीं होता तब संयुक्त व्यञ्जन बनता है ।

जैसे :—

क्	+	त	=	क्त	रक्त
घ्	+	न	=	घ्न	विघ्न
न्	+	न	=	न्न	अन्न
त	+	न	=	त्न	रत्न
स्	+	न	=	स्न	स्नान
श्	+	व	=	श्व	अश्व
ब्	+	द	=	ब्द	शब्द

ਨਾਗਰੀ ਵਿਚ ਕੁਝ ਵਿਅੰਜਨ ਖੜੀ ਪਾਈ ਵਾਲੇ ਹਨ । ਜਿਵੇਂ—

नागरी लिपि में कुछ व्यञ्जन खड़ी पाई वाले हैं ।

जैसे :—

ख	ग	घ	च	ज	झ	ञ
ण	त	थ	ध	न	प	
ब	भ	म	य	ल	व	श
		ष	स			

ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਿਅੰਜ਼ਨ ਘੁੰਡੀ ਵਾਲੇ ਹਨ।

निम्नलिखित व्यञ्जन घुण्डी वाले हैं।

क फ

ਨਾਗਰੀ ਵਰਣਮਾਲਾ ਵਿਚ ਖੜੀ ਪਾਈ ਵਾਲੇ ਅਤੇ ਘੁੰਡੀ ਵਾਲੇ ਵਰਣਾਂ ਤੋਂ ਅਲਾਵਾ ਵੀ ਕੁਝ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—

नागरी वर्णमाला में खड़ी पाई वाले तथा घुण्डी वाले वर्णों से अलग भी कुछ व्यञ्जन वर्ण होते हैं।

जैसे—

ङ छ ट ठ ड

ढ द र ह।

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਖੜੀ ਪਾਈ ਵਾਲੇ ਵਿਅੰਜਨਾਂ ਨੂੰ ਸਵਰ ਰਹਿਤ ਕਰਣ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪਾਈ ਹਟਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

   खड़ी पाई वाले व्यञ्जनों को स्वर-रहित करने के लिए उनकी पाई हटा दी जाती है।

   जैसे—

   ख — ख् — ख्या ख्याति

   ग — ग् — ग्ध दुग्ध

   घ — घ् — घ्न विघ्न

   च — च् — च्च उच्च

—3—

ज	—	ज्	—	ज्य	राज्य
ञ	—	ञ्	—	ञ्च	पञ्चम
ण	—	ण्	—	ण्ड	पण्डित
त	—	त्	—	त्न	रत्न
थ	—	थ्	—	थ्य	पथ्य
ध	—	ध्	—	ध्या	ध्यान
न	—	न्	—	न्म	जन्म
प	—	प्	—	प्त	समाप्त
ब	—	ब्	—	ब्द	शब्द
भ	—	भ्	—	भ्य	सभ्य
म	—	म्	—	म्भू	शम्भू
य	—	य्	—	य्या	शय्या
व	—	व्	—	व्य	काव्य
श	—	श्	—	श्वा	श्वास
ष	—	ष्	—	ष्प	पुष्प
स	—	स्	—	स्त्र	शास्त्र
ल	—	ल्	—	ल्ल	मल्ल

2. ਘੁੰਡੀ ਵਾਲੇ ਵਿਅੰਜਨਾਂ ਨੂੰ ਸਵਰ ਰਹਿਤ ਕਰਣ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਰਣਾਂ ਦੀ ਘੁੰਡੀ ਹਟਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

घुण्डी वाले व्यञ्जनों को स्वर-रहित करने के लिए उन वर्णों की घुण्डी हटा दी जाती है।

जैसे—

क	—	क्	—	क्य	शक्य
फ	—	फ्	—	फ्ल	फ्लावर

3. ਕੁਝ ਵਿਅੰਜਨ ਨਾਂ ਤੇ ਪਾਈ ਵਾਲੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਨਾਂ ਹੀ ਘੁੰਡੀ ਵਾਲੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣਾਂ ਨੂੰ ਸਵਰ ਰਹਿਤ ਕਰਣ ਲਈ ਅੱਗੇ ਵਾਲੇ ਵਿਅੰਜਨਾਂ ਨਾਲ ਜੋੜ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

कुछ व्यञ्जन न तो पाई वाले होते हैं और न ही घुण्डी वाले। इस प्रकार के व्यञ्जन-वर्णों को स्वर-रहित करने के लिए इनके आगे वाले व्यञ्जन को इन व्यञ्जन वर्णों के साथ जोड़ दिया जाता है।

जैसे—

ङ	—	ङ्	—	ङ्ग	गङ्गा
छ	—	छ्	—	छ्वा	उछ्वास
ट	—	ट्	—	ट्वा	खट्वा
ठ	—	ठ्	—	ठ्य	पाठ्य
ड	—	ड्	—	ड्य	जाड्य
ढ	—	ढ्	—	ढ्य	धनाढ्य
द	—	द्	—	द्म	पद्म
ह	—	ह्	—	ह्व	आह्वान

4. 'ਰ' ਵਰਣ ਦਾ ਸੰਯੋਗ

I. 'ਰ' ਵਰਣ ਨੂੰ ਨਾਗਰੀ ਵਿਚ ਰੇਫ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਸੰਯੋਗ ਸਾਰੇ ਵਿਅੰਜਨਾ ਤੋਂ ਵਖਰਾ ਹੂੰਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਸਵਰ ਟਹਿਤ 'ਰ੍' ਦੇ ਅੱਗੇ ਕੋਈ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣ ਔਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ 'ਰ੍' ਅੱਗੇ ਵਾਲੇ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣ ਦੇ ਉਪਰ ਲਿਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

'र्' वर्ण का संयोग

'र' वर्ण को नागरी में रेफ कहा जाता है। इस वर्ण का संयोग सभी व्यञ्जनों से भिन्न होता है। जव स्वर-रहित 'र्' के आगे कोई व्यञ्जन वर्ण आता है, तब 'र्' आगे वाले व्यञ्जन वर्ण के ऊपर लिखा जाता है।

जैसे—

र्	—	म	—	र्म	मर्म
र्	—	क	—	र्क	कर्क
र्	—	य	—	र्य	आर्य
र्	—	ग	—	र्ग	गर्ग
र्	—	प	—	र्प	सर्प

II. ਸਵਰ ਰਹਿਤ ਵਿਅੰਜ਼ਨ ਵਰਣ ਦੇ ਬਾਦ ਜਦੋਂ ਸਵਰ ਸਹਿਤ 'ਰ' ਔਂਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਉਸ 'ਰ' ਨੂੰ ਸਵਰ ਰਹਿਤ ਵਿਅੰਜਨ ਦੇ ਥੱਲੇ "/ " ਇਸ ਤਰਹਾਂ ਰੇਖਾ ਲਗਾ ਕੇ ਦਿਖਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜ਼ਿਵੇਂ—

स्वर-रहित व्यञ्जन के वाद जव स्वर-सहित 'र' आता है, तव उस 'र' को स्वर-रहित व्यञ्जन-वर्ण के नीचे इस प्रकार का चिह्न (/) लगा कर दिखाया जाता है।

जैसे—

क्	—	र	—	क्र	चक्र
ग्	—	र	—	ग्र	अग्र
ज्	—	र	—	ज्र	वज्र
द्	—	र	—	द्र	द्रव
ह्	—	र	—	ह्र	ह्रास

III. ਸਵਰ ਰਹਿਤ 'ਟ ਠ ਡ ਢ' ਦੇ ਬਾਦ ਜਦੋਂ ਸਵਰ ਸਹਿਤ 'ਰ' ਔਂਦਾ ਹੈ, ਤਦੋਂ 'ਰ' ਦੇ ਸੰਯੋਗ ਨੂੰ "^" ਇਸ ਤਰਹਾਂ ਲਿਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

स्वर-रहित 'ट् ठ् ड् ढ्' के वाद जव स्वर-सहित 'र' आता है, तव 'र' के संयोग को इस प्रकार का चिह्न (^) लगाकर दिखाया जाता है।

जंसे—

ट्	—	र	—	ट्र	राष्ट्र
ठ्	—	र	—	ठ्र	ठ्र
ड्	—	र	—	ड्र	ड्रामा
ढ्	—	र	—	ढ्र	सोढ्री (सहिष्णु)

5. ਨਾਗਰੀ ਵਰਣਮਾਲਾ ਵਿਚ ਤਿੱਨ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣ ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਹਨ, ਜੋੜੇ ਦੋ ਵਰਣਾ ਦੇ ਮੇਲ ਨਾਲ ਵਣੇ ਹਨ।

नागरी वर्णमाला में तीन व्यञ्जन वर्ण ऐसे हैं, जो दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से बने हैं।

क्ष त्र ज्ञ

क्	ष्	अ	क्ष
त्	र्	अ	त्र
ज्	ञ्	अ	ज्ञ

6. ਗੁਰਮੁਖੀ ਲਿਪਿ ਵਿਚ ਕੁਲ ਤਿੱਨ ਵਿਅੰਜਨ ਨਾਲ ਸੰਜੁਕਤ ਅਖਰ ਹਨ 'ਰ ਹ ਵ'। ਇਹ ਪਹਿਲੇ ਵਿਅੰਜਨ ਦੇ ਥੱਲੇ ਜੁੜਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ— ਕ੍ਰਮ, ਮਿਨ੍ਹਾਸ, ਤਤ੍ਵ। ਬਾਕੀ ਵਿਅੰਜਨ ਸੰਜੁਕਤ ਰੂਪ ਵਿਚ ਠਰੀਂ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਦੇ ਵਿਅੰਜਨ ਵਰਣਾ ਦੇ ਉਚਾਰਣ ਅਤੇ ਲਿਖਣ ਦਾ ਅਭਿਯਾਸ ਬਹੁਤ ਜਰੂਰੀ ਹੈ।

गुरुमुखी लिपि में केवल तीन व्यञ्जनों से संयुक्ताक्षर बनते हैं— "ਰ, ਹ, ਵ" (र, ह, व)। ये अपने से पहले व्यञ्जन के नीचे जुड़ते हैं, जंसे—ਕ੍ਰਮ (क्रम) ਮਿਨ੍ਹਾਸ (मिन्हास) ਤਤ੍ਵ (तत्व)। शेष व्यञ्जन

संयुक्त रूप में नहीं मिलते। इसलिए संस्कृत के संयुक्त व्यञ्जनों के उच्चारण और लेखन का अभ्यास बहुत आवश्यक है।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਵਰਣਾ ਵਿਚ ਵਿਭਾਜਨ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—
निम्नलिखित शब्दों का वर्णों में विभाजन कीजिए।
जैसे—

भिन्न = भ् इ न् न् अ

लग्न, अन्न, विश्व, पुण्य, पम्पा, स्वर्ण,
चन्द्र, पत्र, वस्त्र, मार्ग, क्रम, राष्ट्र।

2. ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਰਣਾ ਨੂੰ ਮਿਲਾ ਕੇ ਲਿਖੋ। ਜਿਵੇਂ—
इन वर्णों को मिलाकर लिखिए।
जैसे—

च् इ त् र् अ = चित्र।

च्	इ	त्	र्	अ	=	
छ्	अ	न्	द्	अ	=	
प्	अ	न्	थ्	अ	=	
र्	आ	ष्	ट्	र	अ	=
ज्	ञ्	आ	न्	अ	=	
क्	अ	र्	म्	अ	=	
श्	अ	र्	म्	आ	=	

3. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਰਣਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਸਾਰਥਕ ਸ਼ਬਦ ਬਣਾਓ। ਜਿਵੇਂ—
निम्नलिखित वर्णों के साथ सार्थक शब्द बनाइए।
जैसे—

म्र = आम्र

म्र, क्त, श्व, ष्ठा, न्द्र, र्प, भ्र, ग्रा।

4. ਸੰਜੁਕਤ ਵਿਅੰਜਨ ਦੇ ਕੁਝ ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਉਦਾਹਰਣ ਲਿਖੋ ਜੇੜ੍ਹੇ ਇਸ ਪਾਠ ਵਿਚ ਨਾਂ ਆਏ ਹੋਣ।

संयुक्त व्यञ्जन के कुछ ऐसे उदाहरण लिखिए, जो इस पाठ में नहीं आए हों।

5. ਥੱਲੇ ਕੁਝ ਵਿਅੰਜਨ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਹਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸੰਜੁਕਤ ਕਰ ਸਾਰਥਕ ਸ਼ਬਦ ਬਣਾਓ। ਜਿਵੇਂ—

नीचे कुछ व्यञ्जन लिखे गए हैं, उनको संयुक्त कर सार्थक शब्द बनाइए।

जैसे—

क = शक्ति, भक्ति आदि।

क, ग, घ, च, ज, ण, त, ध, म, न,
य, र, ल, स, ह।

6. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਘੁੰਡੀ ਵਾਲੇ ਸੰਜੁਕਤ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਅੱਡ-ਅੱਡ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित शब्दों में से घुण्डी वाले संयुक्त शब्दों को अलग कीजिए।

भक्त, शक्य, नम्र, शुभ्र, रुक्मिणी, उछ्वास, निर्मल।

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता॥

चतुर्थः पाठः

ਸੰਗਿਆ ਅਕਾਰਾਂਤ ਪੁੰ॰ ਅਸ ਧਾਤੂ ਲਙ ਲਕਾਰ (ਭੂਤਕਾਲ)

संज्ञा अकारान्त पुं0 अस् धातु लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	**बहुवचन**
काकः आसीत् ।	काकाः आसन् ।
सिंहः आसीत् ।	सिंहाः आसन् ।
हंसः आसीत् ।	हंसाः आसन् ।
गजः आसीत् ।	गजाः आसन् ।
शुकः आसीत् ।	शुकाः आसन् ।
पथिकः आसीत् ।	पथिकाः आसन् ।
सैनिकः आसीत् ।	सैनिकाः आसन् ।
कपोतः आसीत् ।	कपोताः आसन् ।
अध्यापकः आसीत् ।	अध्यापकाः आसन् ।
द्वारपालः आसीत् ।	द्वारपालाः आसन् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

अस् = था	(ਸੀ)	शुक = तोता	(ਤੋਤਾ)
काक = कौवा	(ਕਾਂ)	कपोत = कबूतर	(ਕਬੂਤਰ)
पथिक = राही	(ਰਾਹੀ)	द्वारपाल = दरवान	(ਦਰਵਾਨ)
गज = हाथी	(ਹਾਥੀ)	सिंह = शेर	(ਸ਼ੇਰ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਇਸ ਪਾਠ ਵਿਚ ਪ੍ਰਥਮ ਪੁਰੁਸ਼ ਵਿਚ ਅਕਾਰਾਂਤ ਪੁੰਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਇਕਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਸਿਖਲਾਯਾ ਗਿਆ ਹੈ।

   इस पाठ में प्रथमपुरुष अकारान्त पुंल्लिङ्ग के एकवचन और वहुवचन का प्रयोग सिखलाया गया है।

2. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਤਿੱਨ ਪੁਰੁਸ਼ ਹੁੰਦੇ ਹਨ—

   संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं—

   ਪ੍ਰਥਮ ਪੁਰੁਸ਼ — ਕੋਈ ਸੰਗਿਆ (ਰਾਮ, ਨਦੀ ਆਦਿ) ਅਤੇ ਉਹ।
   ਮੱਧਮ ਪੁਰੁਸ਼ — ਤੂੰ, ਤੁਸੀ।
   ਉੱਤਮ ਪੁਰੁਸ਼ — ਮੈਂ, ਅਸੀ।

   प्रथम पुरुष — कोई संज्ञा (राम, नदी आदि) तथा वह, वे।
   मध्यम पुरुष — तू, तुम।
   उत्तम पुरुष — मैं, हम।

3. ਵਾਕ ਵਿਚ ਕ੍ਰਿਯਾ ਪੁਰੁਸ਼ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

   वाक्य में क्रिया पुरुष के अनुसार होती है।

   सः आसीत् = वह था (ਉਹ ਸੀ)।
   त्वम् आसीः = तू था (ਤੂੰ ਸੀ)।
   अहं आसम् = मैं था (ਮੈਂ ਸੀ)।

4. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਤਿੱਨ ਵਚਨ ਹੁੰਦੇ ਹਨ—ਇਕਵਚਨ, ਦਵੀਵਚਨ (ਦੋ ਵਚਨ) ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ। ਇਕਵਚਨ ਤੋਂ ਇਕ ਵਸਤੁ ਦਾ ਗਿਆਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—"बालकः" = ਇਕ ਬਾਲਕ। ਦਵੀਵਚਨ ਤੋਂ ਦੋ ਚੀਜਾਂ ਦਾ ਗਿਆਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—"बालकौ" = ਦੋ ਬਾਲਕ। ਬਹੁਵਚਨ ਤੋਂ ਦੋ ਤੋਂ ਜ਼ਿਯਾਦਾ ਚੀਜਾਂ ਦਾ ਗਿਆਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—"बालकाः" = ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਬਾਲਕ। ਦੂਜਿਆਂ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਵਿਚ ਦਵੀਵਚਨ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ

ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਹੀ ਦਵੀਵਚਨ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸਲਈ ਪ੍ਰਾਥਮਿਕ ਸਤਰ ਦੀ ਇਸ ਪਾਠਪੁਸਤਕ ਵਿਚ ਦਵੀਵਚਨ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਨਹੀਂ ਸਿਖਲਾਯਾ ਗਿਆ ਹੈ।

संस्कृत में तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन। एक वचन से किसी एक वस्तु का ज्ञान होता है। जैसे—बालकः = एक बालक। द्विवचन से दो वस्तुओं का ज्ञान होता है। जैसे—बालकौ = दो बालक। बहुवचन से दो से अधिक वस्तुओं का बोध होता है। जैसे—बालकाः = बहुत बालक। अन्य भाषाओं में 'द्विवचन' का प्रयोग नहीं होता है। केवल संस्कृत भाषा में ही द्विवचन का प्रयोग होता है। इसलिए प्राथमिक स्तर की इस पाठ्यपुस्तक में द्विवचन का प्रयोग नहीं सिखलाया गया है।

5. ਇਕਵਚਨ ਸੰਗਿਆ ਦੇ ਨਾਲ ਇਕ ਵਚਨ ਕ੍ਰਿਆ ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—"सिंहः आसीत्" (ਇਕ) ਸ਼ੇਰ ਸੀ। ਬਹੁਵਚਨ ਦੀ ਸੰਗਿਆ ਦੇ ਨਾਲ ਬਹੁਵਚਨ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—"सिंहाः आसन्"—ਸ਼ੇਰ ਸਨ।

   एक वचन संज्ञा के साथ क्रिया भी एक वचन की होती है। जैसे—सिंहः आसीत् = (एक) सिंह था। बहुवचन संज्ञा के साथ बहुवचन क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे—सिंहाः आसन् = (बहुत) सिंह थे।

6. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਸ਼ਬਦ "ਪਦ" ਕਹਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'राम' ਸ਼ਬਦ ਹੈ ਅਤੇ 'रामः' ਪਦ ਹੈ।

   संस्कृत वाक्यों में प्रयुक्त शब्द को 'पद' कहते हैं। जैसे—'राम' शब्द है और 'रामः' पद है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

I. अस् धातु लङ्लकार प्रथम पुरुष।

ए० व०	ब० व०
आसीत् (था)	आसन् (थे)

II. वालक शब्द अकारान्त पुं०, प्रथमा विभक्ति

ए० व०	व० व०
वालकः (एक वालक)	वालकाः (वहुत वालक)

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਇਕਵਚਨ ਰੂਪ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ । ਜਿਵੇਂ—

कोष्ठक में दिए गए शब्दों के एक वचन से रिक्त स्थानों को भरिए ।

जैसे—**अश्वः** आसीत् ।

(अश्व) ···· ···· ···· ····आसीत् ।
(सेवक)···· ·· ···· ····आसीत् ।
(वानर)···· ···· ···· ····आसीत् ।
(गायक)···· ···· ···· ····आसीत् ।
(भिक्षुक)···· ···· ········आसीत् ।
(अध्यापक)···· ···· ····आसीत् ।

2. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਬਹੁਵਚਨਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ । ਜ਼ਿਵੇਂ—

कोष्ठक में दिए गए शब्दों के वहुवचन से रिक्तस्थान भरिए।

जैसे—**नराः** आसन्

(नर) ···· ···· ···· ···· आसन् ।
(अश्व)···· ···· ···· ····आसन् ।
(छात्र)···· ···· ···· ····आसन् ।
(सेवक) ···· ···· ···· ····आसन् ।
(द्वारपाल)···· ········ ····आसन् ।

3. ਬਰੇਕਟ ਵਿਚ ਦਿਤਿੱਆਂ ਹੋਇਆਂ ਕ੍ਰਿਆਵਾਂ ਨੂੰ ਸੰਗਿਆ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਲਿਖੋ । ਜਿਵੇਂ—

कोष्ठक में दी गई क्रियाओं को संज्ञा-पद के अनुसार लिखिए।

जैसे—देवाः **आसन्** ।

देवाः .... (अस्) ।

वृक्षाः .... (अस्) ।

गजः .... (अस्) ।

पुत्राः .... (अस्) ।

पत्रवाहकः .... (अस्) ।

शुकाः .... (अस्) ।

4. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਠੀਕ ਕ੍ਰਿਆਪਦ ਚੁਣੋ । ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित क्रियापदों में से उचित क्रिया पद दीजिए ।

जैसे—भ्रमराः आसन् ।

भ्रमराः .... आसीत् / आसन् ।

व्याघ्रः .... आसन् / आसीत् ।

पुरुषाः .... आसन् / आसीत् ।

शृगालाः.... .... आसीत् / आसन् ।

सैनिकः .... आसीत् / आसन् ।

5. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਬਹੁਵਚਨ ਸ਼ਬਦ ਚੁਣੋ ।

निम्नलिखित शब्दों में से बहुवचन शब्द चुनिए ।

दिवसः, अवकाशः, सेवकाः, वृक्षाः, देवाः,
द्वारपालाः, काकाः, शुकः, भिक्षुकः, कपोताः ।

6. ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
वाक्य शुद्ध कीजिए ।

जैसे—सैनिकः आसीत् ।

सैनिकः आसन्.... .... ।
शृगालाः आसीत्.... .... ।
इन्द्रः आसन्.... .... ।
यवनाः आसीत्.... .... ।
छात्राः आसीत्.... .... ।
विद्यालयः आसन्.... .... ।

7. ਦਸ ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਅਕਾਰਾਂਤ ਪੁੰਲਿੰਗ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਲਿਖੋ ਜੋੜੇ ਇਸ ਪਾਠ ਵਿਚ ਨਾਂ ਆਏ ਹੋਣ । ਜਿਵੇਂ—
दस ऐसे अकारान्त पुंलिङ्ग पदों को लिखिए, जो इस पाठ में नहीं आये हों ।

जैसे—पुरुषः, सेवकः आदि ।

8. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਕ੍ਰਿਆਪਦ ਛੱਡ ਦੇ ਲਿਖੋ ।
नीचे लिखे पदों में से क्रियापद छाँट कर लिखिए ।

पवनः, कुबेरः, आसीत्, सूर्यः, दिवसः, आसन्, अवकाशाः ।

9. ਅਪਣੀ ਮਾਤਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
अपनी मातृभाषा में अनुवाद कीजिए ।

वृक्षः आसीत् ।
पुरुषाः आसन् ।
सेवकः आसीत् ।
गायकाः आसन् ।
पुत्राः आसन् ।
काकः आसीत् ।

10. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਬਾਲਕ ਸੀ ।	बालक था ।
ਬਾਂਦਰ ਸਨ ।	बंदर थे ।
ਛੁੱਟੀ ਸੀ ।	अवकाश था ।
ਛਾਤਰ ਸਨ ।	छात्र थे ।
ਪਰਭਾਤ ਸੀ ।	प्रभात था ।
ਮੁੰਡੇ ਸਨ ।	लड़के थे ।
ਪਰਦੀਪ ਸੀ ।	प्रदीप था ।
ਤੋਤੇ ਸਨ ।	तोते थे ।

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः ।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ॥

पञ्चमः पाठः

ਸਰਲ ਅਵਿਅ

सरल अव्यय

(अद्य, किं, ह्यः, कदा, तदा, कुत्र, सर्वत्र इत्यादि)

बालकः कुत्र आसीत् ?	बालकः अत्र आसीत् ।
बालकाः कुत्र आसन् ?	अश्वाः प्रातः तत्र आसन् ।
किं वानराः तदा आसन् ?	वानराः तदा न आसन् ।
काकः कदा उपरि आसीत्?	काकः प्रातः उपरि आसीत् ।
अद्य सर्वत्र मेघाः आसन्	अतः सर्वत्र अन्धकारः आसीत् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

कुत्र	=	कहाँ	(ਕਿੱਥੇ)
कदा	=	कब	(ਕਦ)
ह्यः	=	कल	(ਕੱਲ)
न	=	नहीं	(ਨ)
उपरि	=	ऊपर	(ਉਪਰ)
सर्वत्र	=	सब जगह	(ਸਭਨੀ ਥਾਂਈ)
तत्र	=	वहाँ	(ਉਥੇ)
अद्य	=	आज	(ਅੱਜ)
तदा	=	तब	(ਤਦ)

अत्र	=	यहाँ	(ਇੱਥੇ)
किं	=	क्या	(ਕੀ)
अतः	=	इसलिए	(ਇਸਲਈ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)---

ਜ਼ਿਸਕੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕੋਈ ਬਦਲਾਉ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਉਸ ਨੂੰ ਅਵਿਅ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਅਵਿਆਂ ਦਾ ਰੂਪ ਸਬਨਾਂ ਲਿੰਗਾ ਅਤੇ ਸਬਨਾ ਵਚਨਾਂ ਵਿਚ ਇਕੋ ਜ਼ਿਹਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

जिसके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है, उसको अव्यय कहते हैं। अव्ययों का रूप सभी लिङ्गों तथा वचनों में समान रहता है।

जैसे—

वालकः तत्र आसीत्।

वालकाः तत्र आसन्।

वालिका अत्र आसीत्।

वालिकाः अत्र आसन्।

ਵਿਆਕਰਣ-(व्याकरणम्)—

ਪਾਠ ਤੋਂ ਅਲਾਵਾ ਕੁਝ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਅਵਿਆਂ ਦਾ ਸੰਗ੍ਰਹ।

पाठ के अतिरिक्त कुछ प्रचलित व प्रसिद्ध अव्ययों का संग्रह।

पुनः	=	फिर	(ਫੇਰ)	नूनम्	=	निश्चित	(ਨਿਸ਼ਚਿਤ)
प्रातः	=	सुबह	(ਸਵੇਰਾ)	नक्तम्	=	रात	(ਰਾਤ)
मिथ्या	=	झूठ	(ਝੂਠ)	साम्प्रतम्	=	अभी	(ਹੁਣੇ)
पश्चात्	=	वाद	(ਬਾਦ)	पूर्वम्	=	पहिले	(ਪਹਿਲੇ)
पुरतः	=	आगे	(ਅੱਗੇ)	अग्रे	=	आगे	(ਅੱਗੇ)

सायम् = सायंकाल	(ਸ਼ਾਮ)	तदानीम् = तभी	(ਤਦੋਂ)
कदा = कव	(ਕਦ)	इदानीम् = अभी	(ਇਸ ਵੇਲੇ)
तु = तो	(ਤੋ)	सर्वदा = सदा	(ਸਦਾ)
अन्तर् = अन्दर	(ਅੰਦਰ)	वहिर् = वाहर	(ਬਾਹਰ)

ਅਭਿਆਸ (अभ्यास:)—

1. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚੋਂ ਅਵਿਅ ਪਦ ਛੱਡ ਕੇ ਲਿਖੋ। ਜਿਵੇਂ—
निम्नलिखित वाक्यों में से अव्यय-पद छाँटकर लिखिए ।
जैसे—तत्र, कुत्र आदि ।

सेवकः तत्र आसीत् ।
गजः कुत्र आसीत् ?
कदा अवकाशः आसीत् ?
अत्र अद्य भिक्षुकः आसीत् किम् ?
अश्वाः वहिर् आसन् ।
सर्वत्र प्रकाशः आसीत् ।
गायकः पुरतः आसीत् ।

2. ਉਚਿਤ ਅਵਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ। ਜਿਵੇਂ—
उचित अव्ययों के साथ रिक्त स्थान भरिए ।
जैसे—वालकः कुत्र आसीत् ?

छात्राः .... आसन् ।
अश्वाः .... आसन् ।
वानराः.... .... आसन् ।
काकाः .... आसन् ?
भ्रमराः.... .... आसन् ।
भिक्षुकः.... ....आसीत् ।

—5—

3. ਥੱਲ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਅਵਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਵਾਕ ਬਣਾਓ ।

निम्नलिखित अव्ययों के साथ वाक्य वनाइए ।

अन्तर्, पश्चात्, प्रातः, अद्य, कुत्र,
बहिर्, सर्वत्र, यदा, कदा, तदा ।

4. ਥੱਲੇ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਾਕਾਂ ਦਾ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करें ।

ਕਰੀਮ ਕਿੱਥੇ ਸੀ ?	क़रीम कहाँ था ?
ਕਬੂਤਰ ਉੱਥੇ ਸਨ ।	कबूतर वहाँ थे ।
ਕਾਂ ਇਥੇ ਸੀ ।	कौवा यहाँ था ।
ਤੋਤਾ ਉਤੇ ਸੀ ।	तोता ऊपर था ।

5. ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

अपनी भाषा में अनुवाद करें ।

कपोताः उपरि आसन् ।
अश्वः बहिर् आसीत् ।
बालकाः ह्यः आसन् ।
पुरुषः अधः आसीत् ।
सिंहः कुत्रापि न आसीत् ।

यथा चित्तं तथा वाणी, यथा वाणी तथा क्रिया ।
चित्ते वाचि क्रियायां च, साधूनामेकरूपता ।।

ਸ਼ਸ਼ਠਃ ਪਾਠਃ

ਯੁਸ਼ਮਦ, ਅਸਮਦ, ਕਰਤਾਕਾਰਕ
(ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤਿ)

युष्मद्, अस्मद्, कर्ताकारक
(प्रथमा विभक्ति)

अहं ह्यः अत्र आसम् ।	त्वं ह्यः कुत्र आसीः ?
अहम् अद्य प्रातः तत्र आसम् ।	त्वं तु तत्र न आसीः ।
अहं तत्र तदानीम् आसम् ।	किं त्वं तत्र आसीः ?
वयम् अत्र अधः आस्म ।	यूयं तदानीं तत्र न आस्त ।
यूयं ह्यः सायं कुत्र आस्त ?	वयं सायम् अन्तर् आस्म ।
यूयं कदा बहिर् आस्त ?	वयं दिवा बहिर् आस्म ।
प्रातः सर्वत्र प्रकाशः आसीत् ।	नक्तं सर्वत्र अन्धकारः आसीत् ।
अवकाशः कदा आसीत् ?	अवकाशः ह्यः आसीत् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

युष्मद् — तू (ਤੂੰ)   अस्मद् — मैं (ਮੈਂ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਇਸ ਪਾਠ ਵਿਚ ਯੁਸ਼ਮਦ ਅਤੇ ਅਸਮਦ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ "ਅਸ" ਧਾਤੂ ਲਙ ਲਕਾਰ (ਭੂਤਕਾਲ) ਵਿਚ ਸਰਲ ਅਵਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਸਿਖਲਾਯਾ ਗਿਆ ਹੈ ।

इस पाठ में 'युष्मद्' तथा 'अस्मद्' शब्द की प्रथमा विभक्ति का प्रयोग अस् धातु लङ् लकार (भूतकाल) में सरल अव्ययों के साथ सिखलाया गया है।

2. ਯੁਸ਼ਮਦ ਅਤੇ ਅਸਮਦ ਮੂਲ ਸ਼ਬਦ ਹਨ। ਯੁਸ਼ਮਦ ਦਾ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਵਿਚ 'ਤ੍ਵਮ' (त्वम्) ਅਤੇ 'ਯੂਯਮ' (यूयम्) ਰੂਪ ਬਣਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਤਰਹਾਂ ਹੀ ਅਸਮਦ ਦੇ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਵਿਚ 'ਅਹਮ' (अहम्) ਅਤੇ 'ਵਯਮ' (वयं) ਰੂਪ ਬਣਦੇ ਹਨ।

'युष्मद्' तथा 'अस्मद्' मूल शब्द हैं। 'युष्मद्' की प्रथमा विभक्ति में 'त्वं' और 'यूयं' रूप बनते हैं। इसी प्रकार अस्मद् की प्रथमा विभक्ति में 'अहं' तथा 'वयं' रूप बनते हैं।

3. ਯੁਸ਼ਮਦ ਅਤੇ ਅਸਮਦ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਰੂਪ ਪੁੰਲਿੰਗ ਅਤੇ ਇਸਤ੍ਰੀ ਲਿੰਗ ਵਿਚ ਇਕੋ ਜਿਹਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।

ਜਿਵੇਂ—

त्वं खेलसि।	ਤੂੰ ਖੇਲਦਾ ਹੈ / ਤੂੰ ਖੇਲਦੀ ਹੈ।
अहं पठामि।	ਮੈਂ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹਾਂ / ਮੈਂ ਪੜ੍ਹਦੀ ਹਾਂ।

'युष्मद्' और 'अस्मद्' शब्द के रूप पुंल्लिग और स्त्रीलिंग में एक जैसे ही रहते हैं।

जैसे—

त्वं खेलसि।	तू खेलता है / तू खेलती है।
अहं पठामि।	मैं पढ़ता हूँ / मैं पढ़ती हूँ।

4. (ਕ) ਯੁਸ਼ਮਦ ਸਬਦ ਜਦੋਂ ਕਰਤਾ ਹੋਵੇ, ਤਦੋਂ ਕ੍ਰਿਯਾ ਮੱਧਸ ਪੁਰੁਸ਼ ਦੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਜਿਵੇਂ—

त्वम् आसीः।	ਤ੍ਰੂੰ ਸੀ।
यूयम् आस्त।	ਤੁਸੀ ਸੀ।

(क) 'युष्मद्' शब्द जब कर्ता हो, तब क्रिया मध्यम पुरुष की होती है।

जैसे—

त्वम् आसीः। तू था।
यूयम् आस्त। तुम सब थे।

(ਖ) ਅਸਮਦ ਸ਼ਬਦ ਜਦੋਂ ਕਰਤਾ ਹੋਏ, ਤਦੋਂ ਕ੍ਰਿਯਾ ਉੱਤਮ ਪੁਰੁਸ਼ ਦੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਜਿਵੇਂ—

अहम् आसम्। ਮੈਂ ਸੀ।
वयम् आस्म। ਅਸੀਂ ਸਨ।

(ख) अस्मद् शब्द जब कर्ता हो, तब क्रिया उत्तम पुरुष की होती है।

जैसे—

अहम् आसम्। मैं था।
वयम् आस्म। हम सब थे।

5. ਜਿਹੜਾ ਕ੍ਰਿਯਾ ਦਾ ਸੰਪਾਦਨ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਅਰਥਾਤ ਜਿਹੜਾ ਕ੍ਰਿਆ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਉਸ ਨੂੰ ਕਰਤਾ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।

ਜਿਵੇਂ—

रमेशः खादति = ਰਮੇਸ਼ ਖਾਂਦਾ ਹੈ। ਇੱਥੇ 'ਖਾਣਾ' ਕ੍ਰਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਕ੍ਰਿਆ ਨੂੰ ਕਰਣ ਵਾਲਾ 'ਰਮੇਸ਼' ਹੈ। ਇਸਲਈ ਇਸ ਵਾਕ ਵਿਚ 'ਰਮੇਸ਼' ਕਰਤਾ ਹੈ। ਕਰਤਾ ਕਾਰਕ ਵਿਚ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

जो क्रिया का सम्पादन करता है, अर्थात् जो क्रिया को करता है, उसे कर्ता कहते हैं।

ਜੰਸੇ—

रमेशः खादति = रमेश खाता है। यहाँ 'खाना' क्रिया है और इस क्रिया को करने वाला 'रमेश' है। अतः इस वाक्य में 'रमेश' कर्ता है। कर्ता कारक में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਅਸ ਧਾਤੂ ਲਙਲਕਾਰ (ਭੂਤਕਾਲ) ਵਿਚ ਮੱਧਮ ਪੁਰੁਸ਼ ਅਤੇ ਉੱਤਮ ਪੁਰੁਸ਼ ਦੇ ਰੂਪ।

अस् धातु लङ् लकार (भूतकाल) में मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष के रूप।

	ए० व०	ब० व०
म० पु०	आसीः—तू था (ਤੂੰ ਸੀ)	आस्त—तुम सब थे (ਤੁਸੀ ਸਨ)
उ० पु०	आसम्—मैं था (ਮੈਂ ਸੀ)	आस्म—हम सब थे (ਅਸੀਂ ਸਨ)

ਅਭਿਯਾਸ (अभ्यासः)—

1. ਕਰਤਾ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਕ੍ਰਿਆ ਲਗਾਓ। ਜਿਵੇਂ—

कर्ता के अनुसार क्रिया लगाइए।

जैसे—

त्वं तत्र ....। त्वं तत्र आसीः।

त्वं तत्र ....।

यूयं कुत्र ....?

मोहनः कदा तत्र ....?

यूयं ह्यः अत्र ....।

अन्धकारः सर्वत्र ....।

वयम् अद्य तत्र ....।

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਅਵਿਆਂ ਦਾ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ

निम्नलिखित अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

जैसे—

त्वं कुत्र आसीः ?

सायं, प्रातः, ह्यः, कुत्र, कदा, तदा, सर्वत्र ।

3. ਉਚਿਤ ਕਰਤਾ ਪਦ ਨਾਲ ਵਾਕਪੂਰਤੀ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

उचित कर्ता-पद से वाक्यपूर्ति करें ।

जैसे—

त्वं अद्य प्रातः आसीः ।

.... अद्य प्रातः आसीः ।

.... कदा आसीत् ?

.... सर्वत्र आसीत् ।

.... तदा तत्र आसम् ।

.... तदा कुत्र आस्त ?

.... अत्र नहि आस्म ।

4. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸਰਵਨਾਮਾਂ ਦਾ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ।

निम्नलिखित सर्वनामों का संस्कृत-वाक्यों में प्रयोग करें ।

त्वम्, यूयम्, अहम्, वयम्, सः, ते ।

5. ਸ਼ੁੱਧ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦ ਲਗਾਓ। ਜਿਵੇਂ—

कोष्ठक में से शुद्ध क्रिया-पद लगाइए ।

जैसे—

त्वम् अद्य प्रातः .... (आसम् / आसीः) ।

त्वम् अद्य प्रातः **आसीः** ।

त्वम् अद्य प्रातः .... (आसम् / आसीः) ।

अहम् अद्य गृहे .... (आस्त / आसम्) ।

यूयम् उपरि .... (आस्त / आसम्) ।

वयं सायं तत्र .... (आसम् / आस्म) ।

सः कुत्र .... (आसन् / आसीत्) ?

ते कदा अत्र .... (आसीत् / आसन्) ?

6. ਪਾਠ ਵਿਚ ਆਏ ਹੋਏ ਸਾਰੇ ਅਵਿਆਂ ਨੂੰ ਅਰਥ ਸਮੇਤ ਲਿਖੋ ।

पाठ में आये सभी अव्ययों को अर्थ-सहित लिखें ।

7. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए ।

शुकः कुत्र आसीत् ?

अहम् इदानीं तत्र आसम् ।

त्वं कदा अत्र आसीः ?

प्रातः बालकाः तत्र आसन् ।

वयं तदानीम् अत्र एव आस्म ।

यूयं ह्यः कुत्र आस्त ?

8. ਅਸ ਧਾਤੂ ਲੰਙਲਕਾਰ ਵਿਚ ਤਿੱਨਾ ਪੁਰੁਸ਼ ਦੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਰੂਪ ਰੱਟ ਕੇ ਲਿਖੋ ।

अस् धातु लङ्लकार में तीनों पुरुषों के वहुवचन रूप को कंठस्थ करके लिखिए ।

9. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਤੁਸੀਂ ਕੱਲ ਕਿੱਥੇ ਸਨ ?	तुम कल कहाँ थे ?
ਮੈਂ ਕੱਲ ਇੱਥੇ ਸੀ ।	मैं कल यहाँ था ।
ਕੀ ਤੁਸੀਂ ਲੋਕ ਅੱਜ਼ ਬਾਹਿਰ ਸਨ ?	क्या तुम लोग आज बाहर थे ?
ਅਸੀਂ ਲੋਕ ਬਾਹਿਰ ਨਹੀਂ ਸਨ ।	हम लोग बाहर नहीं थे ।
ਅੱਜ ਸਵੇਰੇ ਮੁੰਡੇ ਇੱਥੇ ਸਨ ।	आज प्रातः लड़के यहाँ थे ।

हे दारिद्र्य ! नमस्तुभ्यं, सिद्धोऽहं त्वत्प्रसादतः ।
पश्याम्यहं जगत्सर्वं, न मां पश्यति कश्चन ॥

सप्तमः पाठः

ਤਤ ਸ਼ਬਦ (ਪੁੱਲਿੰਗ, ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਅਤੇ ਨਪੁੰਸਕਲਿੰਗ) ਕਰਤਾਕਾਰਕ (ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ) ਅਵਿਅ।

'तत्' शब्द (पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग) कर्त्ताकारक 'प्रथमाविभक्ति) अव्यय।

सः कुत्र आसीत् ?	सः उपरि आसीत्।
किं सः प्रातः अत्र आसीत् ?	सः प्रातः अत्र एव आसीत्।
ते अद्य कुत्र आसन् ?	ते अद्य तत्र आसन्।
ते कदा वहिर् आसन् ?	ते सायं वहिर् आसन्।
सा तदा कुत्र आसीत् ?	सा तदा अधः आसीत्।
किं सा ह्यः अत्र आसीत् ?	सा ह्यः अत्र न आसीत्।
ताः कदा अन्तर् आसन् ?	ताः नक्तं अन्तर् आसन्।
तत् फलं कुत्र आसीत् ?	तानि फलानि कुत्र आसन् ?
तत् मित्रं आसीत्।	तानि मित्राणि आसन्।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

तत् — वह (ਉਹ)   अधः — नीचे (ਥੱਲੇ)

ਨਿਰਦੇਸ (निर्देशः)—

1. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਤਿੰਨ ਲਿੰਗ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਪੁੰਲਿੰਗ, ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਅਤੇ ਨਪੁੰਸਕਲਿੰਗ। ਜਿਵੇਂ—

संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं—

पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग ।

जैसे—

पुं० — रामः, कृष्णः, देवः आदि ।

स्त्री० — रमा, लता, उमा आदि ।

नपुं० — फलम्, दुग्धम्, जलम्, मित्रम् आदि ।

2. ਤਤ (तत्), ਯਤ (यत्), ਕਿਮ (किं), ਇਦਮ (इदम्), ਅਸਮਦ (अस्मद्), ਯੁਸ਼ਮਦ (युष्मद्) ਆਦਿ ਸ਼ਬਦ ਸਰਵਨਾਮ ਹਨ। ਸਰਵਨਾਮ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਸੰਗਿਆ (ਵਿਅਕਤੀ ਜਾਂ ਵਸਤੂ) ਦੇ ਥਾਂ ਵਿਚ ਕੀੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰਦੇ ਵੇਲੇ ਜੇਹੜਾ ਲਿੰਗ, ਵਚਨ ਅਤੇ ਵਿਭਕਤੀ ਸੰਗਿਆ ਦੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਉਹੇ ਲਿੰਗ, ਉਹੇ ਵਚਨ, ਅਤੇ ਉਹੇ ਵਿਭਕਤੀ ਸਰਵਨਾਮ ਵਿਚ ਵੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—"ਅਨਿਲ ਚੰਗਾ ਮੁੰਡਾ ਹੈ। ਉਹ ਅੰਗਿਆਕਾਰੀ ਹੈ"। ਇਸ ਵਾਕ ਵਿਚ 'ਉਹ' ਸਰਵਨਾਮ ਹੈ, ਕਿਓਂਕਿ ਉਹ ਸੰਗਿਆਪਦ ਅਨਿਲ ਦੇ ਥਾਂ ਤੇ ਆਇਆ ਹੈ।

तत्, यत्, किं, इदम्, अस्मद्, युष्मद् आदि शब्द सर्वनाम हैं। सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा (व्यक्ति या वस्तु) के स्थान पर किया जाता है। वाक्य में प्रयोग करते समय जो लिङ्ग, जो वचन तथा जो विभक्ति संज्ञा की होती है, वही लिङ्ग, वही वचन तथा वही विभक्ति सर्वनाम में भी होती है। जैसे—"अनिल अच्छा लड़का है। वह आज्ञाकारी है"। इस वाक्य में 'वह' सर्वनाम है, क्योंकि वह संज्ञा पद अनिल के स्थान पर आया है।

3. ਅਸਮਦ ਅਤੇ ਯੁਸ਼ਮਦ ਵੀ ਸਰਵਨਾਮ ਹਨ, ਕਿੰਤੂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਲਿੰਗਾ ਵਿਚ ਕੋਈ ਬਦਲਾਵ ਨਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

अस्मद् तथा युष्मद भी सर्वनाम हैं, किन्तु इनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

4. ਤਤ (तत्) ਇਹ ਮੂਲ ਸ਼ਬਦ ਹੈ, ਪਰ ਇਸਦਾ ਰੂਪ ਪੁੰਲਿੰਗ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਵਿਚ 'सः' 'ते', ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਵਿਚ 'सा' 'ताः' ਅਤੇ ਨਪੁੰਸਕਲਿੰਗ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਵਿਚ 'तत्' 'तानि' ਬਣਦਾ ਹੈ।

'तत्' यह मूल शब्द है, परन्तु इसका रूप पुंल्लिग प्रथम पुरुष प्रथमा विभक्ति में 'सः' 'ते' स्त्रीलिग प्रथमा विभक्ति में 'सा' 'ताः' तथा नपुंसकलिङ्ग प्रथमा विभक्ति में 'तत्' 'तानि' बनता है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

'तत्' शब्द

	ए० व०	ब० व०
पुं०	सः	ते
स्त्री०	सा	ताः
नपुं०	तत्	तानि

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਅਸ ਧਾਤੂ ਲੰਙ ਲਕਾਰ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ। ਜਿਵੇਂ—
अस् धातु लङ् लकार की क्रिया के साथ रिक्त स्थान भरिए।
जैसे—

सा कुत्र .... ? सा कुत्र **आसीत्** ?

ताः कुत्र .... ?
ते कुत्र .... ?
सः अन्यत्र .... ?
तत् तत्र ....।

2. 'ਤਤ' ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਪੁੰਲਿੰਗ ਰੂਪ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

'तत्' शब्द के पुंल्लिङ्ग रूप के साथ खाली स्थान भरिए।

जैसे—

···· ···· ···· ह्यः कुत्र आसीत् ? सः ह्यः कुत्र आसीत् ?

···· ···· ···· वहिर् आसन् ।

···· ···· ···· प्रातः अत्र आसन् ।

···· ···· ···· अद्य तत्र आसीत् ।

···· ···· ···· इदानीं कुत्र आसीत् ?

3. 'ਤਤ' ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਰੂਪ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
'तत्' शब्द के स्त्रीलिङ्ग रूप के साथ रिक्त स्थान भरिए।

जैसे—

···· ···· तदानीं कुत्र आसीत् ? सा तदानीम् कुत्र आसीत् ?

···· ···· ···· अत्र आसन् ।

···· ···· ···· ह्यः तत्र आसन् ।

···· ···· ···· अन्यत्र न आसन् ।

4. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਕਰਤਾ ਪਦਾਂ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਦ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित वाक्यों में कर्ता-पदों के अनुसार क्रिया पदों को शुद्ध कीजिए।

जैसे—

सा अद्य कदा आसन् ? सा अद्य कदा आसीत् ?

यदा ते अत्र आसीत् ।

सः सर्वदा अत्र आसन् ।

ताः किं तत्र न आसीत् ?

तानि अन्यत्र आसन् ।

तत् कुत्र् आसन् ?

5. ਅਵਿਅ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕ ਪੂਰਾ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—

उचित अव्यय-पदों से वाक्य पूरा करें ।

जैसे—

सा .... आसीत् । सा तदा आसीत् ।

सा .... आसीत् ।

ते .... आसन् ।

सः .... आसीत् ।

ते .... आसन् ।

6. 'ਤਤ' ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਬਹੁਵਚਨ ਦੇ ਨਾਲ ਵਾਕ ਪੂਰਾ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

'तत्' शब्द के स्त्रीलिङ्ग वहुवचन के साथ वाक्य पूरा कीजिए ।

जैसे—

.... तत्र आसन् ? ताः तत्र आसन् ।

.... कुत्र आसन् ?

.... तदा आसन् ।

.... अत्र आसन् ।

.... कदा आसन् ?

6. ਹੇਠਾਂ ਕਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਾਕਾਂ ਦਾ ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
निम्नलिखित वाक्यों का अपनी मातृभाषा में अनुवाद कीजिए ।

सा अन्यत्र आसीत् ।
सः तत्र आसीत् ।
ताः प्रातः आसन् ।
ते तदा न आसन् ।
सः कुत्र आसीत् ?

8. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਉਹ ਕੱਲ ਕਿਥੇ ਸੀ ।	वह कल कहाँ था ?
ਉਹ ਅੱਜ ਇਥੇ ਸਨ ।	वे आज यहाँ थे ।
ਉਹ ਕਦੋਂ ਉਥੇ ਸੀ ?	वह कब वहाँ थी ?
ਉਹ ਸਵੇਰੇ ਬਾਹਿਰ ਸਨ ।	वे प्रातः बाहर थीं ।

यदि सन्ति गुणाः पुंसां, विकसन्त्येव ते स्वयम् ।
न हि कस्तूरिकामोदः, शपथेन विभाव्यते ॥

अष्टमः पाठः

'ਜਤ', 'ਕਿਮ', ਸ਼ਬਦ (ਤਿੱਨਾਂ ਲਿੰਗ) ਪ੍ਰਥਮਾਂ ਵਿਭਕਤੀ ਅਸ ਧਾਤੁ, ਲੱਟ ਲਕਾਰ (ਵਰਤਮਾਨ ਕਾਲ)

'यत्' 'किं' शब्द (तीनों लिङ्ग) प्रथमा विभक्ति अस् धातु लट्लकार (वर्तमान काल)

त्वं कः असि ?	अहं विनोदः अस्मि ।
यूयं के स्थः ?	वयं पथिकाः स्मः ।
यः बहिर् अस्ति, सः कः अस्ति ?	सः याचकः अस्ति ।
ये प्रातः अत्र आसन्, किं ते छात्राः ?	आम्, ते छात्राः आसन् ।
या तत्र आसीत्, सा का ?	सा रमा आसीत् ।
याः अत्र सन्ति, ताः काः ?	ताः अध्यापिकाः सन्ति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

यत् — जो, किम् — क्या, कौन वस्तु ।
तत् — वह, वह वस्तु । आम् — हाँ ।

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. 'यत्' ਅਤੇ 'किम्' ਸਰਵਨਾਮਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਤਿੱਨਾਂ ਲਿੰਗਾਂ ਵਿਚ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਅਤੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰਦੇ ਵੇਲੇ ਇਨਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਸੰਗਿਆ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—सः बालकः = ਉਹ ਮੁੰਡਾ। सा बालिका = ਉਹ ਕੁੜੀ। तत् फलम् = ਉਹ ਫਲ।

'यत्' और 'किम्' आदि सर्वनामों के रूप तीनों लिङ्गों में होते हैं तथा वाक्यों में प्रयोग करते समय इनके रूप संज्ञा-पद के अनुसार हो जाते हैं। जैसे—सः बालकः = वह लड़का। सा बालिका = वह लड़की। तत् फलम् = वह फल।

2. ਲੱਟਲਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਵਰਤਮਾਨ ਕਾਲ ਵਿਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—सः अस्ति = ਉਹ ਹੈ। ते सन्ति = ਉਹ ਹਨ।

लट्-लकार का प्रयोग वर्तमान काल में होता है। जैसे—सः अस्ति = वह है। ते सन्ति = वे हैं।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਯਤ (यत्), ਤਤ (तत्), ਅਤੇ ਕਿਮ (किं) ਦੇ ਤਿੱਨਾਂ ਲਿੰਗਾਂ ਵਿਚ ਰੂਪ।
'यत्', 'तत्' तथा 'किं' सर्वनामों के तीनों लिङ्गों में रूप।

	एकवचन			बहुवचन		
			'यत्' शब्द			
पुं०	यः	जो	(ਜੇਹੜਾ)	ये	जो	(ਜੇਹੜੇ)
स्त्री०	या	जो	(ਜੇਹੜੀ)	याः	जो	(ਜੇਹੜੀਆਂ)
नपुं०	यत्	जो	(ਜੇਹੜਾ)	यानि	जो	(ਜੇਹੜੇ)
			'तत्' शब्द			
पुं०	सः	वह	(ਉਹ)	ते	वे	(ਉਹ)
स्त्री०	सा	वह	(ਉਹ)	ताः	वे	(ਉਹ)
नपुं०	तत्	वह	(ਉਹ)	तानि	वे	(ਉਹ)
			'किम्' शब्द			
पुं०	कः	कौन	(ਕੌਣ)	के	कौन	(ਕੌਣ)
स्त्री०	का	कौन	(ਕੌਣ)	काः	कौन	(ਕੌਣ)
नपुं०	किम्	कौन	(ਕੌਣ)	कानि	कौन	(ਕੌਣ)

अस् धातु लट्लकार

प्र० पु०	अस्ति — है (ਹੈ)	सन्ति — हैं (ਹਨ)
म० पु०	असि — हो (ਤੂੰ ਹੈ)	स्थ — हो (ਤੁਸੀ ਹੈ)
उ० पु०	अस्मि — हूँ (ਮੈਂ ਹਾਂ)	स्मः — हैं (ਅਸੀਂ ਹਾਂ)

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

ਉਪਯੁਕਤ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦ ਨਾਲ ਵਾਕ ਪੂਰਾ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
उपयुक्त क्रिया-पदों से वाक्य पूरा कीजिए ।

जैसे—

अहं तत्र .... अस्मि / अस्ति ।
अहं तत्र **अस्मि** ।

ते अत्र .... अस्ति / सन्ति ।

सा तत्र .... असि / अस्ति ।

त्वं संप्रति कुत्र.... .... अस्मि / असि ?

सा का .... सन्ति / अस्ति ?

यूयं कुत्र .... आसन् / आस्त ?

2. ਉਪਯੁਕਤ ਕਰਤਾ ਪਦ ਨਾਲ ਵਾਕ ਪੂਰਾ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
उपयुक्त कर्त्ता-पदों से वाक्य पूरा कीजिए ।

जैसे—

सा / अहम् .... अत्र अस्मि । अहं अत्र अस्मि ।

सः / यूयं .... तत्र अस्ति ।

ते / वयम् .... अत्र स्मः ।

के / का .... तत्र सन्ति ?

ये / याः .... अत्र आसन् ।

यत्/यानि .... तत्र आसीत् ।

3. ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਦ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
क्रिया-पदों को शुद्ध कीजिए ।
जैसे—

वालकाः तत्र स्थ । वालकाः तत्र सन्ति ।

वयं अत्र सन्ति ।

तत् फलम् अत्र न सन्ति ।

यूयं वहिः स्म ।

अयं ह्यः अत्र न आसन् ।

त्वम् उपरि अस्ति ।

सर्वत्र प्रकाशः असि ।

4. ਹੇਠਾ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦ ਰੂਪਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
निम्नलिखित पदों में से उचित पद से रिक्त स्थान भरिए।

काः, के, यत्, वयम्, यूयं, नराः ।

जैसे—

.... तत्र सन्ति = के तत्र सन्ति ?

.... अत्र अस्ति ।

.... उपरि आसन् ।

.... संप्रति वहिः स्मः ।

.... कुत्र स्थ ?

.... अत्र आसन् ।

5. ਅਸ ਧਾਤੂ ਲੱਟ ਲਕਾਰ ਕ੍ਰਿਆ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋਂ । ਜਿਵੇਂ—
अस् धातु, लट् लकार (वर्तमान काल) के क्रिया-पदों से रिक्त स्थान भरिए ।

जसे—

बालकाः कुत्र .... । बालकाः कुत्र सन्ति ?

नराः किं अत्र .... ?

सा अत्र .... ।

का तत्र .... ?

त्वम् अन्यत्र .... ।

कः नरः तत्र .... ?

प्रकाशः सर्वत्र .... ।

ईश्वरः सर्वत्र .... ।

6. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत-भाषा में अनुवाद कीजिए ।

ਮੈਂ ਇੱਥੇ ਹਾਂ ।	मैं यहाँ हूँ ।
ਤੁਸੀ ਕਿੱਥੇ ਹੋ ?	तुम कहाँ हो ?
ਉਹ ਅੱਜ ਕਿੱਥੇ ਸਨ ।	वे आज कहाँ थे ।
ਕੌਣ ਬਾਹਿਰ ਹੈ ?	कौन वाहर है ?
ਉੱਥੇ ਕੌਣ ਸੀ ।	वहाँ कौन थी ?
ਉਹ ਉੱਤੇ ਹਨ ।	वे ऊपर हैं ।
ਮੁੰਡੇ ਥੱਲੇ ਨਹੀਂ ਹਨ ।	लड़के नीचे नहीं हैं ।

सा भार्या या प्रियं ब्रूते, सः पुत्रो यत्र निर्वृतिः ।
तन्मित्रं यत्र विश्वासः, स देशो यत्र जीव्यते ।।

ਨਵਮਃ ਪਾਠਃ

ਅਕਾਰਾਂਤ ਪੁਲਿੰਗ, ਨਪੁੰਸਕਲਿੰਗ, ਆਕਾਰਾਂਤ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਸੰਗਿਆਂ, (ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤਿ) ਭੂ, ਪਠ, ਚਲ, ਪਾ, ਗਮ, ਵਦ, ਹਸ, ਲਿਖ ਆਦਿ ਧਾਤੂਆਂ ਵਿਚ ਲੱਟਲਕਾਰ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ।

अकारान्त पुंल्लिग, नपुंसक लिङ्ग, आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएं (प्रथमा विभक्ति), भू, पठ्, चल्, पा, गम्, वद्, हस्, लिख् आदि धातुओं का लट्लकार में प्रयोग ।

अकारान्त—पुं०/नपुं०

पीयूषः पठति ।	गजाः गच्छन्ति ।
शुकः रटति ।	हंसाः तरन्ति ।
कः लिखति ?	के हसन्ति ?
जलं निर्मलम् अस्ति ।	पात्राणि स्वच्छानि सन्ति ।
पत्रं पतति ।	फलानि पतन्ति ।
तत् फलं मधुरम् अस्ति ।	तानि मित्राणि वदन्ति ।
कार्यं भवति ।	कार्याणि भवन्ति ।

आकारान्त—स्त्री०

वालिका लिखति ।	वालिकाः लिखन्ति ।
रमा पिबति ।	नौकाः चलन्ति ।
सा पश्यति ।	ताः धावन्ति ।

बाला बदति ।	कन्याः पठन्ति ।
लता नृत्यति ।	गायिकाः गायन्ति ।
सा पश्यति ।	ताः पश्यन्ति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

पठ्—पढना (ਪੜ੍ਹਨਾ)	गम्—(गच्छ्) जाना (ਜਾਣਾ)
रट्—रटना (ਰਟਨਾ)	तृ—(तर्) तैरना (ਤਰਨਾ)
लिख्—लिखना (ਲਿਖਣਾ)	हस्—हसना (ਹਸਣਾ)
अस्—होना (ਹੋਣਾ)	पत्—गिरना (ਡਿਗਣਾ)
वद्—बोलना (ਬੋਲਣਾ)	भू—होना (ਹੋਣਾ)
नृत्—नाचना (ਨਾਚਣਾ)	चल्—चलना (ਚਲਣਾ)
पा (पिब्)—पीना (ਪੀਣਾ)	दृश् (पश्य)—देखना (ਵੇਖਣਾ)
धाव्—दौड़ना (ਦੌੜਨਾ)	पत्र—पत्ता (ਪੱਤਾ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਗਜ (गज), ਸ਼ੁਕ (शुक), ਪ੍ਰਕਾਸ਼ (प्रकाश) ਆਦਿ ਸ਼ਬਦ ਅਕਾਰਾਂਤ ਹਨ, ਕਿਉਂਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਅੰਤਿਮ ਧਵਨੀ 'अ' ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—गज् + अ (गज), शुक् + अ (शुक) ਆਦਿ। ਅਕਾਰਾਂਤ ਸ਼ਬਦ ਆਮ ਤੌਰ ਤੇ ਪੁਲਿੰਗ ਜਾਂ ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਸੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕ੍ਰਿਸ਼ਣਾ (कृष्णा), ਸਰਲਾ (सरला), ਸ਼ੀਲਾ (शीला) ਆਦਿ ਆਕਾਰਾਂਤ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਅੰਤਿਮ ਧਵਨੀ 'आ' ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—रमा = रम् + आ। सरला = सरल् + आ ਆਦਿ। ਆਕਾਰਾਂਤ ਸ਼ਬਦ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

   गज, शुक, प्रकाश इत्यादि शब्द अकारान्त हैं, क्योंकि इनकी अंतिम ध्वनि "अ" है। जैसे—गज् + अ (गज), शुक् + अ

(शुकं) इत्यादि। अकारान्त शब्द प्रायः पुंल्लिङ्ग अथवा नपुंसकलिङ्ग होते हैं। इसी प्रकार कृष्णा, सरला, शीला इत्यादि आकारान्त हैं, क्योंकि इनकी अंतिम ध्वनि 'आ' है। जैसे—रमा = रम् + आ। सरला = सरल् + आ इत्यादि। ये सभी शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। आकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

2. ਕੁਝ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਮੂਲ ਰੂਪ ਲੱਟ, ਲੋਟ, ਲਙ ਅਤੇ ਵਿਧਿਲਿੰਗ ਲਕਾਰ ਵਿਚ ਬਦਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—
कुछ धातुओं के मूलरूप लट् (वर्तमान काल), लङ् (भूतकाल) लोट् (आज्ञार्थ) तथा विधिलिङ्ग में बदल जाते हैं। जैसे—

		लट् (वर्तमान काल)	लङ् (भूतकाल)
गम्	(गच्छ्)	गच्छति	अगच्छत्
पा	(पिब्)	पिवति	अपिबत्
स्था	(तिष्ठ्)	तिष्ठति	अतिष्ठत्
दृश्	(पश्य्)	पश्यति	अपश्यत्

I. ਇੱਥੇ 'गम्' ਦਾ 'गच्छ्', 'पा' ਦਾ 'पिब्', 'स्था' ਦਾ 'तिष्ठ्' ਅਤੇ 'दृश' ਦਾ 'पश्य' ਹੋਗਿਆ ਹੈ।
यहाँ 'गम्' का 'गच्छ्', 'पा' का 'पिब्', 'स्था' का 'तिष्ठ्' तथा 'दृश्' का 'पश्य' हो गया है।

II. ਲੋਟ ਅਤੇ ਵਿਧਿਲਿੰਗ ਲਕਾਰ ਦੇ ਰੂਪ ਕ੍ਰਮਾਨੁਸਾਰ ਅੱਗੇ ਦਿੱਤੇ ਜਾਣਗੇ।
लोट् तथा विधिलिङ् लकार के रूप क्रमानुसार आगे दिए जाएगे।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

अकारान्त पुं० 'नर', नपुं० 'फल' तथा
आकारान्त स्त्री० बालिका को प्रथमा विभक्ति में रूप।

	ਏ० ਵ०		ਵ० ਵ०
नरः	पुरुष (ਆਦਮੀ)	नराः	अनेक पुरुष (ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਆਦਮੀ)
बालिका	लड़की (ਕੁੜੀ)	बालिकाः	लड़कियाँ (ਕੁੜੀਆਂ)
फलम्	फल (ਫਲ)	फलानि	अनेक फल (ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਫਲ)

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠਾਂ ਦਿਤਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਵਾਕ ਬਣਾਓ ।
   निम्नलिखित धातुओं से वाक्य बनाइए ।

   गम्, पठ्, लिख्, पा तथा खाद् ।

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨਾਲ ਉਚਿਤ ਕਰਤਾ ਜੋੜ ਕੇ ਵਾਕ ਬਣਾਓ ।
   निम्नलिखित क्रियापदों के साथ उचित कर्त्ता जोड़ कर वाक्य बनाइए ।

   पचति, तरति, धावन्ति, वदामि, पश्यसि ।

3. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਉਚਿਤ ਕ੍ਰਿਆਪਦ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਵਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
   कोष्ठक में दिए क्रियापदों में से उचित क्रियापद से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें ।

   जैसे—

   हंसः .... (तरति / धावति) ?

   हंसः **तरति** ।

   वानरः .... (पठति / कूर्दति) ।

   गजाः .... (हसन्ति / गच्छन्ति) ।

   कोकिला .... (कूजति / वदति) ।

   शाखाः .... (तिष्ठन्ति / गच्छन्ति) ।

   अजा .... (धावति / नृत्यति) ।

4. ਪਾਠ ਵਿਚ ਆਏ ਹੋਏ ਆਕਾਰਾਂਤ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲੋਂ ਅਲੈਦਾ ਕੁਝ ਆਕਾਰਾਂਤ ਸ਼ਬਦਾ ਵਿਚ ਬਹੁਵਚਨ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ ।
पाठ में आए आकारान्त शव्दों के अतिरिक्त कुछ आकारान्त शव्दों के वहुवचन में रूप लिखिए ।

5. ਇਹ ਨਪੁੰਸਕਲਿੰਗ ਇਕਵਚਨ ਦੇ ਰੂਪ ਹਨ, ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਲਿਖੋ ।
निम्नलिखित रूप नपुंसकलिंग एकवचन के हैं, इनको वहुवचन में लिखिए ।
जलम्, पत्रम्, पुष्पम्, मित्रम्, कमलम्, सुमनम् ।

6. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸਰਵਨਾਮਾਂ ਦਾ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ ।
निम्नलिखित सर्वनामों का संस्कृत-वाक्यों में प्रयोग करें।

अहम्, त्वम्, यूयम्, वयम् सा, ते, ताः, ते, तत् किम् ।

7. ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਦ ਕਰੋ ।
क्रियापदों को शुद्ध कीजिए ।

जैसे—सा पचन्ति ।   सा पचति ।
ते गच्छति ।
अहं गच्छामः ।
काकः पिवन्ति ।
वालिकाः पचति ।
फलानि पतति ।
पत्रं पतन्ति ।

8. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਅਮਰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ।	अमर जाता है ।
ਆਦਮੀ ਵੇਖਦੇ ਹਨ ।	आदमी देखते हैं ।

ਘੋੜੇ ਦੌੜਦੇ ਹਨ।	घोड़े दौड़ते हैं।
ਮੁੰਡੇ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ।	लड़के पढ़ते हैं।
ਤੁਸੀਂ ਕੀ ਕਰਦੇ ਹੋ?	तुम क्या करते हो?
ਮੁੰਡੇ ਹਸਦੇ ਹਨ।	लड़के हँसते हैं।

9. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।

अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए।

ते पश्यन्ति ।

अधः जलं पतति।

वयं तत्र गच्छामः ।

यूयं कुत्र गच्छथ ।

अत्र अश्वाः सन्ति ।

पत्राणि पतन्ति ।

पुष्पाणि विकसन्ति ।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः॥

दशमः पाठः

ਪਹਿਲਾਂ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕੀਤੇ ਗਏ ਸਰਵਨਾਮਾਂ ਅਤੇ ਸੰਗਿਆਵਾਂ ਦੁਤਿਆ ਵਿਭਕਤੀ (ਕਰਮ ਕਾਰਕ)।

पूर्व प्रयुक्त सर्वनामों व संज्ञाओं की द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)।

सुदेशः पाठं पठति ।	सेवकः घोटकान् नयति ।
छात्राः आचार्यं नमन्ति ।	आचार्यः छात्रान् वदति ।
सेविका आज्ञां पालयति ।	देवाः पुष्पमालाः धारयन्ति ।
बालिका लतां पश्यति ।	शिक्षकः छात्राः कथयति ।
सा मां कथयति ।	ताः अस्मान् पृच्छन्ति ।
अहं त्वां जानामि ।	अहं युष्मान् जानामि ।
सा किं पश्यति ?	सा तानि फलानि पश्यति ।
यूयं कां पृच्छथ ?	वयं ताः बालिकाः पृच्छामः ।
त्वं कं प्रणमसि ?	अहं देवं प्रणमामि ।
ईश्वरः सर्वत्र अस्ति ।	ईश्वरः सर्वान् रक्षति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

नम् — नमस्कार करना (ਨਮਸਕਾਰ ਕਰਣਾ)।

पल् — पालन करना (ਪਾਲਣ ਕਰਣਾ)।

प्रच्छ् (पृच्छ्)—पूछना (ਪੁਛਣਾ)।
नम् (प्रणम्)—प्रणाम करना (ਨਮਸਕਾਰ ਕਰਨਾ)।
नि —ले जाना (ਲੈ ਜਾਣਾ)।
धृ —धारण करना (ਧਾਰਨਾ)।
रक्ष् —रक्षा करना (ਰਕਸ਼ਾ ਕਰਨਾ)।
ज्ञा जानना (ਜਾਨਣਾ)।

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਇਸ ਪਾਠ ਵਿਚ ਕਰਮ ਕਾਰਕ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਸਿਖਲਾਯਾ ਗਿਯਾ ਹੈ। ਵਾਕ ਵਿਚ ਕਰਤਾ ਕ੍ਰਿਆ ਦੇ ਨਾਲ ਜੇਹੜੀ ਚੀਜ ਨੂੰ ਸਬਤੋਂ ਜ਼ਾਦਾ ਜਾਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਸ ਨੂੰ ਕਰਮ (कर्म) ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—'शिशुः दुग्धं पिबति' ਬੱਚਾ ਦੁੱਧ ਪੀਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਕ ਵਿਚ ਪੀਣਾ ਕ੍ਰਿਆ ਹੈ। ਅਤੇ ਪੀਣ ਵਾਲਾ ਸ਼ਿਸ਼ੁ ਕਰਤਾ ਹੈ। ਇੱਥੇ ਬੱਚੇ ਦਾ ਦੁੱਧ ਪੀਣਾ ਬਹੁਤ ਜਰੂਰੀ ਹੈ। ਅਤੇ ਇਸ ਵਾਕ ਵਿਚ ਦੁੱਧ ਕਰਮ ਕਾਰਕ ਹੈ। ਕਰਮ ਕਾਰਕ ਵਿਚ ਦੁਤਿਆ ਵਿਭਕਤਿ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

इस पाठ में कर्म कारक का प्रयोग सिखलाया गया है। वाक्य में कर्ता क्रिया के द्वारा जिस वस्तु को सबसे अधिक चाहता है, उसको 'कर्म' कहते हैं। जैसे—'शिशुः दुग्धं पिबति' (शिशु दूध पीता है)। इस वाक्य में 'पीना' क्रिया है तथा दूध पीने वाला 'शिशु' कर्ता है। यहाँ शिशु को दूध पीना अत्यन्त अभीष्ट है। अतः इस वाक्य में 'दूध' कर्म कारक है। कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਪੁੰਲਿੰਗ, ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਅਤੇ ਨਪੁੰਸਕਲਿੰਗ ਵਿਚ ਦੁਤਿਆ ਵਿਭਕਤਿ (ਕਰਮ ਕਾਰਕ) ਦੇ ਰੂਪ।

पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक) के रूप।

संज्ञा—

	ਏ० ਵ०	ਬ० ਵ०
गज (पुं०)	गजम्—हाथी को (ਹਥੀ ਨੂੰ)	गजान्—हाथियों को (ਹਥੀਆਂ ਨੂੰ)
मित्र (नपुं०)	मित्रम्—मित्र को (ਮਿੱਤਰ ਨੂੰ)	मित्राणि—मित्रों को (ਮਿੱਤਰਾਂ ਨੂੰ)
वालिका (स्त्री०)	वालिकाम्—वालिका को (ਕੁੜੀ ਨੂੰ)	वालिकाः—वालिकाओं को (ਕੁੜੀਆਂ ਨੂੰ)

सर्वनाम—

तत् (पुं०)	तम्—उसको (ਉਸ ਨੂੰ)	तान्—उनको (ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ)
,, (नपुं०)	तत्—उसको (ਉਸ ਨੂੰ)	तानि—उनको (ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ)
,, (स्त्री०)	ताम्—उसको (ਉਸ ਨੂੰ)	ताः—उनको (ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ)
अस्मद्	माम्—मुझको, मुझे (ਮੈਂ ਨੂੰ)	अस्मान्—हमको, हमें (ਸਾਨੂੰ)
युष्मद्	त्वाम्—तुझको, तुझे (ਤੈਂ ਨੂੰ)	युष्मान्—तुमको, तुम्हें (ਤੁਹਾਨੂੰ)

2. 'ਯਤ' ਅਤੇ 'ਕਿਮ' ਸਰਵਨਾਮਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਤਿੱਨਾ ਲਿੰਗਾਂ ਵਿਚ 'ਤਤ' ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਤਰਹਾਂ ਹੀ ਹੁਣਦੇ ਹਨ।

ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ ਦੇ ਰੂਪ ਪ੍ਰਥਮਾ ਅਤੇ ਦੁਤਿਆ ਵਿਭਕਦੀ ਨੂੰ ਛਡ ਕੇ ਬਾਕੀ ਸਾਰੀ ਵਿਭਕਤੀਆਂ ਅਕਾਰਾਂਤ ਪੁਲਿੰਗ ਦੀ ਤਰਹਾਂ ਹੀ ਹੁਣਦੇ ਹਨ।

'यत्' और 'किम्' सर्वनाम के रूप तीनों लिङ्गों में 'तत्' शब्द की तरह ही होते हैं।

नपुंसक लिङ्ग के रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्ति को छोड़ कर शेष सभी विभक्तियों में अकारान्त पुंलिङ्ग की तरह ही होते हैं।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਉੱਤਰ ਦਿਓ ।
अपने पाठ से संस्कृत में उत्तर दीजिए ।

सेवकः कान् आनयति ?
छात्राः कं नमन्ति ?
का आज्ञां पालयति ?
के पुष्पमालाः धारयन्ति ?
कः सर्वान् रक्षति ?
सा किं पश्यति ?

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਦਾ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
निम्नलिखित पदों का संस्कृत-वाक्यों में प्रयोग करें ।

जैसे—सः **गजान्** पश्यति ।
गजान्, सुलेखम्, रोटिकाम्, बालिकाः, भोजनम्,
पुष्पम्, पत्राणि, युष्मान्, तान् अस्मान् ।

3. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਦੁਤਿਆ ਵਿਭਕਤੀ ਵਾਲੇ ਬਣਾਕੇ ਵਾਕ ਪੂਰਤੀ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
कोष्ठक में दिए गए शब्दों से द्वितीया विभक्ति में रूप बना कर वाक्य-पूर्ति कीजिए ।
जैसे—ते ....पश्यन्ति । (चित्र)
ते **चित्रं** पश्यन्ति ।

छात्राः .... पठन्ति । (पुस्तक)
भक्ताः .... भजन्ति । (ईश्वर)
मृगः .... पश्यति । (सिंह)
अजा .... खादति । (तृण)
त्वं .... गच्छसि । (पाठशाला)

4. ਉਚਿਤ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦ ਦਿਓ। ਜਿਵੇਂ—

उचित क्रिया-पद दीजिए।

जंसे—

वालकः फलं ···· ···· ···· (खादति / पतति) ?

वालकः फलं खादति।

छात्राः आचार्यं ···· ···· ···· (नमन्ति / हसन्ति)।

विडालः दुग्धं ···· ···· ···· (पश्यति / पिवति)।

गोपाः कृष्णं ···· ···· ···· (भजन्ति / रक्षन्ति)।

जनाः सूर्यं ···· ···· ·· (नमन्ति / नयन्ति)।

5. ਉਚਿਤ ਕਰਮ ਕਾਰਕ ਨਾਲ ਵਾਕ ਪੂਰਤੀ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

उचित कर्म कारकों से वाक्य-पूर्ति कीजिए।

जैसे—

लता ···· ···· ···· ···· पठति। लता पुस्तकं पठति।

रमा ···· ···· ···· ···· लिखति।

शुकाः···· ···· ···· ····खादन्ति।

सेवकाः ···· ···· ···· ···· नयन्ति।

शिक्षकः···· ···· ···· ···· वदति।

कृष्णः ···· ···· ···· ····पश्यति।

6. 'ਬਾਲਕ' ਅਤੇ 'ਬਾਲਿਕਾ' ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਥਮਾਂ ਤੇ ਦੁਤਿਆ ਵਿਭਕਤਿ ਵਿਚ ਰੂਪ ਲਿਖੋ।

'वालक' और 'बालिका' शब्द के प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति में रूप लिखिए।

7. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए।

माता पुत्रं लालयति ।
बालकाः आम्रान् खादन्ति ।
पण्डिताः संस्कृतं वदन्ति ।
मूर्खाः कलहं कुर्वन्ति ।
वालिकाः नृत्यं कुर्वन्ति ।
गायिकाः गीतं गायन्ति ।

8. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਦੇਖਦਾ ਹਾਂ ।	मैं तुमको देखता हूँ।
ਬਾਂਦਰ ਫਲ ਖਾਂਦਾ ਹੈ ।	वन्दर फल खाता है।
ਮੈਂ ਦੂਧ ਪੀਂਦਾ ਹਾਂ ।	मैं दूध पीता हूँ।
ਅਸੀ ਤੁਹਾ ਨੂੰ ਜਾਣਦੇ ਹਾਂ ।	हम तुम्हें जानते हैं।
ਉਹ ਘਰ ਜਾਂਦਿਆਂ ਹਨ ।	वे घर जाते हैं।
ਤੁਸੀਂ ਸਨਾਨ ਕਰਦੇ ਹੋ ।	तुम लोग स्नान करते हो।

9. ਹੇਠਾ ਦਿਤੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਲੱਟ ਲਕਾਰ ਮੱਧਮ ਪੁਰੁਸ਼ ਇਕਵਚਨ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ।
निम्नलिखित के लट् लकार मध्यम पुरुष एक वचन में रूप लिखिए :
क्रीड्, धाव्, लिख्, गम् (गच्छ), पा (पिव्)।

आचारः कुलमाख्याति, देशमाख्याति भाषणम्।
सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति, वपुराख्याति भोजनम्॥

एकादशः पाठः

ਸਰਲ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਨਾਲ 'ਕਤਵਾ' ਪ੍ਰਤਿਆ ।

सरल धातुओं के साथ 'क्त्वा' प्रत्यय ।

बालकः दुग्धं पीत्वा हसति । बालकाः दुग्धं पीत्वा हसन्ति ।
बालिका खादित्वा स्वपिति । बालिकाः खादित्वा स्वपन्ति ।
छात्रः क्रीडित्वा गच्छति । छात्राः क्रीडित्वा गच्छन्ति ।
सा पुस्तकं पठित्वा गृहं गच्छति । ताः पुस्तकं पठित्वा गृहं गच्छन्ति ।
सः चलचित्रं दृष्ट्वा हसति । ते चलचित्रं दृष्ट्वा हसन्ति ।
साधना विद्यालयं गत्वा पठति । छात्राः विद्यालयं गत्वा पठन्ति ।
सेवकः कार्यं कृत्वा आगच्छति । सेवकाः कार्यं कृत्वा आगच्छन्ति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

पा	= पीना	(ਪੀਣਾ)	हस्	= हसना	(ਹਸਣਾ) ।
स्वप्	= सोना	(ਸੌਣਾ)	क्रीड्	= खेलना	(ਖੇਡਣਾ) ।
कृ	= करना	(ਕਰਣਾ)	नी	= ले जाना	(ਲੈ ਜਾਣਾ) ।
चलचित्रम्	= सिनेमा	(ਸਿਨੇਮਾ)	आ+गम्	= आना	(ਆਣਾ) ।

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਜਦੋਂ ਇਕ ਕ੍ਰਿਆ ਦੇ ਖਤਮ ਹੋਣ ਤੋਂ ਬਾਦ ਦੂਜੀ ਕ੍ਰਿਆ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਤਦੋਂ ਪਹਿਲੀ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਚ 'ਕਤਵਾ' (क्त्वा) ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗਦਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਯੋਗ ਵਿਚ 'ਕਤਵਾ' ਪ੍ਰਤਿਆ ਦਾ 'ਤਵਾ' (त्वा) ਸ਼ੇਸ਼ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।

ਜਿਵੇਂ—'श्यामः वनं गत्वा फलम् आनयति' (ਸ਼ਾਮ ਜੰਗਲ ਜਾਕੇ ਫਲ ਲਿਆਂਦਾ ਹੈ)। ਇਸ ਵਾਕ ਵਿਚ ਪਹਿਲੀ ਕ੍ਰਿਆ 'ਜਾਣਾ' ਹੈ ਅਤੇ ਦੂਜੀ ਕ੍ਰਿਆ 'ਲਿਆਉਣਾ'। ਫਲ ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਪਹਿਲਾ ਜੰਗਲ ਜਾਣ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਕਰਨੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। 'ਜਾਣਾ' ਪੂਰਵਕਾਲ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇੱਥੇ 'गम्' ਧਾਤੂ ਨਾਲ 'क्त्वा' ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗ ਕੇ 'गत्वा' ਬਣਿਆ ਹੈ।

जब एक क्रिया के हो जाने पर दूसरी क्रिया आरम्भ होती है, तब पूर्व काल की क्रिया में 'क्त्वा' प्रत्यय लगता है। प्रयोग में 'क्त्वा' प्रत्यय का 'त्वा' शेष रहता है। जैसे—'श्यामः वनं गत्वा फलम् आनयति' (श्याम वन जाकर फल लाता है)। इस वाक्य में पहली क्रिया 'जाना' तथा दूसरी क्रिया 'लाना' है। फल लाने के लिए पहले वन जाने की क्रिया करनी होगी। अतः 'जाना' पूर्व काल की क्रिया है। इसलिए यहाँ 'गम्' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय लग कर 'गत्वा' बना है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

गम् + क्त्वा	(त्वा)	= गत्वा	जाकर	(ਜਾਕੇ)
क्रीड् + क्त्वा	(त्वा)	= क्रीडित्वा	खेलकर	(ਖੇਡ ਕੇ)
नी + क्त्वा	(त्वा)	= नीत्वा	लेकर	(ਲੈ ਕੇ)
स्था + क्त्वा	(त्वा)	= स्थित्वा	रहकर	(ਰਹ ਕੇ)

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਧਾਤੂਆ ਨਾਲ 'ਕਤਵਾ' (क्त्वा) ਪ੍ਰਤਿਆ ਜੋੜ ਕੇ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित धातुओं से 'क्त्वा' प्रत्यय जोड़ कर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

जैसे—स्था+क्त्वा (त्वा)=स्थित्वा। महेशः तत्र **स्थित्वा** पश्यति।

स्था, नी, गै, हस्, चल्, गम्, लिख्, क्रीड्।

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੀਆ ਹੋਈਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ 'ਕਤਵਾ' (क्त्वा) ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗਾ ਕੇ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित धातुओं में 'क्त्वा' प्रत्यय लगा कर रिक्त स्थान भरिए।

जैसे—खाद् + क्त्वा (त्वा) = खादित्वा।

अमृता **खादित्वा** पठति।

खाद्, नी, गम्, खेल्, स्था।

छात्रः .... पठति।

निशा ....ददाति।

अध्यापकः.... ....उपविशति।

पुत्रः .... स्वपिति।

अश्वाः ....खादन्ति।

3. ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜੋੜ ਕੇ ਇਕ ਪਦ ਬਣਾਓ। ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित को जोड़ कर एक पद वनाइए।

जैसे—हस् + क्त्वा (त्वा) = हसित्वा।

पठ् + क्त्वा = ...।

स्था + क्त्वा = ...।

पा + क्त्वा = ...।

कृ + क्त्वा = ...।

चल् + क्त्वा = ...।

4. ਸਾਰਥਕ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕ ਬਣਾਓ।

सार्थक पदों से वाक्य वनाइए।

वानरः फलं .... धावति। (लिखित्वा/खादित्वा)

गजाः जलं ....गच्छन्ति। (हसित्वा / पीत्वा)

छात्राः पुस्तकं ....तिष्ठन्ति। (पठित्वा / गत्वा)

माला भोजनं .... गच्छति। (पीत्वा / कृत्वा)

5. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए ।

रामः रावणं हत्वा अयोध्याम् आगच्छत् ।
गायकः जलं पीत्वा गायति ।
उषा पठित्वा स्वपिति ।
अहं पत्रं लिखित्वा प्रेषयामि ।
ते चित्रं दृष्ट्वा हसन्ति ।

6. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਪਰਕਾਸ਼ ਖਾਕੇ ਸੌਂਦਾ ਹੈ ।	प्रकाश खाकर सोता है ।
ਰਾਮਾਨੰਦ ਲਿਖਕੇ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ ।	रामानन्द लिखकर पढ़ता है ।
ਅਨਿਲ ਜੰਗਲ ਜਾਕੇ ਫਲ ਲਿਔਂਦਾ ਹੈ ।	अनिल जंगल जाकर फल लाता है ।
ਉਹ ਦੁੱਧ ਪੀਕੇ ਖੇਡਦਾ ਹੈ ।	वह दूध पीकर खेलता है ।
ਮੈਂ ਪੁਸਤਕ ਵੇਖਕੇ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹਾਂ ।	मैं पुस्तक देख कर पढ़ता हूँ ।

अकृत्वा परसन्तापम्, अगत्वा खलमन्दिरम् ।
अनुल्लंघ्य सतां मार्गं, यत् स्वल्पमपि तद् वहु ।।

द्वादशः पाठः

ਸਰਲ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਤੁਮੁਨ ਪ੍ਰਤਿਆ ।

सरल धातुओं के साथ तुमुन् प्रत्यय ।

बालकः पठितुं विद्यालयं गच्छति ।	बालकाः पठितुं विद्यालयं गच्छन्ति ।
वानरः फलं खादितुं धावति ।	वानराः फलानि खादितुं धावन्ति ।
अश्वः जलं पातुं गच्छति ।	अश्वाः जलं पातुं गच्छन्ति ।
बालिका संगीतं श्रोतुं गच्छति ।	बालिकाः संगीतं शिक्षितुं गच्छन्ति ।
सा जलम् आनेतुं नदीं गच्छति ।	ताः जलम् आनेतुं नदीं गच्छन्ति ।
छात्रः क्रीडितुं क्रीडाक्षेत्रं गच्छति ।	छात्राः क्रीडितुं क्रीडाक्षेत्रं गच्छन्ति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

श्रु —सुनना (ਸੁਨਣਾ) शिक्ष् — सीखना (ਸਿਖਣਾ) ।
आ+नी—लाना (ਲਿਆਉਣਾ) क्रीड् — खेलना (ਖੇਡਣਾ) ।

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਜਦੋਂ ਇਕ ਕ੍ਰਿਆ ਨੂੰ ਕਰਣ ਲਈ ਦੂਜੀ ਕ੍ਰਿਆ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਤਦੋਂ ਜਿਸ ਕ੍ਰਿਆ ਦੇ ਲਈ ਕ੍ਰਿਆ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਉਸ ਦੀ ਧਾਤੂ ਵਿਚ 'ਤੁਮੁਨ' (तुमुन्) ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—"वानरः जलं पातुं धावति" (ਬਾਂਦਰ ਪਾਣੀ ਪੀਣ ਲਈ ਦੌੜਦਾ ਹੈ)। ਇਹ ਵਾਕ ਵਿਚ ਦੋ ਕ੍ਰਿਆਵਾਂ ਹਨ—ਪੀਣਾ ਅਤੇ ਦੌੜਨਾ। ਦੌੜਨੇ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਪੀਣ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਦੇ ਨਿਮਿੱਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਸਲਈ ਇੱਥੇ 'ਪਾ' ਧਾਤੂ ਵਿਚ 'ਤੁਮੁਨ' ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗਾ ਕੇ 'ਪਾਤੁਮ' (ਪੀਣ ਲਈ) ਇਹ ਰੂਪ ਬਣਿਆ ਹੈ।

2. 'ਤੁਮੁਨ' (तुमुन्) ਪ੍ਰਤਿਆ ਦਾ ਸਿਰਫ 'ਤੁਮ' (तुम्) ਸੇਸ਼ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'गम् + तुमुन् (तुम्) = गन्तुम्'। ਇਸੀ ਤਰਹਾਂ ਪਠਿਤੁਮ, ਲਿਖਿਤੁਮ (पठितुम्, लिखितुम्) ਆਦਿ।

जब एक क्रिया को करने के लिए दूसरी क्रिया की जाती है, तब जिस क्रिया के लिए क्रिया की जाती है, उस धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय लगता है। जैसे—'वानरः जलं पातुं धावति' (वानर जल पीने के लिए दौड़ता है)। इस वाक्य में दो क्रियायें हैं—पीना और दौड़ना। दौड़ने की क्रिया पीने की क्रिया के निमित्त हो रही है। इसलिए यहाँ 'पा' धातु में तुमुन् प्रत्यय लगकर 'पातुं' (पीने के लिए) यह रूप बना है।

तुमुन् प्रत्यय का 'तुम्' शेष रहता है। जैसे—गम्+तुमुन् (तुम्) = गन्तुम्। इसी तरह पठितुम्, लिखितुम् इत्यादि।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

गम्	+तुमुन् (तुम्)	गन्तुम्	जाने के लिए (ਜਾਣ ਲਈ)
दृश्	+तुमुन् (तुम्)	द्रष्टुम्	देखने के लिए (ਵੇਖਣ ਲਈ)
आ, नी	+तुमुन् (तुम्)	आनेतुं	लाने के लिए (ਲਿਆਣ ਲਈ)
स्वप्	+तुमुन् (तुम्)	स्वपितुं	सोने के लिए (ਸੌਣ ਲਈ)

ਅਭਿਯਾਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਤੁਮੁਨ ਪ੍ਰਤਿਆ ਜੋੜ ਕੇ ਵਾਕ ਵਿਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—
निम्नलिखित धातुओं में तुमुन् प्रत्यय जोड़ कर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

जैसे—

भ्रम्+तुमन् (तुम) भ्रमितुं। गोपालः भ्रमितुं गच्छति।

भ्रम्, पत्, पा, धाव्, पठ्, स्वप्, खाद्, स्था।

2. ਥੱਲੇ ਲਿਖਿਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਤੁਮੁਨ ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗਾਕੇ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ।
ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित धातुओं में 'तुमुन्' प्रत्यय लगा कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

जैसे—लिख् + तुमुन् (तुम्) = लिखितुं।

महेशः .... तिष्ठति।

महेशः **लिखितुं** तिष्ठति।

क्रीड्, पा, खाद्, गम्, पठ्।

बालिकाः कन्दुकेन .... धावन्ति।

मृगः जलं .... गच्छति।

गजाः तृणं .... गच्छन्ति।

बालकाः विद्यालयं .... इच्छन्ति।

छात्राः पुस्तकं .... इच्छति।

3. ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜੋੜ ਕੇ ਇਕ ਪਦ ਬਣਾਓ। ਜਿਵੇਂ—

इनको जोड़ कर लिखिए।

जैसे—स्था + तुमुन् = **स्थातुम्**।

पा + तुमुन् = ...। गम् + तुमुन् = ...।

वद् + तुमुन् = ...। पठ् + तुमुन् = ...।

4. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਉਚਿਤ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕ ਪੂਰਤੀ ਕਰੋ।
ਜਿਵੇਂ—

कोष्ठक से उचित पद द्वारा वाक्य-पूर्ति कीजिए।

जैसे—

महेशः विद्यालयं .... इच्छति (खादितुं/गन्तुम्)।

महेशः विद्यालयं गन्तुम् इच्छति।

लता पुस्तकं .... इच्छति (पातुं / पठितुम्)।
जनाः चलचित्रं .... गच्छन्ति (द्रष्टुं / पठितुम्)।
गायिकाः गीतं .... तिष्ठन्ति (गातुं / पातुम्)।
सिंहः मृगं .... धावति (हन्तुं / रक्षितुम्)।
ताः जलं .... इच्छन्ति (पातुं / खादितुम्)।

5. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए।

चौरः धनं हर्तुं गच्छति। त्वं क्रीडितुं कुत्र गच्छसि ?
ते भाषणं श्रोतुं तिष्ठन्ति। सैनिकाः युद्धं कर्तुं गच्छन्ति।
अहं पत्रं लिखितुम् इच्छामि। ते दुग्धं पातुम् इच्छन्ति।

6. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
संस्कृत-भाषा में अनुवाद कीजिए।

ਊਸ਼ਾ ਪੜ੍ਹਨ ਲਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। उषा पढ़ने के लिए जाती है।
ਗੋਪਾਲ ਲਿਖਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੈ। गोपाल लिखना चाहता है।
ਉਹ ਸੌਣ ਲਈ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। वे लोग सोने जाते हैं।
ਕੁੜੀਆਂ ਫੁੱਲ ਲੈਣ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ। लड़कियाँ फूल लेने आती हैं।
ਅਸੀ ਖੇਲਣ ਜਾਂਦੇ ਹਾਂ। हम लोग खेलने जाते हैं।
ਤੁਸੀਂ ਕੀ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੋ। तुम लोग क्या करना चाहते हो।

उपकर्तुं प्रियं वक्तुं, कर्तुं स्नेहमकृत्रिमम्।
सज्जनानां स्वभावोऽयं, केनेन्दुः शिशिरीकृतः॥

त्रयोदशः पाठः

ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਉਪਸਰਗ ਸਹਿਤ 'ਲਿਅਪ' ਪ੍ਰਤਿਆ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ।

प्रसिद्ध प्रचलित उपसर्ग-सहित 'ल्यप्' प्रत्यय का प्रयोग ।

कमलेशः भोजनं विधाय पाठशालां गच्छति ।

ते पाठशालाम् आगत्य पठन्ति ।

रमेशः दुग्धम् आनीय पिवति ।

शिष्याः आचार्यं प्रणम्य उपविशन्ति ।

सुदेशः कविताः आलिख्य गायति ।

खगाः प्रातः नीडान् विहाय गच्छन्ति ।

सा घटम् आदाय गच्छति ।

ताः प्रातर् उत्थाय नदीं स्नातुं गच्छन्ति ।

सुशीला पाठम् अवगम्य लिखति ।

वालिकाः पाठं संस्मृत्य लिखन्ति ।

वन्दना परीक्षाम् उत्तीर्य प्रसन्ना भवति ।

छात्राः आचार्यपरीक्षाम् उत्तीर्य शिक्षिकाः भवन्ति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

विधाय (वि √धा + ल्यप्) करके (ਕਰਕੇ)

आगत्य (आ √गम् + ल्यप्) आकर (ਆਕੇ)

प्रणम्य (प्र √नम् + ल्यप्) प्रणाम करके (ਨਮਸਕਾਰ ਕਰਕੇ)

आलिख्य	(आ√लिख् + ल्यप्)	लिख कर	(ਲਿਖਕੇ)
आनीय	(आ√ नी + ल्यप्)	लाकर	(ਲਾ ਕੇ)
आदाय	(आ√ दा + ल्यप्)	लेकर	(ਲੈ ਕੇ)
उत्थाय	(उत्√ स्था + ल्यप्)	उठकर	(ਉਠ ਕੇ)
विहाय	(वि √ हा + ल्यप्)	छोड़कर	(ਛਡ ਕੇ)
अवगम्य	(अव √ गम् + ल्यप्)	समझकर	(ਸਮਝ ਕੇ)
उत्तीर्य	(उद् √ तृ + ल्यप्)	उत्तीर्ण करके	(ਪਾਸ ਹੋ ਕੇ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देश:)—

1. ਧਾਤੂ ਤੋਂ ਪਹਿਲੇ ਜੇ ਕੋਈ ਉਪਸਰਗ ਆਵੇ ਤਾ ਪੂਰਵਕਾਲਿਕ ਕ੍ਰਿਆ ਦਾ ਗਿਆਨ ਕਰਣ ਲਈ 'ਕਤਵਾ (क्त्वा) ਦੀ ਥਾਂ ਤੇ 'ਲਿਅਪ' (ल्यप्) ਪ੍ਰਤਿਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। 'ਲਿਅਪ' ਦੀ 'य' ਸ਼ੇਸ਼ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ— अव+गम्+(क्त्वा) ल्यप् =अवगम्य (समझ कर)। ਇੱਥੇ 'गम्' ਧਾਤੂ ਦੇ ਪਹਿਲੇ 'अव्' ਉਪਸਰਗ ਲਗਿਆ ਹੈ। ਇਸਲਈ 'ਕਤਵਾ' (क्त्वा) ਦੀ ਥਾਂ ਤੇ ਲਿਅਪ (ल्यप्) ਹੋ ਗਿਆ ਹੋਰ ਲਿਅਪ ਦਾ 'ਜ' ਸ਼ੇਸ਼ ਰਹ ਗਿਆ। 'अवगम्य' ਦਾ 'ਜ' 'ਲਿਅਪ' ਦਾ ਬਚਿਆ ਹੋਇਆ ਹਿੱਸਾ ਹੈ।

   धातु से पहले यदि कोई उपसर्ग आए, तो पूर्वकालिक क्रिया को बोध कराने के लिए 'क्त्वा' के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय लगता है। 'ल्यप्' का 'य' शेष रह जाता है। जैसे—अव + गम् + क्त्वा (ल्यप्) = अवगम्य (समझ कर)। यहाँ 'गम्' धातु के पूर्व 'अव' उपसर्ग लगा है। अतः प्रत्यय 'क्त्वा' के स्थान पर 'ल्यप्' हो गया और 'ल्यप्' का 'य' शेष रह गया। 'अवगम्य' का 'य' 'ल्यप्' का अवशिष्ट भाग है।

2. ਧਾਤੂ ਜਾ ਧਾਤੂ ਤੇ ਬਣੇ ਸੰਗਿਆ ਪਦ ਜਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਉਪਸਰਗ ਜੋੜੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—(ਧਾਤੂ ਤੋਂ) "वि√धा+'ल्यप्'=विधाय"। (ਸੰਗਿਆ ਪਦ ਤੋਂ) अति+निद्रा=अतिनिद्रा। (ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਪਦ ਤੋਂ) सु+कृतम् = सुकृतम्, विकृतम् आदि।

धातु या धातु से बने संज्ञा-पद या विशेषण-पद के पूर्व उपसर्ग जोड़े जाते हैं। जैसे—(धातु से) वि √ धा + ल्यप् = विधाय। (धातु से बने संज्ञा-पद से) अति + निद्रा = अतिनिद्रा। (विशेषण-पद से) सु + कृतम् = सुकृतम्, विकृतम् आदि

3. ਉਪਸਰਗ ਲਗਾਉਣ ਨਾਲ ਧਾਤੂ ਦਾ ਅਰਥ ਕਰੀਬ-ਕਰੀਬ ਬਦਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—अव √ गम् (ਜਾਣਾ) + ल्यप् = अवगम्य (ਜਾਣਕਰ)। ਇੱਥੇ 'गम्' ਧਾਤੂ ਦਾ ਅਰਥ 'ਜਾਣਾ' ਹੈ। ਪਰ 'ਲਿਯਪ' ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗ ਕੇ ਇਸਦਾ ਅਰਥ 'ਸਮਝਣਾ' ਹੋ ਗਿਆ।

उपसर्ग लगने पर धातु का अर्थ प्रायः बदल जाता है। जैसे—अव √ गम् (जाना) + ल्यप् = अवगम्य (समझ कर)। यहाँ 'गम्' धातु का अर्थ 'जाना' है, पर 'ल्यप्' प्रत्यय लगने पर इसका अर्थ बदलकर 'समझना' हो गया।

ਵਿਆਕਰਣ- (व्याकरणम्)—

ਕੁਝ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਉਪਸਰਗਾਂ ਦੇ ਨਾਲ 'ਲਿਅਪ' ਪ੍ਰਤਿਆ ਦੇ ਉਦਾਹਰਣ—
कुछ प्रचलित उपसर्गों के साथ 'ल्यप्' प्रत्यय के उदाहरण—

परा, जि + ल्यप्	(य)	पराजित्य	= हार कर	(ਹਾਰ ਕੇ)
अप, हा + ल्यप्	(य)	अपहाय	= छोड़ कर	(ਛੱਡ ਕੇ)
सम्, पूज् + ल्यप्	(य)	सम्पूज्य	= पूजा करके	(ਪੂਜਾ ਕਰਕੇ)
अनु, कृ + ल्यप्	(य)	अनुकृत्य	= अनुकरण करके	(ਨਕਲ ਕਰਕੇ)
नि, पा + ल्यप्	(य)	निपीय	= पीकर	(ਪੀ ਕਰ)
अति, क्रम् + ल्यप्	(य)	अतिक्रम्य	= अतिक्रमण करके	(ਲੰਘ ਕਰਕੇ)
उप, गम् + ल्यप्	(य)	उपगम्य	= समीप जाकर	(ਪਾਸ ਜਾਕੇ)
अधि, इ + ल्यप्	(य)	अधीत्य	= पढ़ कर	(ਪੜ੍ਹਕੇ)

ਅਭਿਯਾਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾ ਦਾ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰ। ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

जैसे—परित्यज्य ।

हंसः जलं **परित्यज्य** दुग्धं पिबति ।

विधाय, आदाय, आगत्य, विहाय,
निपीय, पराजित्य, उपगम्य, अतिक्रम्य ।

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹਏ ਉਚਿਤ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕ ਪੂਰਤੀ ਕਰੋ ।
निम्नलिखित उचित पदों से वाक्य-पूर्ति कीजिए ।

जैसे—रमेशः पत्रम् .... पठति ।

रमेशः पत्रम् **आलिख्य** पठति ।

आगत्य, विजित्य, सम्पूज्य, आदाय,
संस्मृत्य, विधाय, विलिख्य ।

भक्ताः ईश्वरं .... उपविशन्ति ।
सः पुस्तकम् .... गच्छति ।
लता विद्यालयम् .... पठति ।
सैनिकाः युद्धं .... आगच्छन्ति ।
छात्राः पाठम् .... लिखन्ति ।
अतिथिः भोजनं .... गच्छन्ति ।
मित्रं पत्रं .... प्रेषयति ।

3. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਉਪਸਰਗ ਸਹਿਤ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਅੱਗੇ 'ਲਿਅਪ' ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗਾ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਰੂਪ ਬਣਾਓ । ਜਿਵੇਂ—
नीचे दिए गए उपसर्ग-सहित धातुओं के आगे 'ल्यप्' प्रत्यय लगाकर उनका रूप बनाइए ।

जैसे—वि √लिख् + ल्यप् = **विलिख्य** ।

आ√ नी + ल्यप् = ...।

वि √हा + ल्यप् = ... ।
वि √रम् + ल्यप् = ... ।
नि √पत् + ल्यप् = ... ।
सम् √अच् + ल्यप् = ... ।
वि √लिख् + ल्यप् = ... ।
पुरस् √कृ + ल्यप् = ... ।
नमस् √कृ + ल्यप् = ... ।

4. ਹੇਠਾਂ ਲਿਅਪ ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗਾ ਕੇ ਕੁਝ ਪਦ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਹਨ। ਇਨਾਂ ਦਾ ਉਪਸਰਗ, ਧਾਤੂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਤਿਆ ਅਲੈਦਾਂ ਕਰਕੇ ਲਿਖੋ। ਜਿਵੇਂ—
नीचे 'ल्यप्' प्रत्यय लगाकर कुछ पद दिए गए हैं। इनके उपसर्ग, धातु तथा प्रत्यय पृथक् करके लिखिए।
जैसे—**प्रणम्य** = प्र, √नम् + ल्यप्।
विधाय, विजित्य, विहाय, विरम्य, आनीय।

5. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਉੱਤਰ ਦਿਓ।
अपने पाठ से संस्कृत में उत्तर दीजिए।

कमलेशः किं कृत्वा विद्यालयं गच्छति ?
रमेशः किम् आनीय पिबति ?
शिष्याः कं प्रणम्य उपविशन्ति ?
खगाः प्रातः किं विहाय गच्छन्ति ?
का घटम् आदाय गच्छति ?

6. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए।

पीयूषः गृहम् आगत्य खादति।
ते अधीत्य आगच्छन्ति ।
शिष्यः आचार्यम् उपगम्य पठति ।

छात्राः शिक्षकं प्रणम्य उपविशन्ति ।
लता पत्रम् आलिख्य पठति ।
उषा जलम् आनीय वृक्षं सिञ्चति ।
ते शब्दं निशम्य आगच्छन्ति ।

9. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਮੈਂ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਘਰ ਔਂਦਾ ਹਾਂ ।	मैं पढकर घर आता हूँ ।
ਉਹ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰਕੇ ਆਂਦੇ ਹਨ ।	वे दर्शन करके आते हैं ।
ਕਵਿਤਾ ਲਿਖ ਕੇ ਗਾਂਦੀ ਹੈ ।	कविता लिखकर गाती है ।
ਮੈਂ ਤੁਹਾ ਨੂੰ ਛਡ ਕੇ ਆਂਦਾ ਹਾਂ ।	मैं तुमको छोड़कर आता हूँ ।
ਲਤਾ ਅਪਣਾ ਕੱਮ ਕਰ ਕੇ ਖੇਡਦੀ ਹੈ ।	लता अपना काम करके खेलती है ।

प्राप्य चलानधिकारान्, शत्रुषु मित्रेषु चाथविद्वत्सु ।
नापकृतं नोपकृतं, न सत्कृतं किं कृतं तेन ॥

चतुर्दशः पाठः

ਲ੍ਰਿਟ ਲਕਾਰ (ਭਵਿਸ਼ਤ ਕਾਲ) 'ਇਦਮ' ਸ਼ਬਦ (ਸਰਵਨਾਮ ਤਿੱਨੋਂ ਲਿੰਗ)।
लृट् लकार (भविष्यत् काल) 'इदं' शब्द सर्व० तीनों लिङ्ग)।

अयं आम्रं खादिष्यति ।	इमे गृहं गमिष्यन्ति ।
इयं गीतं गास्यति ।	इमाः नृत्यं करिष्यन्ति ।
अहम् इदं फलं खादिष्यामि ।	वयम् इमानि पुस्तकानि पठिष्यामः ।
सः इमं ग्रन्थं पठिष्यति ।	ते इमान् ग्रन्थान् पठिष्यन्ति ।
सा इमां बालिकां पश्यति ।	ताः इमाः रोटिकाः खादिष्यन्ति ।
त्वम् इदं पत्रं लिखिष्यसि ।	यूयम् इमानि पुष्पाणि नेष्यथ ।
इयं बालिका सुशीला अस्ति ।	इमाः बालिकाः कुशलाः भविष्यन्ति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

इदम् — यह   ग्रन्थ — पुस्तक ।

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਭਵਿਸ਼ਤ ਕਾਲ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਨੂੰ ਜਾਨਣ ਲਈ ਲ੍ਰਿਟ-ਲਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—"अयं ग्रामं गमिष्यति" (ਇਹ ਪਿੰਡ ਜਾਵੇਗਾ)। ਲ੍ਰਿਟ ਲਕਾਰ ਦਾ ਰੂਪ ਬਨਾਣ ਲਈ ਧਾਤੂ ਨਾਲ 'इष्य' ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—भू (भव्) + इष्य = भविष्यति, कृ (कर्) + इष्य = करिष्यति, पठ् + इष्य = पठिष्यति ਆਦਿ। ਜਿਸ ਧਾਤੂ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿਚ 'आ' ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਦੇ ਨਾਲ 'स्य' ਜੁੜਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—पा = पास्यति, स्था—स्थास्यति, दा—दास्यति ।

भविष्यत्काल की क्रिया का बोध कराने के लिए लृट् लकार का प्रयोग होता है। जैसे—'अयं ग्रामं गमिष्यति' (यह गाँव जायेगा)। लृट् लकार का रूप बनाने के लिए धातु में 'इष्य' जोड़ा जाता है। जैसे—भू (भव्)+इष्य=भविष्यति, कृ (कर्)+इष्य=करिष्यति, पठ्+इष्य=पठिष्यति इत्यादि। लेकिन जिस धातु के अन्त में 'आ' लगा हो, उस धातु में 'स्य' जोड़ा जाता है। जैसे, पा+स्य=पास्यति, दा+स्य=दास्यति, स्था+स्य=स्थास्यति इत्यादि।

2. 'इदम्' ਇਹ ਮੂਲ ਸ਼ਬਦ ਹੈ। ਇਸਦਾ ਪੁਲਿੰਗ ਰੂਪ 'अयम्' ਅਤੇ 'इमे' ਬਣਦਾ ਹੈ। ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਵਿਚ 'इयं, इमाः' ਅਤੇ ਨਪੁੰਸਕਲਿੰਗ ਵਿਚ 'इदम्, इमानि' ਰੂਪ ਬਣਦਾ ਹੈ।
'इदम्' यह मूल शब्द है। पुंल्लिङ्ग में इसका रूप 'अयम्, इमे' स्त्रीलिङ्ग में 'इयम्, इमाः' तथा नपुंसक लिङ्ग में 'इदम्, इमानि' बनता है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

1. 'ਇਦਮ' ਸ਼ਬਦ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਦੇ ਤਿੰਨੋਂ ਲਿੰਗ ਵਿਚ ਰੂਪ।
'इदम्' शब्द का प्रथमा विभक्ति के तीनों लिङ्गो में रूप।

	ए० व०		ब० व०	
पुं०	अयम्	यह (ਇਹ)	इमे	ये (ਇਹ ਸਾਰੇ)
स्त्री०	इयम्	यह (ਇਹ)	इमाः	ये (ਇਹ ਸਾਰਿਆਂ)
नपुं०	इदम्	यह (ਇਹ)	इमानि	ये (ਇਹ ਸਾਰੇ)

2. 'ਇਦਮ' ਦੁਤੀਆ ਵਿਤਕਤੀ ਦੇ ਤਿੰਨੋਂ ਲਿੰਗ ਵਿਚ ਰੂਪ।
'इदम्' द्वितीया विभक्ति के तीनों लिङ्गों में रूप।

	ए० व०	ब० व०
पुं०	इमम् —इसको / इसे (ਇਸ ਨੂੰ / ਇ ਨੂੰ)	इमान् इनको/इन्हें (ਇਨਾਂ ਨੂੰ / ਇ ਨੂੰ)

स्त्री० इमाम्—इसको / इसे (ਇਸ ਨੂੰ / ਇਨੂੰ) इमाः — इनको / इन्हें (ਇਨਾਂ ਨੂੰ)

नपुं० इदम्—इसको / इसे (ਇ ਨੂੰ) इमानि— इनको / इन्हें (ਇਨਾਂ ਨੂੰ)

ਅਭਿਯਾਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਤੋਂ ਲ੍ਰਿਟ ਲਕਾਰ ਦੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦ ਚੁਣੋ।
निम्नलिखित क्रिया-पदों में से लृट् लकार (भविष्यत् काल) के क्रिया-पद चुनिए।

हसति, गमिष्यति, धावन्ति, पठिष्यति, अपठत्,
चलिष्यन्ति, भविष्यति, पास्यति, करोति पठित्वा।

2. ਸਰਵਨਾਮ ਪਦਾਂ ਵਿਚੋਂ 'ਇਦਮ' (इदम्) ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਰੂਪ ਪਛਾਣੋ।
निम्नलिखित सर्वनाम-पदों में से 'इदम्' शब्द के रूप पहचानिए।

यः, इमे, ते, अयं, ताः,
इमानि, कानि, इयं, किं, वयम्।

3. ਲ੍ਰਿਟ ਲਕਾਰ ਦੇ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ।
लृट् लकार (भविष्यत्काल) के क्रिया-पदों से रिक्त-स्थान की पूर्ति करें।

जैसे—अयं श्वः विद्यालयं ....।
अयं श्वः विद्यालयं **गमिष्यति**।

वयं पुस्तकं ....।
लता इदं फलं ....।
सुदेशः सत्यं ....।
हमीदा नृत्यं ....।
श्वः विद्यालये उत्सवः ....।

4. ਉਚਿਤ ਕਰਤ੍ਰੀਪਦ ਦੇ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ ।. ਜਿਵੇਂ—
उपयुक्त कर्तृ-पद से रिक्त-स्थान भरिए ।

जैसे—

.... पत्राणि लिखिष्यति ।
अयं पत्राणि लिखिष्यति ।

.... पत्राणि प्रेषयिष्यति ।
.... तत्र चलिष्यति ।
.... इमानि वस्त्राणि नेष्यामि ।
.... गृहं गमिष्यन्ति ।
.... फलानि खादिष्यथ ।

5. ਸ਼ੁੱਦ ਕ੍ਰਿਆਪਦ ਚੁਣੋ । ਜਿਵੇਂ—
शुद्ध क्रिया-पद चुनिए ।

जैसे—

अयं पुस्तकं .... (पठिष्यति / पठिष्यन्ति) ।
अयं पुस्तकं **पठिष्यति ।**

इमे ग्रामं .... (गमिष्यन्ति / गमिष्यति) ।
सा तत्र .... (चलिष्यति / चलिष्यन्ति) ।
इमानि फलानि.... .... (पतिष्यन्ति / पतिष्यति) ।
अद्य पत्रम् .... (आगमिष्यति/आगमिष्यन्ति) ।

6. ਉਚਿਤ ਕਰਤ੍ਰੀਪਦ ਨਾਲ ਦੇ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
उचित कर्तृ-पद से रिक्त-स्थान की पूर्ति करें ।

जैसे—

(सः / ते) .... तत्र गमिष्यन्ति ।
ते तत्र गमिष्यन्ति ।

(अयम्/इमे) .... अत्र अस्ति ।

(अहम्/वयम्) .... न गमिष्यामः ।
(त्वम्/यूयम्) .... कदा गमिष्यसि ।
(बालकाः/सीता) ....गानं करिष्यन्ति ।

7. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਇਹ ਮੁੰਡੇ ਪਾਠਸ਼ਾਲਾ ਜਾਣਗੇ ।	ये लड़के पाठशाला जायेंगे ।
ਇਹ ਕੁੜੀਆਂ ਕੱਲ ਇਥੇ ਔਣਗੀਆਂ ।	ये लड़कियाँ कल यहाँ आयेंगी ।
ਮਾਸਟਰ ਪਾਠ ਪੜ੍ਹਾਉਣਗੇ ।	शिक्षक पाठ पढ़ाएंगे ।
ਤੁਸੀਂ ਕਦੋਂ ਆਵੋਗੇ ।	तुम कब आवोगे ।
ਮੈਂ ਚਿੱਠੀ ਲਿਖਾਂਗਾ ।	मैं पत्र लिखूँगा ।

8. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए ।

अयं भिक्षां दास्यति ।	इयं हसिष्यति ।
अमरजीतः दुग्धं पास्यति ।	स्निग्धा श्वः उपवनं गमिष्यति ।
शूराः अमराः भविष्यन्ति ।	श्वः तत्र क्रीडा भविष्यति ।

इदमेव हि पाण्डित्यं, इयमेव विदग्धता ।
अयमेव परो धर्मो, यदायात् नाधिको व्ययः ।।

पञ्चदशः पाठः

ਲਙ ਲਕਾਰ (ਭੂਤਕਾਲ)।

लङ् लकार (भूतकाल)।

सः सर्वाः कलाः अशिक्षत।	देवाः स्तुतिम् अकुर्वन्।
शिक्षकः छात्रम् अवदत्।	बालकाः फलानि अखादन्।
रामः वनम् अगच्छत्।	विडालः दुग्धम् अपिवत्।
त्वं पुस्तकम् अपठः।	वयं गृहम् अगच्छाम।
उषा जलम् आनयत्।	नर्तकी नृत्यम् अकरोत्।
गायिकाः गानम् अकुर्वन्।	यूयम् पत्राणि अलिखत।
अहं चित्रम् अपश्यम्।	ते ग्रामम् अगच्छन्।
ताः अधावन्।	भिक्षुकः भिक्षाम् अयाचत्।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

पत्र	= चिट्ठी	(ਚਿੱਠੀ)	आ, नी	= लाना	(ਲਿਆਉਣਾ)
धाव्	= दौड़ना	(ਦੌੜਨਾ)	वद्	= बोलना	(ਕਹਿਣਾ)
कृ	= करना	(ਕਰਣਾ)	याच्	= मांगना	(ਮੰਗਣਾ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਲਙ ਲਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਭੂਤਕਾਲ ਵਿਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਬੀਤੇ ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਭੂਤਕਾਲ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।

लङ् लकार के रूपों का प्रयोग भूतकाल में होता है। बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

एक वचन

प्र० पु० अगच्छत् — (वह) गया (ਉਹ ਗਇਆ)

म० पु० अगच्छः — (तू) गया (ਤੂੰ ਗਇਆ)

उ० पु० अगच्छम् — (मैं) गया (ਮੈਂ ਗਇਆ)

बहु वचन

प्र० पु० अगच्छन् — (वे) गए (ਉਹ ਗਏ)

म० पु० अगच्छत — (तुम सब) गए (ਤੁਸੀਂ ਗਏ)

उ० पु० अगच्छाम — (हम सब) गए (ਅਸੀਂ ਗਏ)

ਦੂਜੀਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵੀ ਲਙ ਲਕਾਰ ਵਿਚ ਇਸੀ ਤਰਹਾਂ ਹੋਣਗੇ।

अन्य धातुओं के रूप भी लङ् लकार में इसी प्रकार होते हैं।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਉੱਤਰ ਦਿਓ।
   अपने पाठ से संस्कृत में उत्तर दीजिए।

   देवाः किम् अकुर्वन् ?
   बालकाः किम् अखादन् ?
   कः भिक्षाम् अयाचत् ?
   बिडालः किम् अपिवत् ?
   उषा किम् आनयत् ?

2. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਉਚਿਤ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਵਾਕ ਪੂਰਤਿ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—

कोष्ठक में से उचित पद छाँट कर वाक्य-पूर्ति करें।

जैसे—बिडालः दुग्धम् .... (अपिवत् / अपश्यत्) ।

विडालः दुग्धम् **अपिबत्** ।

सः पत्रम् अलिखत् .... (मुखेन / कलमेन) ।

बालकाः फलानि .... (अखादन्/अपिवन्) ।

हरिः पुस्तकं .... (अपठत् / अभवत्) ।

देवाः स्तुतिम् .... (अयाचन्/अकुर्वन्) ।

छात्राः कन्दुकेन .... (अक्रीडन् अधावन्)।

3. ਹੇਠਾ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨਾਲ ਉਚਿਤ ਸਰਵਨਾਮ ਲਿਖੋ । ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित क्रिया-पदों के साथ उचित सर्वनाम लिखिए ।

जैसे—अखादन् । ते अखादन् ।

अपठः, अपठम्, अपिबत्, अलिखत्, अगच्छाम ।

4. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਕ੍ਰਿਆਪਦਾਂ ਨਾਲ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅੱਡ-ਅੱਡ ਵਾਕ ਬਣਾਓ । ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित क्रिया-पदों के साथ संस्कृत में अलग-अलग वाक्य बनाइए ।

जैसे—अभवत् । सः अध्यापकः **अभवत्** ।

अक्रीडत्, अक्रीडन् अपिवन्, अधावम्,
अपश्यत, अवसः अपतत्, अगच्छम् ।

5. ਹੇਠਾਂ ਦਿਤੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਲਙ ਲਕਾਰ ਮੱਧਮ ਪੁਰੁਸ਼ ਅਤੇ ਉੱਤਮ ਪੁਰੁਸ਼ ਵਿਚ ਲਿਖੋ ।

नीचे लिखी धातुओं के रूप लङ् लकार के मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष में लिखिए ।

पठ्, क्रीड्, लिख्, गम् (गच्छ्), दृश् (पश्य) ।

6. ਉਚਿਤ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕਪੂਰਤੀ ਕਰੋ ।

उचित क्रिया-पदों से वाक्य-पूर्ति कीजिए ।

हरिश्चन्द्रः सत्यवादी .... ।

सीता पतिव्रता .... ।

भिक्षुकः भिक्षाम् .... ।

बुभुक्षिताः भोजनम् .... ।

पिपासिताः जलम् .... ।

वयं कन्दुकेन .... ।

बालगंगाधरतिलकः महान् देशभक्तः .... ।

7. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए ।

वयं भारते निवसामः । यूयं खेलम् अपश्यत ।

त्वं पत्रम् अलिखः । अहं तत्र न अगच्छम् ।

सेवकः ग्रामम् अगच्छत् । इमे कृषकाः कृषिकार्यम् अकुर्वन् ।

सायंकाले अन्धकारः अभवत् । स अद्य न अपठत् ।

ते बदरीनाथस्य यात्रां कृत्वा आगच्छन् ।

संस्कृतविद्यापीठे संस्कृतदिवससमारोहः अभवत् ।

8. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਮੈਂਨੂੰ ਰਾਮਾਯਣ ਪੜ੍ਹੀ।	मैंने रामायण पढ़ी।
ਫੂਲ ਖਿਲੇ ।	फूल खिले ।
ਤੂੰ ਹਿਮਾਲਆ ਦੀ ਜਾਤ੍ਰਾ ਕੀਤੀ।	तू ने हिमालय की यात्रा की।
ਵਿਸ਼ਵਾਸ਼ਿਤਰ ਨੇ ਰਾਮ ਨੂੰ ਮੰਗਿਆ।	विश्वामित्र ने राम को माँगा।
ਸ਼ਾਮ ਗੇਂਦ ਨਾਲ ਖੇਡਿਆ।	श्याम गेंद से खेला।
ਪੁਤੱਰ ਨੇ ਚਿੱਠੀ ਲਿਖੀ।	पुत्र ने पत्र लिखा।

अपठत् योऽखिला विद्याः, कलाः सर्वा अशिक्षत।
अजानात् सकलं वेद्यं, स वै योग्यतमो नरः॥

षोडशः पाठः

ਤ੍ਰਿਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ, ਦੀਰਘ ਸੰਧੀ।
तृतीया विभक्ति, दीर्घसन्धि।

अश्वः वेगेन धावति।	कवीन्द्रः लयेन गायति।
हरीशः हस्तेन फलं ददाति।	छात्राः कलमैः लिखन्ति।
रामः नौकया गङ्गापारं गच्छति।	पथिकाः नौकाभिः नदीम् अतरन्।
ज्ञानेन अज्ञानं नश्यति।	पुण्यैः पापानि नश्यन्ति।
राजपुरुषः दण्डेन चौरं ताडयति।	श्वः परीक्षा भविष्यति।
सा मया सह पत्रालयं गमिष्यति।	ताः चिकित्सालयं गमिष्यन्ति।
अद्य वधूत्सवः भविष्यति।	अहं त्वया सह तत्र गमिष्यामि।
प्रातः भानूदयः अभवत्।	सायं विधूदयः भविष्यति।
कालिदासः कवीन्द्रः आसीत्।	सतीशः अद्य आगमिष्यति।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

वेग	= तेज	(ਜਲਦੀ)	हस्त	= हाथ	(ਹੱਥ)
तृ	= तैरना	(ਤੈਰਨਾ)	ताड्	= मारना	(ਮਾਰਨਾ)
नश्	= नष्ट होना	(ਨਸ਼ਟ ਹੋਣਾ)	पत्रालय	= डाकघर	(ਡਾਕਘਰ)

वधूत्सव = वहू के आने पर होने वाला उत्सव (ਬਹੂਟੀ ਦੇ ਆਣ ਤੋਂ ਹੋਣ ਵਾਲਾ ਜਸ਼ਨ)

चिकित्सालय =अस्पताल (ਹਸਪਤਾਲ) हन् =वध करना (ਮਾਰਨਾ)
भानूदय =सूर्योदय (ਸੂਰਜ ਦਾ ਉਦਆ) राजपुरुष =सिपाही (ਸਿਪਾਹੀ)
विधूदय =चन्द्रोदय (ਚੰਦ ਦਾ ਉਦਆ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਉਚਾਰਣ ਵੇਲੇ ਜਦੋ ਦੋ ਪਦ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਦੇ ਬਹੁਤ ਕਰੀਬ ਆ ਜਾਂਦੇ ਹਨ, ਤਦੋਂ ਪਹਿਲੇ ਪਦ ਦੇ ਅਖੀਰ ਵਾਲੇ ਅਤੇ ਦੂਜੇ ਪਦ ਦੇ ਸ਼ੁਰੂ ਵਾਲੇ ਅੱਖਰ ਆਪਸ ਵਿਚ ਮਿਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਅੱਖਰ ਦੇ ਆਪਸ ਮਿਲਣ ਨਾਲ ਇਕ ਤੀਜੀ ਧੁਨਿ ਸੁਣਾਈ ਪੌਂਦੀ ਹੈ। ਅੱਖਰਾ ਜਾ ਵਰਣਾਂ ਦਾ ਏਹ ਬਦਲਾਵ ਹੀ ਸੰਧੀ ਹੈ।

   ਜਿਵੇਂ—भानु + उदयः = भानूदयः। ਇੱਥੇ ਪਹਿਲੇ ਪਦ 'भानु' ਦਾ ਆਖਿਰੀ ਅੱਖਰ 'ਉ' ਤੇ ਦੂਜੇ ਪਦ 'उदय' ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਅੱਖਰ 'ਉ' ਆਪਸ ਵਿਚ ਮਿਲ ਕੇ 'ਊ' ਹੋ ਗਏ ਹਨ।

   उच्चारण काल में जव दो पद एक-दूसरे के अत्यन्त समीप आ जाते हैं, तव पहले पद के अंतिम तथा दूसरे पद के प्रारम्भिक (आदि) अक्षर एक-दूसरे से मिल जाते हैं। इन अक्षरों के परस्पर मिलने से एक तोसरी ही ध्वनि सुनाई पड़ती है। अक्षरों या वर्णों की यह विकारजन्य मिलावट ही सन्धि है।

   जैसे—भानु + उदयः = भानूदयः। यहाँ प्रथम पद भानु का अंतिम अक्षर 'उ' तथा 'उदयः' का प्रारम्भिक अक्षर 'उ' परस्पर मिलकर 'ऊ' हो गये हैं।

2. ਦੋ ਸਵਰਣ ਸਵਰ (ਸਮਾਨ ਸਵਰ) ਮਿਲ ਕੇ ਦੀਰਘ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਯਦਿ 'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, तथा ऋ, ॠ, ਦੇ ਬਾਦ ਹ੍ਰਸਵ ਜਾ ਦੀਰਘ ਵਰਣ ਆਵੇ ਤਾਂ ਦੋਵੇ ਮਿਲ ਕੇ ਦੀਰਘ 'आ, ई, ऊ तथा ॠ' ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—गिरि + ईशः = गिरीशः। ਇੱਥੇ ਪ੍ਰਥਮ ਪਦ ਦਾ ਆਖਿਰੀ ਸਵਰ 'ਇ' ਅਤੇ ਦੂਜੇ ਪਦ 'ईशः' ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਸਵਰ 'ਈ' ਮਿਲ ਕੇ ਦੀਰਘ 'ਈ' ਸਵਰ ਹੋ ਗਏ ਹਨ।

दो सवर्ण स्वर (समान स्वर) मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। यदि 'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, तथा ऋ, ॠ के वाद वे ही ह्रस्व या दीर्घ वर्ण आये तो दोनों मिलकर क्रमशः 'आ, ई, ऊ, तथा ॠ' हो जाते हैं। जैसे—गिरि + ईशः = गिरीशः। यहाँ प्रथम पद का अन्तिम स्वर 'इ' एवं द्वितीय पद 'ईशः' का आदि स्वर 'ई' मिलकर दीर्घ 'ई' हो गये हैं।

3. ਸੰਧਿ ਵਿਚ ਮਿਲੇ ਹੋਏ ਅੱਖਰ ਨੂੰ ਅਲੈਦਾ ਕਰਦੇ ਵੇਲੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਅਲੈਦਾ-ਕਰ ਦੇਣਾ ਹੀ ਸੰਧੀ-ਵਿੱਛੇਦ ਹੈ।

सन्धि में मिले हुए अक्षरों को पृथक् करते हुए पदों को पृथक्-पृथक् कर देना ही सन्धि-विच्छेद है।

4. ਅਪਣੇ ਕੱਮ ਨੂੰ ਸਿੱਧ ਕਰਣ ਲਈ ਕਰਤਾ ਜਿਸ ਦੀ ਸੱਬ ਤੋਂ ਜਿਆਦਾ ਸਹਾਇਤਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਉਸ ਨੂੰ 'ਕਰਣ ਕਾਰਕ' (करण कारक) ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਕਰਣ ਕਾਰਕ ਵਿਚ ਤ੍ਰਿਤੀਆ (ਤੀਜੀ) ਵਿਭਕਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—"रामः जलेन मुखं प्रक्षालयति" ਰਾਮ ਪਾਣੀ ਨਾਲ ਮੂੰਹ ਧੋਂਦਾ ਹੈ। ਮੂੰਹ ਧੋਣ ਵਿਚ ਸਭਤੋਂ ਜਿਆਦਾ ਸਹਾਇਤਾ ਪਾਣੀ ਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ 'ਪਾਣੀ' ਕਰਣ ਕਾਰਕ ਹੈ।

अपने कार्य की सिद्धी में कर्ता जिसकी सबसे अधिक सहायता लेता है उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—'रामः जलेन मुखं प्रक्षालयति'। राम पानी से मुँह धोता है। इस वाक्य में सवसे अधिक सहायता पानी की है। इसलिए यहां 'पानी' करण कारक है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਪੁੰਲਿੰਗ, ਇਸਤ੍ਰੀ ਲਿੰਗ ਤ੍ਰਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ (ਕਰਣ ਕਾਰਣ)।
पुंल्लिग, स्त्रीलिंग तृतीया विभक्ति (करण कारक)।

अकारान्त पुं० शब्द

	ए० व०		ब० व०	
गज	गजेन—हाथी से	(ਹਥੀ ਤੋਂ)	गजैः—हाथियों से	(ਹਥੀਆਂ ਤੋਂ)
जन	जनेन—आदमी से	(ਆਦਮੀ ਤੋਂ)	जनैः—आदमियों से	(ਆਦਮੀਆਂ ਤੋਂ)

आकारान्त स्त्री० शब्द

	ए० व०		ब० व०	
बालिका	बालिकया—बालिका से	(ਕੁੜੀ ਤੋਂ)	बालिकाभिः—बालिकाओं से	(ਕੁੜੀਆਂ ਤੋਂ)
लता	लतया —लता से	(ਲਤਾ ਤੋਂ)	लताभिः —लताओं से	(ਲਤਾਵਾਂ ਤੋਂ)

सर्वनाम

	ए० व०		ब० व०	
युष्मद्	त्वया — तुझसे	(ਤੇਰੇ ਤੋਂ)	युष्माभिः — तुमसे	(ਤੁਹਾ ਤੋਂ)
अस्मद्	मया — मुझसे	(ਮੇਰੇ ਤੋਂ)	अस्माभिः — हमसे	(ਸਾਡੇ ਤੋਂ)
तत्	पुं०—तेन — उससे	(ਉਸ ਤੋ)	तैः — उनसे	(ਉਨਾਂ ਤੋਂ)
”	स्त्री०—तया — उससे	(ਉਸ ਤੋਂ)	ताभिः — उनसे	(ਉਨਾਂ ਤੋਂ)

5. 'ਜਤ' ਅਤੇ 'ਕਿਮ' ਸਰਵਨਾਮ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵੀ ਤਿੱਨਾ ਲਿੰਗਾ ਵਿਚ 'ਤਤ੍' ਦੀ ਤਰਹਾਂ ਵੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

   'यत्' तथा 'किम्' सर्वनाम शब्दों के रूप भी तीनों लिंगों में 'तत्' शब्द के तरह ही होते हैं।

ਅਭਿਜਾਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਤ੍ਰਿਤੀਆ (ਤੀਜੀ) ਵਿਭਕਤੀ ਵਿਚ ਇਕਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਦਾ ਰੂਪ ਲਿਖੋ।

निम्नलिखित शब्दों की तृतीया विभक्ति के एकवचन और बहु-वचन में रूप लिखिए।

शिव, गज, आशा, यत् (पुं०), किं (नपुं०), तत् (स्त्री०)।

1. ਸੰਧੀ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—
संधि कीजिए।

जैसे—अन्न + अभावः = अन्नाभावः।

विद्या	+	आतुरः	=	।
यदा	+	अभवत्	=	।
श्री	+	ईशः	=	।
विष्णु	+	उदयः	=	।
पितृ	+	ऋणम्	=	।

3. ਸੰਧੀ ਤੋੜੋ। ਜਿਵੇਂ—
सन्धि विच्छेद कीजिये।

जैसे—हरीशः = हरि + ईशः।

गिरीन्द्रः, विद्यालयः, पत्रालयः, सतीशः,
स्वयम्भूदयः, छात्रावासः, पृथ्वीशः।

4. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए।

लता कलमेन लिखति।
उषा हस्तेन ददाति।
गोपालः पुस्तकालयं गच्छति।
सः वेगेन धावति।
अहं रथेन गच्छामि।

5. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਉੱਤਰ ਦਿਓ ।
अपने पाठ से उत्तर दीजिए ।

कः वेगेन धावति ?
रामः कया गङ्गाम् अतरत् ?
अज्ञानं केन नश्यति ?
कैः पापानि नश्यन्ति ?
कः कवीन्द्रः आसीत् ?
अद्य किं भविष्यति ?

6 ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾ ਨੂੰ ਤ੍ਰਿਤੀਆ (ਤੀਜੀ) ਵਿਭਕਤੀ ਵਾਲੇ ਬਣਾਕੇ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ । ਜਿਵੇਂ—

कोष्ठक में दिए गये शब्दों से तृतीया विभक्ति में रूप बना कर रिक्त स्थान भरिए ।

जैसे—भूपतिः (हस्त) दानं ददाति । भूपतिः हस्तेन दानं ददाति ।

सः (रथ) ....गच्छति ।
अश्वः (मुख).... ....घासं खादति ।
सुरेशः (यान).... .... गच्छति ।
अहं (सुखं).... ....तिष्ठामि ।
त्वं (कलम).... .... लिखसि ।

7. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ ।
कोष्ठक से उचित पद द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ।

वानरः .... फलं खादति (चरणेन / मुखेन) ।
.... सूर्योदयः भवति (सायं / प्रातः) ।
....चन्द्रोदयः भवति (प्रातः / सायम्) ।
लता .... पत्रं लिखति (कलमेन / हस्तेन) ।

8. ਸੰਸਕ੍ਰਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए ।

उषा कलम से लिखती है ।
शिशु गेंद से खेलता है ।
दान से धन आता है ।
धन से धर्म होता है ।
धर्म से सुख होता है ।

काव्यशास्त्रविनोदेन, कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां, निद्रया कलहेन वा ।।

सप्तदशः पाठः

'क्त' ਪ੍ਰਤਿਆ (ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ) ਤਿੱਨਾਂ ਲਿੰਗਾਂ ।

'क्त' प्रत्यय (प्रथमा विभक्ति) तीनों लिङ्ग ।

तेन उक्तम् ।	तैः भुक्तम् ।
तया हसितम् ।	ताभिः सुप्तम् ।
मया जलं पीतम् ।	अस्माभिः फलानि खादितानि ।
त्वया अहं दृष्टः ।	युष्माभिः देवाः पूजिताः ।
अनेन व्याघ्रेण मृगः हतः ।	एभिः मृगैः सिंहाः दृष्टाः ।
अनया छात्रया लेखः लिखितः ।	आभिः छात्राभिः परीक्षाः दत्ताः ।
सुभाषेण गीता पठिता ।	बालकैः रोटिकाः खादिताः ।
शकुन्तलया वनं त्यक्तम् ।	कन्याभिः पुष्पाणि आनीतानि ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

वच्	+	क्त — उक्त	=	कहा	(ਕਿਹਾ)
हस्	+	क्त — हसित	=	हँसा	(ਹਸਿਆ)
पा	+	क्त — पीत	=	पीया	(ਪੀਤਾ)
दृश्	+	क्त — दृष्ट	=	देखा	(ਵੇਖਿਆ)
हन्	+	क्त — हत	=	मारा	(ਮਾਰਿਆ)
दा	+	क्त — दत्त	=	दिया	(ਦਿੱਤਾ)
कृ	+	क्त — कृत	=	किया	(ਕਿੱਤਾ)
खाद्	+	क्त — खादित	=	खाया	(ਖਾਵਾ)

भुज्	+	क्त	—	भुक्तम्	=	खाया	(ਖਾਵਾ)
स्वप्	+	क्त	—	सुप्त	=	सोया	(ਸੁੱਤਾ)
खाद्	+	क्त	—	खादित	=	खाया	(ਖਾਵਾ)
पूज्	+	क्त	—	पूजित	=	पूजा की	(ਪੂਜਿਆ)
लिख्	+	क्त	—	लिखित	=	लिखा	(ਲਿਖਿਆ)
पठ्	+	क्त	—	पठित	=	पढ़ा	(ਪੜ੍ਹਿਆ)
त्यज्	+	क्त	—	त्यक्त	=	छोड़ा	(ਛਡਿਆ)
आ, नी	+	क्त	—	आनीत	=	लाया	(ਲਿਜਾਇਆ)

ਨਿਰਦੇਸ (निर्देशः)—

1. 'क्त' ਪ੍ਰਤਿਆ ਸਬ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਆਖੀਰ ਵਿਚ ਭੂਤਕਾਲ ਜਾਂ ਕੱਸ ਦੀ ਸਮਾਪਤੀ ਦਾ ਅਰਥ ਦਸਣ ਲਈ ਲਗਾਯਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। 'क्त' ਪ੍ਰਤਿਆ ਵਿਚੋਂ ਕੁੱਲ 'त' ਬਚਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। 'क्त' ਪ੍ਰਤਿਆ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦਾ ਦੇ ਰੂਪ ਤਿੱਨਾ ਲਿੰਗਾ ਵਿਚ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਿਅ (विशेष्य) ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ— पुं०—रामः गतः, नपुं०—दिनं गतम्, स्त्री०—रमा गता।

   क्त-प्रत्यय सभी धातुओं के अन्त में भूतकाल या कार्य-समाप्ति का अर्थ बताने के लिए लगाया जाता है। 'क्त' प्रत्यय में केवल 'त' शेष रहता है। क्त-प्रत्यय युक्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे—पुं०—रामः गतः, नपुं०—दिनं गतम्, स्त्री०—रमा गता।

2. ਜਿਸ ਸੰਗਿਆ ਜਾਂ ਸਰਵਨਾਮ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸਤਾ ਦੱਸੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਉਹ ਸੰਗਿਆ ਜਾਂ ਸਰਵਨਾਸ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਿਅ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।

   जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उस संज्ञा या सर्वनाम को 'विशेष्य' कहते हैं।

3. 'ਕ਼' ਪ੍ਰਤਿਆ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰਮ ਵਾਚ ਅਤੇ ਭਾਵਵਾਚ ਵਿਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
क्त-प्रत्यय का प्रयोग कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में होता है।

4. ਵਾਚ (वाच्य) ਤਿੰਨ ਹੁੰਦੇ ਹਨ—ਕਰਤ੍ਰੀ ਵਾਚ, ਕਰਮ ਵਾਚ ਅਤੇ ਭਾਵ ਵਾਚ।
वाच्य तीन होते हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

ਕਰਤ੍ਰੀਵਾਚ (कर्तृवाच्य)—

ਕਰਤ੍ਰੀਵਾਚ ਵਿਚ ਕ੍ਰਿਆ ਕਰਤਾ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਅਰਥਾਤ ਕਰਤਾ ਦਾ ਜੋ ਲਿੰਗ, ਜੋ ਪੁਰੁਸ਼ ਅਤੇ ਜੋ ਵਚਨ ਹੋਵੇਗਾ, ਉਹ ਹੀ ਕ੍ਰਿਆ ਦਾ ਵੀ ਲਿੰਗ, ਪੁਰੁਸ਼ ਅਤੇ ਵਚਨ ਹੋਵੇਗਾ। ਕਰਤ੍ਰੀ ਵਾਚ ਦੇ ਕਰਤਾ ਵਿਚ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ, ਕਰਮ ਵਿਚ ਦੁਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—
'अजमेर सिंहः फलं खादति'। ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਫਲ ਖਾਂਦਾ ਹੈ।

कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के अनुसार होती है, अर्थात् कर्ता के जो लिङ्ग, पुरुष और वचन होंगे, क्रिया के भी वही लिङ्ग, पुरुष और वचन होंगे। कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—अजमेर सिंहः फलं खादति (अजमेर सिंह फल खाता है।)

ਕਰਮਵਾਚ (कर्मवाच्य)

ਕਰਮਵਾਚ ਵਿਚ ਕ੍ਰਿਆ ਹਮੇਸ਼ਾ ਕਰਮ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਾਨੀਂ ਕਰਮ ਜਿਸ ਲਿੰਗ, ਜਿਸ ਵਚਨ ਅਤੇ ਜਿਸ ਪੁਰੁਸ਼ ਦਾ ਹੋਵੇਗਾ ਕ੍ਰਿਆ ਵੀ ਉਸ ਲਿੰਗ, ਉਸ ਵਚਨ ਅਤੇ ਉਸ ਪੁਰੁਸ਼ ਦੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਕਰਮਵਾਚ ਦੇ ਕਰਤਾ ਵਿਚ ਤੀਜੀ (ਤ੍ਰਿਤੀਆ) ਅਤੇ ਕਰਮ ਵਿਚ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'रेशमया भिक्षुकः दृष्टः' ਰੇਸ਼ਮਾ ਨੇ ਭਿਖਾਰੀ ਨੂੰ ਵੇਖਿਆ। 'रमया पुस्तकं पठितम्' ਰਮਾ ਨੇ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹੀ। 'तेन लता दृष्टा' ਉਸਨੇ ਲਤਾ ਦੇਖੀ।

कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है। अर्थात् कर्म जिस लिङ्ग, जिस वचन तथा जिस पुरुष का होगा, क्रिया भी उसी लिङ्ग, उसी वचन एवं उसी पुरुष की होगी। कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—रेशमया भिक्षुकः दृष्टः, (रेशमा ने भिक्षुक को देखा अथवा रेशमा के द्वारा भिक्षुक देखा गया)। रमया पुस्तकं पठितम् (रमा ने पुस्तक पढ़ी)। तेन लता दृष्टा (उसने लता देखी)।

ਭਾਵਵਾਚ (भाववाच्य)

ਜਿਸ ਵਾਕ ਵਿਚ ਕਰਮ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਸ ਨੂੰ ਭਾਵਵਾਚ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਭਾਵਵਾਚ ਮੇਂ ਕਰਤਾ ਵਿਚ ਤ੍ਰਿਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ ਲਗਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕ੍ਰਿਆ ਹਮੇਸ਼ਾ ਇਕਵਚਨ ਨਪੁੰਸਕ ਲਿੰਗ ਦੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'तेन सुप्तम्' ਉਹ ਸੁੱਤਾ 'मया हसितम्' ਮੈਂ ਹਸਿਆ।

जिस वाक्य में कर्म नहीं होता है, उसको भाववाच्य कहते हैं। भाववाच्य के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति लगती है तथा क्रिया सदा एक वचन नपुंसक लिङ्ग की होती है। जैसे—तेन सुप्तम् (वह सोया)। मया हसितम् (मैं हँसा)।

5. ਸਕਰਮਕ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਵਿਚ ਕਰਤ੍ਰੀਵਾਚ ਅਤੇ ਕਰਮਵਾਚ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਅਕਰਮਕ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਵਿਚ ਕਰਤ੍ਰੀਵਾਚ ਅਤੇ ਭਾਵਵਾਚ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

सकर्मक धातुओं के प्रयोग में कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य होते हैं। अकर्मक धातुओं के प्रयोग में कर्तृवाच्य तथा भाववाच्य होते हैं।

6. ਕੁਝ ਕ੍ਰਿਆ ਸਕਰਮਕ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕੁਝ ਅਕਰਮਕ। ਕਿਸੇ ਵਾਕ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਚ ਜਦੋਂ 'ਕੀ' ਲਗਾ ਕੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ ਹੋਰ ਜਦੋਂ ਉਸਕਾ

ਉੱਤਰ ਮਿਲ ਜਾਵੇ ਤਾ ਉਹ ਸਕਰਮਕ ਕ੍ਰਿਆ ਹੋਵੇਗਾ। ਜਿਵੇਂ—'ਉਹ ਰੋਟੀ ਖਾਉਂਦਾ ਹੈ'। ਪ੍ਰਸ਼ਨ—ਉਹ ਕੀ ਖਾਂਉਦਾ ਹੈ ? ਉੱਤਰ—ਰੋਟੀ। ਇਸ ਲਈ 'ਖਾਣਾ' ਕ੍ਰਿਆ ਸਕਰਮਕ ਹੈ।

ਕਿਸੇ-ਕਿਸੇ ਵਾਕ ਵਿਚ ਕਰਸ ਸੁਣਾਈ ਨਹੀਂ ਦੇਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—ਉਹ ਖਾਂਦਾ ਹੈ'। ਇੱਥੇ ਵੀ 'ਕੀ' ਲਗਾ ਕੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਕਰਣ ਨਾਲ ਉੱਤਰ ਮਿਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ, ਰੋਟੀ, ਅੰਬ ਆਦਿ। ਇਸ ਲਈ ਵਾਕ ਵਿਚ ਕਰਮ ਦਾ ਸੀਧਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਨਹੀ ਹੋਣ ਨਾਲ ਵੀ ਇੱਥੇ 'ਖਾਣਾ' ਕ੍ਰਿਆ ਸਕਰਮਕ ਹੈ। ਇਸੀ ਤਰਹਾਂ ਪੜ੍ਹਨਾ, ਲਿਖਨਾ, ਬੋਲਣਾ, ਖੇਡਣਾ ਆਦਿ ਕ੍ਰਿਆ ਸਕਰਮਕ ਹੈ। ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ 'ਜਾਨਾ' ਕ੍ਰਿਆ ਵੀ ਸਕਰਮਕ ਹੈ।

कुछ क्रियाएं सकर्मक होती हैं तथा कुछ अकर्मक। किसी वाक्य में यदि 'क्या' अथवा 'किसको' लगा कर प्रश्न किया जाय और यदि उसका उत्तर मिल जाय, तो वह क्रिया सकर्मक होगी। जैसे—'वह रोटी खाता है। प्रश्न—वह क्या खाता है ? उत्तर—रोटी। अतएव 'खाना' क्रिया सकर्मक है।

किसी-किसी वाक्य में कर्म श्रुत नहीं होता। जैसे—'वह खाता है', इस वाक्य में कर्म प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देता है, किन्तु वाक्य में 'क्या' लगाकर प्रश्न करने पर उत्तर मिल जाता है,—रोटी, आम इत्यादि। इसलिये वाक्य में कर्म का प्रत्यक्ष प्रयोग न होने पर भी यहाँ 'खाना' क्रिया सकर्मक है। इसी प्रकार, पढ़ना, लिखना, बोलना, खेलना आदि क्रिया सकर्मक हैं। संस्कृत में 'जाना' क्रिया भी सकर्मक होता है।

.7 ਜਿਸ ਵਾਕ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਵਿਚ 'ਕੀ' ਲਗਾ ਕੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਕਰਣ ਨਾਲ ਉੱਤਰ ਨਹੀ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਤਾ ਉਹ ਅਕਰਮਕ ਕ੍ਰਿਆ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—ਪ੍ਰ੦— 'ਉਹ ਕੀ ਰੋਂਦਾ ਹੈ'? ਇਸ ਵਾਕ ਦਾ ਉੱਤਰ ਨਹੀ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਅਤੇ 'ਰੋਣਾ' (रोना) ਅਕਰਮਕ ਕ੍ਰਿਆ ਹੈ। ਇਸੀ ਤਰਹਾਂ ਹਸਣਾ, ਸੋਣਾ ਆਦਿ ਅਕਰਮਕ ਕ੍ਰਿਆ ਹੈ।

जिस वाक्य की क्रिया में 'क्या' लगाकर प्रश्न करने पर उत्तर नहीं मिलता है, वह क्रिया अकर्मक होती है। जैसे—'वह क्या रोता है?' इसका उत्तर नहीं मिलता। अतएव 'रोना' अकर्मक क्रिया है। इसी प्रकार हसना, सोना इत्यादि अकर्मक क्रिया है।

ਵਿਆਕਰਣ-(व्याकरणम्)—

क्त-प्रत्ययान्त गम् धातु से प्रथमा विभक्ति में रूप।

	ਏ० ਵ०		ਬ० ਵ०	
पुं०	गतः	(गया)	गताः	(गए)।
स्त्री०	गता	(गई)	गताः	(गई)।
नपुं०	गतम्	(गया)	गतानि	(गए)।

ਅਭਿਯਾਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠਾਂ ਦਿਤੀਆਂ ਹੋਈਆ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ 'क्त' ਪ੍ਰਤਿਆ ਜੋੜ ਕੇ ਪੁੰ० ਰੂਪ ਬਣਾਓ। ਜਿਵੇਂ—

   निम्नलिखित धातुओं से 'क्त' प्रत्यय जोड़कर पुं० रूप बनाइए।

   जैसे—कथ् + क्त = कथितः।

   कथ्, चिन्त, कृ, नी, पठ्।

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ 'क्त' ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਪਦਾਂ ਦਾ ਮੂਲ ਧਾਤੁ ਲਿਖੋ। ਜਿਵੇਂ—

   निम्नलिखित 'क्त' प्रत्ययान्त पदों का मूल धातु लिखिए।

   जैसे—दृष्टम् — दृश्।

   दृष्टम्, कथिता, स्थितः, पीतः; दत्तम्, पतितम्।

ਹੇਠਾਂ ਦਿਤੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ 'क्त' ਪ੍ਰਤਿਆ ਜੋੜ ਕੇ ਇਸਤ੍ਰੀ० ਰੂਪ ਲਿਖੋ। ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित धातुओं से 'क्त' प्रत्यय जोड़ कर स्त्री० रूप लिखिए।

जैसे—हन् + क्त = हता।

हन्, श्रु, भज्, पृच्छ्, खाद्, स्था, गम्।

4. ਹੇਠਾ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕ ਬਣਾਓ। ਜਿਵੇਂ—

नीचे लिखे हुए पदों से वाक्य बनाइए।

जैसे—उक्तम् = तेन उक्तम्।

उक्तम्, पठिता, सुप्तम्, भुक्तम्. कृतः, गतः।

5. 'ਪਠ੍' ਧਾਤੁ ਵਿਚ 'ਕ੍ਤ' ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗਾ ਕੇ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਰੂਪ ਤਿੱਨਾਂ ਲਿੰਗਾ ਵਿਚ ਲਿਖੋ।

'पठ्' धातु में क्त-प्रत्यय लगाकर प्रथमा विभक्ति का रूप तीनों लिंगों में लिखिए।

6. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਵਿਚੋਂ 'ਕ੍ਤ' ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਅਲੈਦਾ ਕਰੋ।

नीचे लिखे पदों से 'क्त' प्रत्यान्त पदों को पृथक् करें।

कृत्वा, विस्मृत्य, नष्टः, कुपिताः खादितुम्,
गन्तुम्, हसिताः, लज्जिता, कृतम्, पीतम्।

7. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।

अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए।

मया चन्द्रः दृष्टः।
युष्माभिः ग्रन्थाः पठिताः।
काकाः पिपासिताः आसन्।
भिक्षुकः बुभुक्षितः अस्ति।
लतया रमा पृष्टा।
कुम्भकारेण घटः निर्मितः।
पत्राणि पतितानि।
कमलानि विकसितानि।

8. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਤੁਸੀਂ ਮੈਂ ਨੂੰ ਵੇਖਿਆ।	तुमने मुझको देखा।
ਮੈ ਨਾਚ ਵੇਖਿਆ।	मैंने नृत्य देखा।
ਉਸ ਨੇਂ ਮਹਾਭਾਰਤ ਪੜ੍ਹੀ।	उसने महाभारत पढ़ा।
ਅਭਿਲਾਸ਼ ਨੇ ਕਵਿਤਾ ਲਿਖੀ।	अभिलाष ने कविता लिखी।
ਸਾਧਨਾ ਨੇ ਗੀਤ ਗਾਯਾ।	साधना ने गीत गाया।
ਸੁਭਾਸ਼ ਨੇ ਰੋਟਿਯਾਂ ਖਾਇਆਂ।	सुभाष ने रोटियां खायीं।
ਆਸ਼ਾ ਨੇ ਲਿਖ ਕੇ ਪੜ੍ਹਿਆ।	आशा ने लिखकर पढ़ा।

जिता सभा वस्त्रवता, मिष्टाशा गोमता जिता ।
अध्वा जितो यानवता, सर्वं शीलवता जितम् ।।

अष्टादशः पाठः

ਕਤਵਤੁ ਪ੍ਰਤਿਆ, ਪੁੰ०, ਇਸਤ੍ਰੀ० ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ।

क्तवतु प्रत्यय, पुं०, स्त्री० प्रथमा विभक्ति।

सः पुस्तकं पठितवान्। ते पत्राणि लिखितवन्तः।
सा माम् उक्तवती। ताः वार्तालापं कृतवत्यः।
त्वं मां पृष्टवान्। वयं युष्मान् दृष्टवन्तः।
कः ग्रामं गतवान्? कृषकः ग्रामं गतवान्।
काः जलं पीतवत्यः? चटकाः जलं पीतवत्यः।
श्रीकृष्णः अर्जुनं गीताम् उक्तवान्। अर्जुनः उपदेशं श्रुतवान्।
शिष्यः शिक्षां प्राप्तवान्। कवयः काव्यानि रचितवन्तः।
इन्दिरा कवितां लिखितवती। कन्याः मालाः निर्मितवत्यः।
माता भोजनं निर्मितवती। बालिकाः कन्दुकं क्रीडितवत्यः।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

पठ्	+क्तवतु—	पठितवत्	=	पढ़ा	(ਪੜ੍ਹਿਆ)
वच्	+क्तवतु—	उक्तवत्	=	कहा	(ਆਖਿਆ)
प्रच्छ्	+क्तवतु—	पृष्टवत्	=	पूछा	(ਪੁਛਿਆ)
गम्	+क्तवतु—	गतवत्	=	गया	(ਗਇਆ)
श्रु	+क्तवतु—	श्रुतवत्	=	सुना	(ਸੁਣਿਆ)
रच्	+क्तवतु—	रचितवत्	=	रचा	(ਰਚਿਆ)
निर्√मन्	+क्तवतु—	निर्मितवत्	=	बनाया	(ਬਣਾਇਆ)
क्रीड्	+क्तवतु—	क्रीडितवत्	=	खेला	(ਖੇਡਿਆ)

लिख्	+	क्तवतु—लिखितवत्	=	लिखा	(ਲਿਖਿਆ)
कृ	+	क्तवतु—कृतवत्	=	किया	(ਕੀਤਾ)
दृश्	+	क्तवतु—दृष्टवत्	=	देखा	(ਵੇਖਿਆ)
पा	+	क्तवतु—पीतवत्	=	पीया	(ਪੀਤਾ)
प्र√आप्	+	क्तवतु—प्राप्तवत्	=	पाया	(ਪਾਇਆ)
		चटका	=	चिड़िया	(ਚਿੜੀ)

1. ਕੱਮ ਦੀ ਸਮਾਪਤੀ ਦਾ ਮਤਲਬ ਦਸਣ ਲਈ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿਚ 'ਕਤਵਤੁ' ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'सः पठितवान्' ਉਹ ਪੜ੍ਹਿਆ। ਇਹ ਦੇ ਨਾਲ ਇਹ ਨਿਹਚਯ ਹੋਇਆ ਕਿ ਪੜ੍ਹਨ ਦਾ ਕੱਮ ਸਮਾਪਤ ਹੋ ਗਿਆ।

   कार्य की समाप्ति का अर्थ बतलाने के लिए धातुओं के अन्त में 'क्तवतु' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—'सः पठितवान्' (उसने पढ़ा)। इससे यह निश्चय हुआ कि पढ़ने का कार्य समाप्त हो गया।

2. 'क्तवतु' (क् + तवत् + उ) ਦਾ 'ਤਵਤ' (तवत्) ਸ਼ੇਸ਼ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—पठ् + क्तवतु (तवत्) = पठितवत्।

   'क्तवतु' (क् + तवत् + उ) का 'तवत्' शेष रहता है। जैसे—पठ् + क्तवतु (तवत्) = पठितवत्।

3. ਕਤਵਤੁ ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਪਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਤਿੱਨਾਂ ਲਿੰਗਾਂ ਵਿਚ ਸਾਰਿਆਂ ਵਿਭਕਤੀਆਂ ਵਿਚ ਸੰਗਿਆਂ ਪਦਾਂ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

   क्तवतु-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप संज्ञा-पदों के सभी लिङ्गों की सभी विभक्तियों में होते हैं। जैसे—पुं० पठितवान्—पठितवन्तः।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

'क्तवतु' ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਰੂਪ ਤਿੰਨਾ ਲਿੰਗਾ ਦੇ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਵਿਚ।

क्तवतु-प्रत्ययान्त शब्द के रूप तीनों लिंगों की प्रथमा विभक्ति में।

	एक० व०	ब० व०
पुं०	पठितवान्—पढ़ा (ਪੜ੍ਹਿਆ)	पठितवन्तः—पढ़े (ਪੜ੍ਹੇ)
स्त्री०	पठितवती—पढ़ो (ਪੜ੍ਹੀ)	पठितवत्यः—पढ़ीं (ਪੜ੍ਹੀਆਂ)
नपुं०	पठितवत्—पढ़ा (ਪੜ੍ਹੀਆ)	पठितवन्ति—पढ़े (ਪੜ੍ਹੇ)

ਅਭਿਜਾਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠਾਂ ਦਿਤੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਵਿਚ 'क्तवतु' ਪ੍ਰਤਿਆ ਜੋੜ ਕੇ ਪੁਲਿੰਗ ਅਤੇ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਇਕਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਰੂਪ ਲਿਖੋ। ਜਿਵੇਂ—

   निम्नलिखित धातुओं में 'क्तवतु' प्रत्यय जोड़कर पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग एकवचन तथा बहुवचन में रूप लिखिए।

   जैसे—कथ्—

पुं०	कथितवान्	कथितवन्तः
स्त्री०	कथितवती	कथितवत्यः

   कथ्, पा, कृ, चिन्त्, नी, दृश्।

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ 'क्तवतु' ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਪਦਾਂ ਦੇ ਮੂਲ ਧਾਤੂ ਲਿਖੋ। ਜਿਵੇਂ—

   निम्नलिखित क्तवतु-प्रत्ययान्त पदों के मूल धातु लिखिए।

   जैसे—खादितवान्—खाद्।

   खादितवान्, पीतवती, पठितवत्, गतवती, दृष्टवान्, पतितवन्तः, कथितवन्तः।

3. ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਅਲੈਦਾ ਕਰੋ ।

स्त्रीलिङ्ग पदों को अलग कीजिए ।

कृतवती, गतवत्यः, कुपितवान्, पीतवान्,
पतितवान्, पठितवत्यः, स्मृतवती, विकसितवत् ।

4. ਸ਼ੁੱਧ ਕ੍ਰਿਯਾ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕ ਠੀਕ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—

शुद्ध क्रिया-पदों के द्वारा वाक्य शुद्ध कीजिए ।

जैसे—अहं जलं पीतवत्यः । अहं जलं **पीतवान्** ।

श्यामः भोजनं कृतवन्तः ।
कला चित्रं दृष्टवान् ।
ते गृहं गतवान् ।
त्वं कुत्र गतवन्तः ?
पत्रं पतितवान् ।
पुष्पाणि विकसितवत् ।
सः कुत्र गतवन्तः ?

5. ਠੀਕ ਕਰਤ੍ਰੀ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕਪੂਰਤੀ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—

उपयुक्त कर्तृपदों से वाक्य-पूर्ति कीजिए ।

जैसे—

.... आपणं गतवान् । **बालकः** आपणं गतवान् ।

.... गृहम् आगतवन्तः ।
.... गीतां पठितवती ।
.... नृत्यं दृष्टवत्यः ।
.... तं कथितवन्तः ।
.... ग्रामं गतवान् ।
.... विकसितवन्ति ।
.... पतितवत् ।

6. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਰਥ ਲਿਖੋ।

अपनी भाषा में अर्थ लिखिए।

वालकः सुप्तवान् ।	वालिकाः रोदितवत्यः ।
माता मां उक्तवती ।	ते गीतं श्रुतवन्तः ।
छात्राः अध्ययनं कृतवन्तः ।	ताः नाटकं दृष्टवत्यः ।
पत्राणि पतितवन्ति ।	प्रातः पुष्पाणि विकसितवन्ति ।
मम मित्रं ह्यः गतवत् ।	तव मित्राणि ह्यः आगतवन्ति ।

7. ਸੰਸ਼ਕ੍ਰਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

ਮੈਂ ਘਰ ਜਾਕੇ ਭੋਜਨ ਖਾਧਾ।	मैंने घर जाकर खाना खाया।
ਤੂੰ ਅਜੇ ਸਨਾਨ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ।	तुमने अभी स्नान नहीं किया।
ਸ਼ੋਭਾ ਨੇ ਪੁਸਤਕ ਪੜ੍ਹੀ।	शोभा ने पुस्तक पढ़ी।
ਬਾਹਿਰ ਭਿਖਾਰੀ ਆਇਆ।	बाहर भिखारी आया।
ਤੁਸੀ ਪੜ੍ਹਨ ਲਈ ਇਥ ਆਏ।	तुम पढ़ने के लिए यहाँ आये।
ਰਮਾ ਨੇ ਆਸ਼ਾ ਨੂੰ ਵੇਖਿਆ।	रमा ने आशा को देखा।
ਮਾਂ ਨੇ ਤੁਹਾ ਨੂੰ ਕੀ ਆਖਿਆ?	माँ ने तुमसे क्या कहा?

भुक्तवान् पीतवान् कामं, सानन्दं नीतवान् वयः।
लब्धवान् नो यशः शुभ्रं, तदा किं कृतवान् नरः॥

एकोनविंशतिः पाठः

चौथी-पंचमी विभक्ती ।

चतुर्थी-पञ्चमी विभक्ति ।

चतुर्थी—

धनं दानाय भवति । वृक्षाः परोपकराय फलन्ति ।
राजा भिक्षुकेभ्यः अन्नं ददाति । दुर्जनाः सज्जनेभ्यः द्रुह्यन्ति ।
माता सुधायै क्रुध्यति । क्षमायै मधुरं न रोचते ।
अहं पूजायै पुष्पाणि आनयामि । शिक्षकः छात्राभ्यः पुस्तकं ददाति ।
मह्यं दुग्धं न रोचते । अहं तुभ्यं शतं धारयामि ।
सर्वेभ्यः बालकेभ्यः क्रीडनं रोचते । अहं तेभ्यः पुस्तकानि ददामि ।
तस्यै बालिकायै दुग्धम् आनय । सा अस्यै बालिकायै द्रुह्यति ।
आभ्यः प्रतिमाभ्यः मालाम् आनय । सर्वाभ्यः देवप्रतिमाभ्यः नमः ।

पञ्चमी—

लोभात् मोहः भवति । गंगा हिमालयात् निर्गच्छति ।
ताः कूपेभ्यः जलं नयन्ति । मेघेभ्यः जलं वर्षति ।
आशा निशायाः बिभेति । शाखायाः खगाः उड्डीयन्ते ।
छात्राः पाठशालाभ्यः आगच्छन्ति । मालाभ्यः पुष्पाणि पतन्ति ।
अस्मात् विद्यालयात् छात्राः गताः । तस्मात् ग्रामात् पथिकाः आगताः ।
कृषकाः क्षेत्रेभ्यः धान्यं नयन्ति । कुम्भमेलां द्रष्टुं नागरिकाः आगताः ।
तस्याः शाखायाः फलानि पतन्ति । इयं तस्याः छात्रायाः भयं करोति ।
ताभ्यः लताभ्यः पुष्पाणि अपतन् । नदीभ्यः जलं सागरं प्रतिगच्छति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

द्रुह् = द्रोह करना (ਜਲਨ) रुच् = अच्छा लगना (ਚੰਗਾ ਲਗਣਾ)
क्रुध् = क्रोध करना (ਗੁੱਸਾ ਕਰਨਾ) भी = भय करना (ਡਰਨਾ)
धान्य = अन्न (ਅੱਨ) जलाशय = जल का स्थान (ਪਾਣੀ ਦੀ ਥਾਂ)।

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਕਰਤਾ ਜਿਸ ਨੂੰ ਕੁਛ ਦੇਂਦਾ ਹੈ ਉਥੇ ਸੰਪ੍ਰਦਾਨ ਕਾਰਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ— 'धनिकः निर्धनाय धनं ददाति' ਧਨੀ ਆਦਮੀ ਨਿਰਧਨ ਨੂੰ ਧਨ ਦੇਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਕ ਵਿਚ ਧਨੀ ਕਰਤਾ ਹੈ, ਉਹ ਨਿਰਧਨ ਨੂੰ ਧਨ ਦੇਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇਥੇ ਨਿਰਧਨ ਵਿਚ ਸੰਪ੍ਰਦਾਨ ਕਾਰਕ ਦਾ ਪਰਯੋਗ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਸੰਪ੍ਰਦਾਨ ਕਾਰਕ ਵਿਚ ਚੌਥੀ (ਚਤੁਰਥੀ) ਵਿਭਕਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

   कर्ता जिसको कुछ देता है, वह 'सम्प्रदान' कारक है। जैसे— 'धनिकः निर्धनाय धनं ददाति' (धनी निर्धन को धन देता है)। इस वाक्य में धनी (व्यक्ति) कर्ता है, वह निर्धन को धन देता है। इसलिए यहाँ निर्धन 'सम्प्रदान' कारक है। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसलिये 'निर्धन' में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

2. ਚੌਥੀ (ਚਤੁਰਥੀ) ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਪਰਯੋਗ ਦਾਨ ਤੋਂ ਅਲਾਵਾ ਹੋਰ ਵੀ ਕਈ ਅਰਥਾਂ ਵਿਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

   चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग दान के अतिरिक्त और भी कई अर्थों में होता है।

(ਕ) ਜਦੋਂ ਕਿਸੇ ਪਰਯੋਜਨ ਲਈ ਕੋਈ ਕੱਮ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਦੋਂ ਉਸ ਪਰਯੋਜਨ ਵਿਚ ਚੌਥੀ ਵਿਭਕਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'बालकः दुग्धाय रोदिति' ਬੱਚਾ ਦੁੱਧ ਲਈ ਰੋਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਕ ਵਿਚ ਬੱਚੇ ਦੀ ਰੋਣ

ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਦੁੱਧ ਲਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਅਤੇ ਦੁੱਧ ਵਿਚ ਚੌਥੀ ਵਿਭਕਤੀ ਹੋਈ ਹੈ।

जब किसी प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है, तब उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—'बालकः दुग्धाय रोदिति' (बच्चा दूध के लिए रोता है)। इस वाक्य में बच्चे की रोने की क्रिया दूध के लिए होती है। इसलिए 'दुग्ध' में चतुर्थी विभक्ति हुई है।

(ਖ) ਵਾਕ ਵਿਚ 'नमः' ਦੇ ਨਾਲ ਚੌਥੀ ਵਿਭਕਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'रामाय नमः' ਰਾਮ ਲਈ ਨਮਸਕਾਰ। ਇੱਦਾਂ ਹੀ क्रुध् (ਕਰੋਧ) द्रुह् (ਧ੍ਰੋਹ ਕਰਨਾ), याच् (ਮੰਗਣਾ), रुच् (ਚੰਗਾ ਲਗਣਾ)—ਏਨਾਂ ਅਰਥਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਚੌਥੀ ਵਿਭਕਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

वाक्य में 'नमः' के साथ चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—रामाय नमः (राम के लिए नमस्कार)। इसी प्रकार क्रुध् (क्रोध), द्रुह् (द्रोह), याच् (माँगना), रुच् (अच्छा लगना)—इन अर्थों में भी चतुर्थी विभक्ति होती है।

3. ਜਿਥੇਂ ਕੋਈ ਵਸਤੂ ਜਾਂ ਆਦਮੀ ਅਲੇਹਦਾ ਜਾਂ ਦੂਰ ਹੁੰਦਾ ਹੋਵੇ ਉਥੇ ਅਪਾਦਾਨ ਕਾਰਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਅਪਾਦਾਨ ਕਾਰਕ ਵਿਚ ਪੰਚਮੀ ਵਿਭਕਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'वृक्षात् पत्रं पतति' ਪੇੜ ਤੋਂ ਪੱਤਾ ਡਿਗਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਕ ਵਿਚ ਪੱਤਾ ਪੇੜ ਤੋਂ ਅਲੇਹਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਅਤੇ ਇਥੇ ਪੰਚਮੀ ਵਿਭਕਤੀ ਲੱਗੀ ਹੈ। ਇੱਦਾਂ ਹੀ ਭੈ (ਡਰ), ਘ੍ਰਿਣਾ, ਮਨਾ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਜਿਥੋਂ ਕੋਈ ਚੀਜ਼ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦੀ ਹੋਏ, ਉਥੇ ਵੀ ਪੰਚਮੀ ਵਿਭਕਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

जहाँ से कोई वस्तु या व्यक्ति अलग या दूर होता है, वहाँ 'अपादान' कारक होता है। अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे—'वृक्षात् पत्रं पतति' (वृक्ष से पत्ता गिरता है)। इस वाक्य में पत्ता वृक्ष से अलग हो रहा है। इसलिए यहाँ पञ्चमी विभक्ति लगी है। इसी प्रकार भय, घृणा, रोकना तथा जिससे कोई वस्तु उत्पन्न हो, वहाँ भी पञ्चमी होती है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਚੌਥੀ ਵਿਭਕਤੀ

चतुर्थी विभक्ति

		ए० व०	ब० व०
	पुं०	बालकाय	बालकेभ्यः
	स्त्री०	बालिकायै	बालिकाभ्यः
सर्व० तत्	पुं०	तस्मै	तेभ्यः
,, तत्	स्त्री०	तस्यै	ताभ्यः
,, अस्मद्		मह्यं	अस्मभ्यम्
,, युष्मद्		तुभ्यम्	युष्मभ्यम्

ਪੰਚਮੀ ਵਿਭਕਤੀ

पञ्चमी विभक्ति

		ए० व०	ब० व०
	पुं०	बालकात्	बालकेभ्यः
	स्त्री०	बालिकायाः	बालिकाभ्यः
सर्व० तत्	पुं०	तस्मात्	तेभ्यः
,, तत्	स्त्री०	तस्याः	ताभ्यः
,, अस्मद्		मत्	अस्मत्
,, युष्मद्		त्वत्	युष्मत्

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਵਿਭਕਤੀ ਪਛਾਣੋ।

   विभक्ति पहचानिए।

   पुष्पाय, वृक्षात्, बालकेभ्यः, ज्ञानाय, दरिद्रेभ्यः, उमायै, लतायाः कस्मै, कस्मात्।

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਰੂਪ ਚੌਥੀ ਵਿਭਕਤੀ ਦੇ ਇਕਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਲਿਖੋ।
निम्नलिखित शब्दों के रूप चतुर्थी विभक्ति के एकवचन तथा वहुवचन में लिखिए।

सीता, ज्ञान, तत्, किं, फल, पत्र, लता।

3. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਰੂਪ ਪੰਚਮੀ ਵਿਭਕਤੀ ਦੇ ਇਕਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਲਿਖੋ।
निम्नलिखित शब्दों के रूप पञ्चमी के एकवचन तथा वहुवचन में लिखिए।

पर्वत, मेघ, शाखा, उपवन,
तत्, यत्, रमा, सर्व।

4. ਠੀਕ ਵਿਭਕਤੀ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ। ਜਿਵੇਂ—
उचित विभक्ति से रिक्त स्थान को भरिए।

जैसे—नृपः ···· ···· ····गां ददाति। याचक
नृपः याचकाय गां ददाति।

इदं ···· ···· ···· ···· न रोचते। अस्मद्
शिक्षकः ···· ···· ···· ····क्रुध्यति। शिष्य
इदं वस्त्रं ···· ···· ···· ···· ददामि। छात्रा
दुग्धं ···· ···· ···· ···· न रोचते। बालक
गंगा ···· ···· ···· ···· ···· प्रभवति। हिमालय
अहं ···· ···· ···· ····आगच्छामि। विद्यालय
पुष्पाणि ···· ···· ···· ···· पतन्ति। शाखा
तैलं ···· ···· ···· ···· ···· भवति। तिल
छात्रः ···· ···· ···· ···· ···· बिभेति। शिक्षक

—15—

5. ਰੇਖਾਂਕਿਤ ਪਦਾਂ ਵਿਚ ਉਚਿਤ ਵਿਭਕਤੀ ਲਗਾਕੇ ਵਾਕ ਸ਼ੁਧ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—
रेखाङ्कित में उचित विभक्ति लगाकर वाक्य शुद्ध कीजिए।

जैसे—मां अध्ययनं न रोचते । मह्यम् अध्ययनं न रोचते।

माता त्वां भोजनं ददाति।
रमेशः सुरेशात् द्रुह्यति ।
वृक्षैः पत्राणि पतन्ति ।
पर्वतेन नदी निर्गच्छति ।
सः तेन बिभेति ।
कमला पाठशालया आगच्छति।

6. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए।

बालकः सर्पात् बिभेति ।
श्यामः विद्यालयस्य भवनात् अपतत्।
सा बालकेभ्यः मोदकं ददाति।
ग्रामाद् वहिः विद्यालयः अस्ति।
देवेभ्यः नमः ।

7. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

ਮੈਂ ਤੁਹਾਤੋਂ ਡਰਦਾ ਹਾਂ। मैं तुमसे डरता हूँ।
ਤੁਹਾਨੂੰ ਮਿਠਾਈ ਚੰਗੀ ਲਗਦੀ ਹੈ। तुम्हें मिठाई अच्छी लगती है।
ਮੇਰੇ ਲਈ ਪਾਣੀ ਲਿਆਓ। मेरे लिए पानी लाओ।
ਮੈਂ ਭਿਖਾਰੀ ਨੂੰ ਅੰਨ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ। मैं भिक्षुक को अन्न देता हूँ।
ਮੈਂ ਬਾਗ ਵਿਚੋਂ ਫਲ ਲਿਔਂਦਾਂ ਹਾਂ। मैं उद्यान से फल लाता हूँ।
ਉਹ ਵੇਲ ਤੋਂ ਫੁੱਲ ਤੋੜਦਾ ਹੈ। वह लता से फूल तोड़ता है।

विषादप्यमृतं ग्राह्यम्, अमेध्यादपि काञ्चनम् ।
नीचादप्युत्तमा विद्या, स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि ॥

विंशः पाठः

ਛੇਵੀਂ (ਸ਼ਸ਼ਠੀ) ਵਿਭਕਤੀ ਅਤੇ ਗੁਣ ਸੰਧੀ ।

षष्ठी विभक्ति तथा गुण सन्धि ।

शुकस्य वर्णः हरितः भवति ।

सत्यस्य सदा जयः भवति ।

गणेशस्य पूजा प्रथमं भवति ।

सूर्योदयस्य कालः रमणीयः भवति ।

यस्य स्वयं बुद्धिः नास्ति तस्य शास्त्रं किं करिष्यति ?

लतायाः पुष्पाणि सुगन्धितानि सन्ति ।

तासां बालिकानां स्वरः मधुरः ।

देवर्षिः नारदः ईश्वरभक्तः ।

वसन्तर्तुः ऋतुराजः अस्ति ।

नराणां भूषणं शीलम् ।

मूर्खाणां हितोपदेशः कोपाय भवति ।

उमेशः जलेन वृक्षाणां सिञ्चनं करोति ।

पूर्णिमायाः चन्द्रोदयः सुखदः भवति ।

गंगायाः जलं पवित्रं निर्मलं च अस्ति ।

बालिकानां भूषणं लज्जा अस्ति ।

कोकिलानां स्वरः रूपम् ।

तस्याः वाटिकायाः वृक्षाः हरिताः सन्ति ।

व्रजेशः महेश्वरं प्रणमति ।

पुरा मिथिलायाः नृपः राजर्षिजनकः आसीत् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

वर्ण = रंग, (ਰੰਗ)

भूषण = आभूषण (गहना) (ਗਹਿਣੇ)

हितोपदेश = हितकर उपदेश (ਭਲਾਈ ਦੇ ਬੋਲ)

रमणीय = सुन्दर (ਸੁੰਦਰ)

वाटिका = उद्यान (ਬਾਗ)

ऋतुराज = ऋतुओं का राजा (ਰਿਤੂਆਂ ਦਾ ਰਾਜਾ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਇਸ ਪਾਠ ਵਿਚ ਛੇਵੀਂ ਵਿਭਕਤੀ ਅਤੇ ਗੁਣ ਸੰਧੀ ਦੇ ਬਾਰੇ ਜਾਨਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਵਾਕ ਵਿਚ ਜਿਥੇ ਪਿਤਾ-ਪੁੱਤਰ, ਸਵਾਮੀ-ਸੇਵਕ, ਕਾਰਜ ਕਾਰਣ ਆਦੀ ਵਿਚ ਸੰਬੰਧ ਦਖਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਉਥੇ ਛੇਵੀਂ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਪਰਜੋਗ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਹੋਰ ਸਾਰੀਆਂ ਵਿਭਕਤੀਆਂ ਵਿਚ ਸ਼ੰਗਿਆ ਜਾਂ ਸਰਵਨਾਮ ਦਾ ਸਿੱਧਾ ਸੰਬੰਧ ਕ੍ਰਿਆ ਦੇ ਨਾਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਸਿਰਫ ਛੇਵੀਂ ਵਿਭਕਤੀ ਵਿਚ ਹੀ ਸੰਗਿਆ ਜਾਂ ਸਰਵਨਾਮ ਦਾ ਸੰਬੰਧ ਕ੍ਰਿਆ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਂ ਹੋਕੇ ਸੰਗਿਆ ਜਾਂ ਸਰਵਨਾਮ ਦੇ ਨਾਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਕ੍ਰਿਆ ਦੇ ਨਾਲ ਜਿਸਦਾ (ਸੰਗਿਆ ਜਾਂ ਸਰਵਨਾਮ) ਸਿੱਧਾ ਸੰਬੰਧ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਹ ਹੀ ਕਾਰਕ ਕਹਾਂਦਾ ਹੈ। ਛੇਵੀਂ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਕ੍ਰਿਆ ਦੇ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਇਸਲਈ ਇਹ ਕਾਰਕ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

   'अहं हिमालयस्य चित्रं पश्यामि' ਮੈਂ ਹਿਮਾਲਿਆ ਦੀ ਤਸਵੀਰ ਵੇਖਦਾ ਹਾਂ। ਇਸ ਵਾਕ ਵਿਚ 'हिमालयस्य' ਦਾ ਸੰਬੰਧ 'पश्यामि' ਕ੍ਰਿਆ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਂ ਹੋਕੇ 'चित्रं' ਦੇ ਨਾਲ ਹੈ।

   इस पाठ में षष्ठी विभक्ति तथा गुण सन्धि के विषय में जानकारी दी गई है। वाक्य में जहाँ पिता-पुत्र, स्वामी-सेवक, कार्य-कारण आदि में सम्वन्ध दिखाये जाते हैं, वहाँ 'षष्ठी' विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। अन्य सभी विभक्तियों में संज्ञा या सर्वनाम का सीधा सम्बन्ध क्रिया के साथ होता है, किन्तु षष्ठी विभक्ति में संज्ञा या सर्वनाम का सम्वन्ध क्रिया के साथ न होकर संज्ञा या सर्वनाम के साथ होता है। क्रिया से जिसका (संज्ञा या सर्वनाम का) सीधा सम्बन्ध होता है, वह 'कारक' कहलाता है। षष्ठी विभक्ति का क्रिया के साथ सम्वन्ध नहीं होता है। अतः यह कारक नहीं है।

   जैसे—'अहं हिमालयस्य चित्रं पश्यामि' (मैं हिमालय का चित्र देखता हूँ) इस वाक्य में 'हिमालयस्य' का सम्वन्ध 'पश्यामि' क्रिया के साथ न होकर 'चित्रं' के साथ है।

2. ਗੁਣ ਸੰਧੀ (गुण सन्धि)—

ਜੇ ਪਹਿਲਾਂ 'ਅ' ਜਾਂ 'ਆ' ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਪਰੇ (ਬਾਦ ਵਿਚ) इ-ई, उ-ऊ, ऋ-ॠ ਵਿਚੋਂ ਕੋਈ ਸਵਰ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਗੁਣ ਸੰਧੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

यदि पूर्व में (पहिले) 'अ' या 'आ' हो और परे (वाद में) इ-ई, उ-ऊ, ऋ-ॠ में से कोई स्वर हो, तो 'गुण' सन्धि होती है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਛੇਵੀਂ ਵਿਭਕਤੀ (षष्ठी विभक्ति)—

		ਏ० ਵ०	ਬ० ਵ०	
	पुं०	वालकस्य	बालकानाम्	।
	स्त्री०	वालिकायाः	बालिकानाम्	।
सर्व० तत्	पुं०	तस्य	तेषाम्	।
,, ,,	स्त्री०	तस्याः	तासाम्	।
,, अस्मद्		मम	अस्माकम्	।
,, युष्मद्		तव	युष्माकम्	।

ਗੁਣ ਸੰਧੀ (गुण सन्धि)—

ਜੇ 'ਅ' ਜਾਂ 'ਆ' ਤੋਂ ਬਾਦ 'ਇ' ਜਾਂ 'ਈ' ਆਵੇ ਤਦੋਂ ਦੋਨਾਂ ਵਰਣਾਂ ਦੇ ਥਾਂ 'ਏ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਜੇ 'ਅ' ਜਾਂ 'ਆ' ਤੋਂ ਬਾਦ 'ਉ' ਜਾਂ 'ਊ' ਆਏ ਤਦੋਂ ਦੋਨਾਂ ਵਰਣਾਂ ਦੇ ਥਾਂ 'ਓ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਜੇ 'ਅ' ਜਾਂ 'ਆ' ਤੋਂ ਬਾਦ 'ऋ' ਜਾਂ 'ॠ' ਆਏ ਤਦੋਂ ਦੋਨਾਂ ਵਰਣਾਂ ਦੇ ਥਾਂ 'ਅਰ੍' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

अ या आ के वाद इ या ई आये, तो दोनों वर्णों के स्थान पर 'ए' हो जाता है।

यदि अ या आ के वाद उ या ऊ आये, तब दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है।

यदि अ या आ के वाद ऋ या ॠ आये, तब दोनों के स्थान पर 'अर' हो जाता है।

जैसे—

महा	+	इन्द्रः	=	महेन्द्रः	।	[आ+इ = ए]
उमा	+	ईशः	=	उमेशः	।	[आ+ई = ए]
चन्द्र	+	उदयः	=	चन्द्रोदयः	।	[अ +उ = ओ]
जल	+	ऊर्मिः	=	जलोर्मिः	।	[अ +ऊ= ओ]
महा	+	ऋषिः	=	महर्षिः	।	[आ+ऋ=अर्]
देव	+	ऋषिः	=	देवर्षिः	।	[अ +ऋ=अर्]

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਉੱਤਰ ਦਿਓ।

अपने पाठ से संस्कृत में उत्तर दीजिए ।

शुकस्य वर्णः कीदृशः भवति ?
कः वृक्षाणां सिञ्चनं करोति ?
नराणां किं भूषणम् ?
गंगायाः जलं कीदृशं भवति ?
बालिकानां किं भूषणम् ?
व्रजेशः किं करोति ?
मिथिलायाः नृपः कः आसीत् ?
कः ऋतुराजः अस्ति ?

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਦਾ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪਰਯੋਗ ਕਰੋ।

निम्नलिखित पदों का संस्कृत-वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

वनोपवनम्, वृक्षोपरि, ज्ञानोपदेशः, उपेन्द्रः महर्षिः ।

3. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਸੰਧੀ ਕਰੋ।

निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए ।

पर + उपकारः ।
गण + ईशः ।

ज्ञान + उपदेशः ।
देव + ऋषिः ।
तस्य + उक्तिः ।
महा + उदयः ।

4. ਸੰਧੀ ਤੋੜੋ ।

सन्धि-विच्छेद (अलग) कीजिये ।

रमेशः, गृहोपरि, उपेन्द्रः, सूर्योदयः,
वसन्तर्तुः, हितोपदेशः ।

5. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਦਾ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪਰਯੋਗ ਕਰੋ ।

निम्नलिखित पदों का वाक्यों में प्रयोग कीजिये ।

छात्रस्य, नराणाम्, सर्वेषाम्, कासाम्, यस्य,
लतायाः, शाखानाम्, अस्माकम्, तव ।

6. ਗੁਣ ਸੰਧੀ ਦੇ ਪੰਜ ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਉਦਾਹਰਣ ਲਿਖੋ ਜੋੜੇ ਇਸ ਪਾਠ ਵਿਚ ਨਹਿ ਆਏ ਹੋਣ ।

गुण सन्धि के पाँच ऐसे उदाहरण लिखिए, जो इस पाठ में नहीं आये हों ।

7. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

अपनी भाषा में अनुवाद कीजिये ।

समयस्य चक्रः सर्वदा सर्वस्योपरि भ्रमति ।
समयोपरि नास्ति कस्यापि वशः ।
संसारे सर्वेऽपि जीवाः समयाधीनाः सन्ति ।
सर्वैः समयस्य सदुपयोगः कर्तव्यः ।
समयस्य दुरुपयोगः कदापि न कर्तव्यः ।

8. ਸੰਸਕ੍ਰਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਮੂਰਖਾਂ ਲਈ ਉਪਦੇਸ਼ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ।	मूर्खों के लिए उपदेश नहीं करना चाहिए ।
ਸੱਜਨਾਂ ਦੇ ਸਾਰੇ ਕੰਮ ਪਰੋਪਕਾਰ ਲਈ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ।	सज्जनों के सभी कार्य परोपकार के लिए होते हैं ।
ਖੇਤਾਂ ਦੇ ਅੱਨ ਅਤੇ ਪੇੜਾਂ ਦੇ ਫਲ ਵੀ ਪਰੋਪਕਾਰ ਲਈ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ।	खेतों के अन्न तथा वृक्षों के फल भी परोपकार के लिए होते हैं ।
ਬੱਦਲ ਅਪਣਾ ਜਲ ਆਪ ਨਹੀਂ ਪੀਂਦਾ ਹੈ ।	मेघ अपना जल स्वयं नहीं पीता है ।
ਅਹਮਦ ਦਾ ਘਰ ਮੇਘਾਲਿਆ ਵਿਚ ਹੈ ।	अहमद का घर मेघालय में है ।

नरस्याभरणं रूपं, रूपस्याभरणं गुणः ।
गुणस्याभरणं ज्ञानं, ज्ञानस्याभरणं क्षमा ॥

स्वयं महेशः श्वसुरो नगेशः, सखा धनेशस्तनयो गणेशः ।
तथापि भिक्षाटनमेव शम्भोः, बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ॥

एकविंशतिः पाठः

ਸੱਤਮੀ ਵਿਭਕਤੀ ਅਤੇ ਯਣ ਸੰਧੀ ।

सप्तमी विभक्ति तथा यण् सन्धि ।

विद्यालये अद्य उत्सवः भविष्यति ।

कृषकाः क्षेत्रेषु बीजानि वपन्ति ।

तस्मिन् गृहे मम मित्राणि निवसन्ति ।

तेषु वृक्षेषु फलानि सन्ति ।

गंगायां नौकाः चलन्ति ।

नौकासु उपविश्य जनाः नौकाविहारं कुर्वन्ति ।

तस्यां लतायां पुष्पाणि विकसितानि सन्ति ।

तासु बालिकासु सुषमा मधुरं गायति ।

विद्यालये अद्य छात्राभिः स्वागतगानं कृतम् ।

अति आचारः अत्याचारः भवति ।

स्वदेशस्य एकतायां सहयोगः कर्तव्यः ।

स्नानं कृत्वा भोजनं कर्तव्यम् इति मात्राज्ञा ।

स्व पित्रादेशात् रामः वनं गतवान् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

क्षेत्र—खेत (ਖੇਤ), वप्—बोना (ਬੀਜਣਾ), उप् √ विश्—बैठना (ਬੈਠਣਾ)।

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਕਿਸੇ ਵੀ ਵਸਤੂ ਦੇ ਆਧਾਰ ਨੂੰ ਅਧਿਕਰਣ (अधिकरण) ਕਾਰਕ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ—'पात्रे जलम् अस्ति' (ਪਾੱਤਰ ਵਿਚ ਪਾਣੀ ਹੈ) ਇੱਥੇ ਜਲ ਦਾ ਆਧਾਰ ਪਾੱਤਰ ਹੈ। ਇਸਲਈ 'पात्र' ਅਧਿਕਰਣ ਕਾਰਕ ਹੈ। ਅਧਿਕਰਣ ਕਾਰਕ ਵਿਚ ਸੱਤਮੀ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਪਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'पात्रे जलम्', 'तिलेषु तैलम्' ਇਨਾਂ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ 'ਜਲ' ਅਤੇ 'ਤੇਲ' ਦਾ ਆਧਾਰ ਪਾੱਤਰ ਅਤੇ ਤਿਲ ਹੈ। ਇਸਲਈ ਪਾੱਤਰ ਤੇ ਤਿਲ ਵਿਚ ਸੱਤਮੀ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਪਰਯੋਗ ਹੋਇਆ ਹੈ।

   किसी भी वस्तु के आधार को अधिकरण कारक कहते हैं जैसे—'पात्रे जलम् अस्ति' (पात्र में जल है)। यहाँ जल का 'आधार' पात्र है। अतएव 'पात्र' अधिकरण कारक है। अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—'पात्रे जलम्', 'तिलेषु तैलम्'। इन वाक्यों में जल तथा तेल का आधार पात्र एवं तिल है। अतएव ये अधिकरण कारक हैं। इसलिए पात्र तथा तिल में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

2. ਹ੍ਰਸਵ ਜਾਂ ਦੀਰਘ 'इ, उ, ऋ' ਦੇ ਬਾਦ ਜੇ ਕੋਈ ਵੀ ਅਸਮਾਨ ਸਵਰ ਹੋਵੇ ਤਾਂ 'इ, उ, ऋ' ਦਾ ਕ੍ਰਮਾਨੁਸਾਰ 'य्, व्, र्' ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਾਨੀ 'इ' ਦਾ 'य्' 'उ' ਦਾ 'व्' ਅਤੇ 'ऋ' ਦਾ 'र्' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—प्रति + उत्तर = प्रत् इ + उत्तर = प्रत् य् उत्तर=प्रत्युत्तर। ਵਿਆਕਰਣ ਵਿਚ ਇਨੂੰ ਯਣ ਸੰਧੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।

   ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ के बाद कोई भी असमान स्वर आने पर इ, उ, ऋ का क्रम से य्, व्, र् हो जाता है। अर्थात् 'इ' का 'य्' 'उ' का 'व्' 'ऋ' का 'र्' हो जाता है। जैसे—प्रति + उत्तर = प्रत् इ+उत्तर = प्रत् य् उत्तर = प्रत्युत्तर। व्याकरण में इसे यण् सन्धि कहते हैं।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

सप्तमी विभक्ति—

		ए० व०	ब० व०
	पुं०	वालके	वालकेषु
	स्त्री०	वालिकायाम्	वालिकासु
तत्	पुं०	तस्मिन्	तेषु
,,	स्त्री०	तस्याम्	तासु
अस्मद्		मयि	अस्मासु
युष्मद्		त्वयि	युष्मासु

यण् सन्धि—

यदि + अपि = यद्यपि । प्रति+एकम् = प्रत्येकम् ।
नदी + उदकम् = नद्युदकम् । इति+आदि = इत्यादि ।
सु + आगतम् = स्वागतम् । अनु+एषणम् = अन्वेषणम् ।
वधू + आगमनम् = वध्वागमनम् । गुरु+आदेशः = गुर्वादेशः ।
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा । पितृ+औदार्यम् = पित्रौदार्यम् ।
मातृ + उपदेशः = मात्रुपदेशः । मातृ+इच्छा = मात्रिच्छा ।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਠੀਕ ਵਿਭਕਤੀ ਵਿਚ ਲਿਖੋ। ਜਿਵੇਂ—

   वाक्यों को दृष्टि में रखकर कोष्ठक में लिखे गये शब्दों के साथ उचित विभक्ति जोड़िये ।

   जैसे—

   अहं (गंगा) स्नानं करोमि । अहं गंगायां स्नानं करोमि ।

त्वं (वृक्ष) शुकं पश्यसि ।
ते (जल) तरन्ति ।
खगाः वृक्षस्य (शाखा) तिष्ठन्ति ।
छात्राः (परीक्षा) उत्तीर्णाः ।
वर्षायाः (जल) मयूराः नृत्यन्ति ।
वालकाः (विद्यालय) पठन्ति ।

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਸੱਤਮੀ ਦੇ ਇਕਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਲਿਖੋ ।
निम्नलिखित शब्दों के रूप सप्तमी विभक्ति के एकवचन तथा वहुवचन में लिखिए ।

देव, वसन्त, लता, पात्र, नौका,
तत्, यत्, अस्मद् युष्मद् ।

3. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦ ਕ੍ਰਮ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਹਨ । ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜੋਗ ਕ੍ਰਮ ਨਾਲ ਠੀਕ ਵਾਕ ਬਣਾਓ । ਜਿਵੇਂ—
निम्नलिखित पद क्रम से नहीं है। इन्हें उचित क्रम से सही वाक्य वनाइए ।
जैसे—**नृपः भवने वसति**।

नृपः	सरोवरे	वसति ।
खगाः	रसं	गायन्ति ।
सूर्यः	भवने	प्रकाशते ।
मीनाः	क्षेत्रे	तरन्ति ।
भ्रमराः	वृक्षे	पिबन्ति ।
वृषभः	वने	चरति ।
सिंहः	आकाशे	गर्जति ।

4. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਾਕਾਂ ਨੂੰ ਠੀਕ ਕ੍ਰਿਆ ਨਾਲ ਜੋੜੋ । ਜਿਵੇਂ—
निम्नलिखित वाक्यों को योग्य क्रिया पदों के साथ जोड़िए ।

जैसे—भ्रमराः गुञ्जति (पुष्पेषु / सरोवरेषु)।

भ्रमराः पुष्पेषु गुञ्जन्ति ।

सैनिकाः युध्यन्ति (युद्धक्षेत्रे / गृहे)।
खगाः वसन्ति (नीडेषु / पत्रेषु)।
पुष्पाणि विकसन्ति (शाखासु/ स्थले)।
छात्राः पठन्ति (विद्यालये/मार्गे)।
अश्वाः धावन्ति (मार्गे / भवने)।
मयूराः नृत्यन्ति (वने / तडागे)।
सिंहः श्रेष्ठः (पशुषु / खगेषु)।

5. ਸੰਧੀ ਕਰੋ ।

सन्धि कीजिए ।

दधि	+	अत्र	।
इति	+	आह	।
प्रति	+	एकम्	।
प्रति	+	अक्षम्	।
मधु	+	अरिः	।
सु	+	आगतम्	।
वधू	+	अत्र	।
मातृ	+	उपदेशः	।
पितृ	+	आदेशः	।
पितृ	+	आगमनम्	।

6. ਸੰਧੀ ਤੋੜੋ ।

सन्धि विच्छेद कीजिए ।

इत्याह, यद्यपि, धात्रंशः, मध्वरिः पित्राकृतिः प्रत्यक्षम् ।

7. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए ।

मम गृहं अमृतसरे अस्ति ।

अमृतसरः समृद्धं नगरम् अस्ति ।

प्रयागे गंगायाः यमुनायाः च संगमः अस्ति ।

विधानभवने विधानसभायाः उपवेशनं भवति ।

गुरुजीतसिंहस्य पिता दिल्लीनगरे निवसति ।

8. ਸੰਸਕ੍ਰਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਸਮੁੰਦਰ ਦਾ ਪਾਣੀ ਵਿਚ ਨਮਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ।	समुद्र के पानी में नमक होता है ।
ਸਰਦੀਆਂ ਵਿਚ ਸੂਰਜਦੀਆਂ ਗਤਾਂ ਲੱਮੀਆਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ ।	शिशिर में सूर्य की किरणें अच्छी लगती हैं ।
ਹਿਮਾਲਿਆ ਦੀ ਚੋਟਿਆਂ ਉੱਤੇ ਬਰਫ਼ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ।	हिमालय के शिखर पर बरफ होती है ।
ਹਿਰਨ ਬਨਾਂ ਵਿਚ ਘੁਮਦੇ ਹਨ ।	हिरण वनों में घूमते हैं ।
ਭੌਂਰੇ ਫੂਲ ਉੱਤੇ ਬਹਿੰਦੇ ਹਨ ।	भ्रमर फूल के ऊपर बैठते हैं ।

परोपदेशे पाण्डित्यं, सर्वेषां सुकरं नृणाम् ।
धर्मे स्वीयमनुष्ठानं, कस्यचित्तु महात्मनः ॥

द्वाविंशः पाठः

ਲੋਟਲਕਾਰ (ਆਗਿਆਰਥਕ)।

लोट्‌लकार (आज्ञार्थक)।

कमला गीतं गायतु ।	बालिकाः जलम् आनयन्तु ।
आशा कथां कथयतु ।	कन्याः भोजनं कुर्वन्तु ।
सेवकः भारं वहतु ।	छात्राः पुष्पाणि आनयन्तु ।
गोपालः फलानि आनयतु ।	नृपाः धर्मम् आचरन्तु ।
त्वं पाठं पठ ।	यूयं वस्त्राणि धारयत ।
अहं प्रतियोगितायै चित्रम् आलिखानि ।	वयं विद्यालयं गच्छाम ।
सः ग्रामं गच्छतु ।	ते अत्रैव तिष्ठन्तु ।
अयम् उपवने भ्रमतु ।	इमे संस्कृतभाषां वदन्तु ।
त्वं संस्कृतं पठ ।	यूयं सत्यं वदत ।
अहं पठितुं पाठशालां गच्छानि ।	वयं प्रतिदिनं सूर्योदयात् प्राक् उत्तिष्ठाम ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

गै = गाना (ਗਾਣਾ)।	कथ् = कहना (ਕਹਿਣਾ) ।
वह् = ढोना (ਢੋਣਾ)।	आ √ चर् = आचरण करना (ਆਚਰਣ ਕਰਨਾ)।
धृञ् = धारण करना (ਧਾਰਣ-ਕਰਣਾ)।	आ√लिख् = चित्र बनाना (ਤਸਵੀਰ ਬਨਾਣਾ)।
भ्रम् = घूमना (ਘੁਮਣਾ)।	उत्√स्था (तिष्ठ्) = उठना (ਉਠਣਾ) ।

ਨਿਰਦੇਸ (निर्देशः)—

1. ਆਗਿਆ ਅਤੇ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ ਦੇਣ ਲਈ ਲੋਟ ਲਕਾਰ ਦਾ ਪਰਯੋਗ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'त्वं पाठशालां गच्छ' ਤੁਸੀਂ ਪਾਠਸ਼ਾਲਾ ਜਾਓ ਇੱਥੇ ਆਗਿਆ ਦੇ ਅਰਥ ਵਿਚ 'गम्' ਧਾਤੂ ਨਾਲ ਲੋਟ ਲਕਾਰ ਦਾ ਪਰਯੋਗ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਇਸੀ ਤਰਹਾਂ 'त्वं चिरंजीव' ਤੂੰ ਲੰਮੀ ਉਮਰਾਂ ਵਾਲਾ ਹੋਵੇ। ਇੱਥੇ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ ਦਾ ਅਰਥ ਵਿਚ 'जीव्' ਧਾਤੂ ਨਾਲ ਲੋਟ ਲਕਾਰ ਦਾ ਪਰਯੋਗ ਹੋਇਆ ਹੈ।

किसी को आज्ञा और आर्शीवाद देने के अर्थ में लोट् लकार का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'त्वं पाठशालां गच्छ' (तुम पाठशाला जाओ) यहाँ आज्ञा देने के अर्थ में 'गम्' धातु के साथ लोट् लकार का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार 'त्वं चिरंजीव' (तुम दीर्घायु हो)। यहाँ आर्शीवाद के अर्थ में 'जीव्' धातु के साथ लोट् लकार का प्रयोग हुआ है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਲੋਟ ਲਕਾਰ ਵਿਚ ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪ੍ਰਤਿਆ ਜੁੜਦੇ ਹਨ।

लोट् लकार में निम्नलिखित प्रत्यय जुड़ते हैं।

लोट् लकार—

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	तु	अन्तु
म० पु०	०	त
उ० पु०	आनि	म

पठ् धातु लोट् लकार—

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	पठतु — पढ़े (ਪੜ੍ਹੇ)	पठन्तु — पढ़ें (ਪੜ੍ਹਨ)
म० पु०	पठ — पढ़ो (ਪੜ੍ਹ)	पठत — पढ़ो (ਪੜ੍ਹੋ)
उ० पु०	पठानि — पढ़ूं (ਪੜ੍ਹਾਂ)	पठाम — पढ़ें (ਪੜ੍ਹੀਏ)

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਧਾਤੂ ਰੂਪਾਂ ਦਾ ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਰਥ ਲਿਖੋ
निम्नलिखित धातु-रूपों का अपनी भाषा में अर्थ लिखिए।
पठतु, लिखन्तु, खाद, पिबत, गच्छानि,
धावाम, कुर्वन्तु, पश्य, गच्छ, गच्छत।

2. ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪਰਯੋਗ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—
वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

जैसे—कुर्वन्तु—ते कार्यं कुर्वन्तु।

कुर्वन्तु, क्रीडन्तु, पठन्तु, पिब, पश्यानि,
करोतु, करवाणि, गच्छाम, पश्याम, वदतु।

3. ਸਭ ਪੁਰੁਸ਼ਾ ਦੇ ਇਕਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ 'ਭੂ' ਧਾਤੂ ਦੇ ਰੂਪ ਲੋਟ ਲਕਾਰ ਵਿਚ ਲਿਖੋ।
सभी पुरुषों के एकवचन और वहुवचन में 'भू' धातु के रूप लोट् लकार में लिखिए।

4. ਕਰਤ੍ਰੀ ਪਦ ਜੋੜੋ। ਜਿਵੇਂ—
कर्तृ-पद जोड़िये।

जैसे—.... .... ग्रामं गच्छ। त्वं ग्रामं गच्छ।

.... चित्रं पश्यन्तु।
.... भोजनं करवाणि।
.... कन्दुकेन क्रीडत।
.... जले तरन्तु।
.... दुर्बलं रक्ष।

.... असत्यं मा वदत ।

.... ग्रामं गच्छाम ।

5. ਕ੍ਰਿਆ-ਪਦ ਜੋੜੋ । ਜਿਵੇਂ—
क्रिया-पद जोड़िये ।

जैसे—छात्राः अत्र .... । छात्राः अत्र आगच्छन्तु ।

त्वम् अत्र .... ।

यूयं संगीतम् .... ।

वयं ध्यानम् .... ।

ते सभायाम् .... ।

सः विद्यालये .... ।

ताः पुष्पाणि .... ।

शिशुः दुग्धं .... ।

वालकाः क्रीडां .... ।

6. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिये ।

ਉਹ ਲੋਕ ਘਰ ਜਾਣ । वे लोग घर जाएँ ।

ਅਸੀਂ ਭੋਜਨ ਕਰਿਏ । हम लोग भोजन करें ।

ਤੁਸੀਂ ਪਾਠ ਯਾਦ ਕਰੋ । तुम लोग पाठ याद करो ।

ਮੈਂ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹਾਂ । मैं पुस्तक पढ़ूँ ।

ਉਹ ਪੂਜਾ ਕਰੇ । वह पूजा करे ।

ਤੂੰ ਸਕੂਲ ਜਾ । तू पाठशाला जा ।

ਤੁਸੀਂ ਘਰ ਜਾਓ । तुम लोग घर जाओ ।

ਨਰਗਿਸ ਪੱਤਰ ਲਿਖੇ । नरगिस पत्र लिखे ।

7. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए ।

ते स्तुतिं कुर्वन्तु ।
महेशः गृहं गच्छतु ।
वालकाः क्रीडन्तु ।
यूयं सुन्दरं दृश्यं पश्यत ।
त्वं परीक्षायाम् उत्तीर्णः भव ।
तानि पुष्पाणि पश्य ।
कार्यालयं समयेन आगच्छन्तु ।
यूयं प्रातःकाले भ्रमणाय गच्छत ।

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा ःस्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेच्छम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

त्रयोविंशः पाठः

ਪਹਿਲਾਂ ਆਇਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਵਿਭਕਤੀਜਾਂ ਦੀ ਦੋਹਰਾਈ ਅਤੇ ਸੰਬੋਧਨ ।

पूर्व प्रयुक्त सभी विभक्तियों की आवृत्ति तथा सम्बोधन ।

हिमालयः पर्वतराजः अस्ति ।
गंगा हिमालयात् निर्गच्छति ।
भगीरथः गंगाम् आनेतुं तपस्याम् अकरोत् ।
प्रयागे गंगायाः यमुनायाः च सङ्गमः अस्ति ।
जनाः दूरात् अपि प्रयागम् आगत्य सङ्गमे स्नानं कुर्वन्ति ।
ज्ञानेन अज्ञानं नष्टं भवति ।
सर्वे ज्ञानाय शास्त्राणि पठन्ति ।
शिक्षकाः छात्रान् उपदिशन्ति ।
दुर्बलानां बुद्धिः एव वलम् ।
ग्रीष्मकाले जनाः गंगायां नौकाभिः विहरन्ति ।
अयं 'छात्रावासः बालिकानाम् अस्ति ।
मालासु अनेकानि पुष्पाणि गुम्फितानि सन्ति ।
गङ्गे ! तव दर्शनात् मुक्तिः ।
भोः बालिकाः ! यूयं सशक्ताः समर्थाः च भवत ।
हे विश्वनाथ ! अखिलस्य विश्वस्य कल्याणं कुरु ।
भोः छात्राः ! संगठिताः भवत ।
एकतया देशः समृद्धः भविष्यति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

निर्√गम् (गच्छ्) = निकलना (ਨਿਕਲਣਾ) वि√हृ = विहार करना (ਘੁੱਮਣਾ)
उप् √दिश् = उपदेश करना (ਉਪਦੇਸ਼ ਦੇਣਾ)
गुम्फ् = गूँथना (ਗੁੱਥਣਾ) संगठित = एक साथ होना (ਇਕ ਹੋਣਾ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਅਪਨੀ ਵੱਲ ਮੁਖਾਤਿਬ ਕਰਨਾ ਜਾਂ ਦੂਰ ਤੋਂ ਬਲਾਉਣਾ ਸੰਬੋਧਨ ਕਹਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—"हे कृष्ण !, भोः ! मित्राणि, हे कन्ये !, हे कन्याः" !
अपनी ओर इंगित करने, दूर से बुलाने या पुकारने को सम्वोधन कहते हैं। जैसे—हे कृष्ण, भोः मित्राणि, हे कन्ये !, हे कन्याः।

2. ਸੰਬੋਧਨ ਵਿਚ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਹੀ ਪਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਕੇਵਲ ਇਕਵਚਨ ਵਿਚ ਥੋੜਾ ਜਿਹਾ ਬਦਲਾਵ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
सम्वोधन में प्रथमा विभक्ति का ही प्रयोग होता है। केवल एक वचन में थोड़ा परिवर्तन होता है।

3. ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਬਲਾਉਂਦੇ ਵੇਲੇ ਸੰਗਿਆ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ 'हे' ਜਾਂ 'भोः' ਲਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
किसी को सम्वोधित करते समय संज्ञा के पूर्व 'हे' अथवा 'भोः' लगाया जाता है।

4. ਸੰਬੋਧਨ ਅਲੈਦਾ ਵਿਭਕਤੀ ਜਾਂ ਕਾਰਕ ਨਹੀਂ ਹੈ।
सम्वोधन कोई पृथक् विभक्ति या कारक नहीं है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ਅਕਾਰਾਂਤ ਪੁੱਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਸੰਬੋਧਨ ਇਕਵਚਨ ਵਿਚ ਵਿਸਰਗ (:) ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਆਕਾਰਾਂਤ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਦੇ ਸੰਬੋਧਨ ਇਕਵਚਨ ਵਿਚ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅੰਤਿਮ ਸਵਰ 'ਅ' ਦਾ 'ਏ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के सम्बोधन के एकवचन में विसर्ग (:) नहीं होता है।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के सम्बोधन एकवचन में शब्द के अंतिम स्वर 'आ' का 'ए' हो जाता है।

		ए० व०	ब० व०
सम्बोधन	पुं०	हे देव !	हे देवाः !
,,	,,	भोः बालक !	भोः बालकाः !
,,	स्त्री०	हे लते !	हे लताः !
,,	,,	भोः बालिके !	भोः बालिकाः !
,,	नपुं०	हे फल !	हे फलानि !
,,	,,	भोः मित्र !	भोः मित्राणि !

ਹੁਣ ਤੁਸੀਂ ਲੋਕ ਅਕਾਰਾਂਤ ਪੁੱਲਿੰਗ, ਆਕਾਰਾਂਤ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਅਤੇ ਨਪੁੰਸਕ ਦੇ ਇਕਵਚਨ ਹੋਰ ਬਹੁਵਚਨ ਦੇ ਸਾਰੇ ਰੂਪ ਸਿਖ ਚੁੱਕੇ।

अब आप अकारान्त पुंल्लिङ्ग, आकारान्त स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग के एकवचन तथा बहुवचन के सभी विभक्तियों के रूप सीख गये।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਦੇ ਲਿੰਗ, ਵਚਨ ਅਤੇ ਵਿਭਕਤੀ ਕਾ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

   निम्नलिखित पदों के लिङ्ग, वचन तथा विभक्ति का निर्देश करें।

जैसे—पाठशालायाम्—स्त्रीलिङ्ग, सप्तमी—विभक्ति, एकवचन ।

लतायाम्, बालकैः, गृहात्, आकाशे, अस्माभिः,
सर्वासु, तस्मिन्, लतासु, नौकया, चन्द्रं, पुष्पाणि ।

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਸੰਬੋਧਨ ਦੇ ਇਕਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਲਿਖੋ ।
निम्नलिखित शब्दों के रूप संबोधन के एकवचन तथा बहुवचन में लिखिए ।

अमिता, रमा, हमीदा, कमला, श्याम,
कमल, गज, पत्र, पुष्प, अहमद, कबीर ।

3. ਠੀਕ ਕ੍ਰਿਆ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
उचित क्रिया-पदों के द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें ।

जैसे—मयूराः वर्षाकाले .... । मयूराः वर्षाकाले नृत्यन्ति ।

वृक्षस्य शाखासु पुष्पाणि .... ।
प्रयागे गंगया सह यमुना .... ।
ते स्नातुं नदीं .... ।
सः क्रीडाङ्गणे कन्दुकेन .... ।
भोः देवाः ! अत्र .... ।
हे सरले ! .... ।
हे मित्र ! त्वं ग्रामात् कदा .... ?

4. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ਠੀਕ-ਠੀਕ ਵਿਭਕਤੀ ਜੋੜ ਕੇ ਵਾਕਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਕਰੋ । ਜਿਵੇਂ—
कोष्ठक में दिये गये शब्दों में उचित विभक्ति जोड़ कर वाक्य-पूर्ति कीजिए ।

जैसे—पुष्पाणि पतन्ति (लता) लतायाः पुष्पाणि पतन्ति ।

.... स्वदेशं रक्षन्ति । (सैनिक)

.... भ्रमराः उपविशन्ति । (पुष्प)

.... प्रातः सरोवरे विकसन्ति । (कमल)

.... हलेन क्षेत्रं कर्षति । (कृषक)

.... इदं दुग्धं पिब । (बालक)

.... इदं चित्रं पश्यन्तु । (बालिका)

5. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਕ੍ਰਿਆਪਦ ਗਲਤ ਹਨ । ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰੋ ।
निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया-पद अशुद्ध हैं । इन्हें शुद्ध कीजिए।

यूयं फलानि खादति ।	वयं अध्यापकाः भविष्यामि ।
संकटेषु धीराः धैर्यं धारयति ।	ते गुरुग्रन्थं अपठः ।
अहं पुस्तकं पठामि ।	वसन्ते कोकिलाः मधुरं गायति ।
त्वं जलम् अपिवत् ।	पंजाबोभाषा सरला सन्ति ।

6. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਵਰਿਖ ਤੇ ਫਲ ਹਨ ।	वृक्ष पर फल हैं ।
ਮੰਦਿਰ ਵਿਚ ਦੇਵਤਿਆਂ ਦੀਆਂ ਮੂਰਤੀਆਂ ਹਨ ।	मन्दिर में देवों की प्रतिमाएँ हैं ।
ਹੇ ਈਸ਼ਵਰ! ਮਾਨੂੰ ਸਦਬੁੱਧਿ ਦਿਓ ।	हे ईश्वर ! हमें सद्बुद्धि दो ।
ਹੇ ਮਿੱਤਰੋਂ ਤੁਸੀਂ ਕੱਲ ਜਰੂਰ ਔਣਾ ।	हे मित्रों ! तुम लोग कल अवश्य आना ।

ਗੰਗਾ ਦੇ ਤਟ ਪਰ ਕਾਸ਼ੀ ਹੈ।	गंगा के तट पर काशी है।
ਕੁਮਾਰ ਕਲਮ ਨਾਲ ਚਿੱਠੀ ਲਿਖਦਾ ਹੈ।	कुमार कलम से पत्र लिखता है।
ਗਰਮੀ ਕੇ ਦਿਨਾਂ ਲੋਕ ਪਹਾੜਾਂ ਉੱਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।	गर्मी के दिनों में लोग पहाड़ों पर जाते हैं।
ਸੂਰਜ ਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਨਾਲ ਕਮਲ ਖਿਲਏ ਹਨ।	सूर्य के प्रकाश से कमल खिलते हैं।

7. ਸੰਸਕ੍ਰਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਉੱਤਰ ਲਿਖੋ।
संस्कृत भाषा में उत्तर लिखिए।

जनाः ज्ञानाय किं पठन्ति ?
केन अज्ञानं नष्टं भवति ?
गंगाम् आनेतुं भगीरथः किम् अकरोत् ?
दुर्बलानां किं वलम् ?
एकतया किं भवति ?

8. ਸ਼ਸ਼ਾਂਕ ਸ਼ਬਦ ਕੇ ਰੂਪ ਇਕਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਦੇ ਸਾਰੀਆਂ ਵਿਭਕਤੀਜਾਂ ਵਿਚ ਲਿਖੋ।

शशांक शब्द के रूप एकवचन तथा बहुवचन के सभी विभक्तियों में लिखिये।

9. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए।

वयम् अस्मिन् वर्षे ग्रीष्मावकाशे कश्मीरं गमिष्यामः।
कश्मीरः भूतलस्य स्वर्गः इति कथयन्ति जनाः।

पंजाबप्रान्तस्य जनाः शूराः भवन्ति ।

पंजाबस्य भांगडानृत्यं प्रसिद्धम् ।

तत्र कृषिकार्यम् अधिकं भवति ।

स्वर्णमन्दिरस्य प्राङ्गणे एकः सरोवरः अस्ति ।

तस्य सरोवरस्य जलम् अतिपवित्रम् आरोग्यप्रदं च अस्ति ।

रामो राजमणिः सदा विजयते, रामं रमेशं भजे,
रामेणाभिहता निशाचरचमूः, रामाय तस्मै नमः ।।
रामात् नास्ति परायणं परतरं, रामस्य दासोस्म्यहम्,
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे, हे राम ! मामुद्धर ।।

चतुर्विंशः पाठः

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ।

विशेषण ।

वृद्धः नरः शनैः शनैः गच्छति ।
वृद्धा नारी दूरं गन्तुं न शक्नोति ।
सुन्दरः बालकः शिष्टाचारं जानाति ।
सा बालिका अतीव सुन्दरी अस्ति ।
ते पुरुषाः वेगेन धावन्ति ।
इमानि वस्त्राणि जीर्णानि सन्ति ।
सज्जनं सर्वे प्रशंसन्ति ।
हरितस्य वृक्षस्य पत्राणि अपि हरितानि सन्ति ।
अस्यां नद्याम् अल्पं जलम् अस्ति ।
क्रीडाक्षेत्रे त्रयः बालकाः चतस्रः बालिकाः च क्रीडन्ति ।
उद्याने कानिचित् पुष्पाणि विकसितानि सन्ति ।
अस्याः कक्षायाः सर्वे छात्राः अध्ययने कुशलाः ।
निर्धनाय जनाय धनं देहि ।
अमरेशः सर्वेषु बालकेषु ज्येष्ठः ।
वहीदा सर्वासु बालिकासु कनिष्ठा ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

वृद्ध = बूढा (ਬੁੱਢਾ) शिष्टाचार = उत्तम व्यवहार (ਚੰਗਾ ਵਿਵਹਾਰ)

अतीव = अधिक	(ਜਿਆਦਾ)		वेग = तेज	(ਛੇੱਤੀ)
जीर्ण = पुराना	(ਪੁਰਾਣਾ)		साधु = सज्जन	(ਸੰਤ)
प्र √ शंस् = प्रशंसा करना	(ਤਾਰੀਫ ਕਰਣਾ)		हरित = हरा	(ਹਰਾ ਰੰਗ)
अल्प = थोड़ा	(ਘੱਟ)		निर्धन = गरीब	(ਗਰੀਬ)
ज्येष्ठ = वड़ा	(ਵੱਡਾ)		कनिष्ठ = छोटा	(ਨਿੱਕਾ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देश:)—

1. ਜੇੜਾ ਸ਼ਬਦ ਸੰਗਿਆ ਜਾਂ ਸਰਵਨਾਮ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਦੱਸਦਾ ਹੈ ਉਹ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਕਹਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਸੰਗਿਆ ਜਾਂ ਸਰਵਨਾਸ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਦੱਸੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਉਹ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਿਅ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਜਾਨੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਿਅ ਜਿਸ ਲਿੰਗ, ਜਿਸ ਵਚਨ ਅਤੇ ਜਿਸ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਉਸੀ ਲਿੰਗ, ਉਸੀ ਵਚਨ ਅਤੇ ਉਸੀ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਵੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—

   जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता वतलाता है, उसको विशेषण कहते हैं। जिस संज्ञा सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है उस संज्ञा या सर्वनाम को विशेष्य कहते हैं। विशेष्य जिस लिङ्ग, जिस वचन और जिस विभक्ति का होता है, विशेषण भी उसी लिङ्ग, उसी वचन तथा उसी विभक्ति का होता है।

   जैसे—

   प्रियः पुत्रः । प्रियाः पुत्राः ।
   शोभना कन्या । शोभनाः कन्याः ।
   श्वेतं पुष्पं । श्वेतानि पुष्पाणि ।

   ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ 'पुत्र', 'कन्या' ਅਤੇ 'पुष्प' ਦੇ ਲਿੰਗ, ਵਚਨ ਅਤੇ ਵਿਭਕਤੀ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ 'प्रिय', 'शोभना' ਅਤੇ 'श्वेत' ਵਿਚੰ ਲਿੰਗ, ਵਚਨ ਅਤੇ ਵਿਭਕਤੀ ਲਗੀ ਹੈ।

   इन वाक्यों में 'पुत्र', 'कन्या' तथा 'पुष्प' के लिङ्ग, वचन और विभक्ति के अनुसार ही उनके विशेषण 'प्रिय', 'शोभन' तथा 'श्वेत' में लिङ्ग, वचंन तथा विभक्ति लगी है।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यास:)—

1. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਉੱਤਰ ਦਿਓ।
अपने पाठ से उत्तर दीजिए।

कः ग्रामं गच्छति ?
कीदृशः बालकः जलं पिबति ?
इमानि वस्त्राणि कीदृशानि सन्ति ?
क्रीडाक्षेत्रे कति बालकाः कति बालिकाः च क्रीडन्ती ?
कस्मै जनाय धनं देहि ?
कं सर्वे प्रशंसन्ति ?
वहीदा कासु कनिष्ठा अस्ति ?

2. ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਤੋਂ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਿਅ ਅਲੈਦਾ ਕਰੋ।
विशेषणों को विशेष्यों से अलग कीजिए।

एकः बालकः, चत्वारः पुरुषाः, नीलः घटः,
अल्पं दुग्धं, चतुरस्य नरस्य, बालकः सुन्दरः,
पात्रेण ताम्रेण, गभीरात् जलात्, वृक्षस्य हरितस्य।

3. ਠੀਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਲਗਾਕੇ ਵਾਕਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—
उपयुक्त विशेषण लगा कर वाक्य-पूर्ति कीजिये।

जैसे—चतुरः/चतुरा बालिका तिष्ठति। चतुरा बालिका तिष्ठति।

सुन्दरः / सुन्दरी बालकः गच्छति ।
श्वेतं / श्वेतानि पुष्पाणि विकसन्ति ।
बहवः / बहु तरवः अत्र सन्ति ।
इमानि/अयम् वस्त्राणि नवीनानि सन्ति ।
इयं/अयं बालिका सुन्दरं गानं करोति ।

4. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਿਅ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਠੀਕ ਲਿੰਗ, ਵਿਭਕਤੀ ਅਤੇ ਵਚਨ ਲਗਾਓ। ਜਿਵੇਂ—

कोष्ठक में दिये गये विशेषणों में विशेष्य के अनुसार उचित लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन लगाइए।

जैसे—(प्रथम) कक्षा । **प्रथमा** कक्षा ।

(वृद्ध)	पुरुषैः ।	(चपल)	काकानां ।
(बहु)	वृक्षेषु ।	(हरित)	लतायाः ।
(स्वच्छ)	जलस्य ।	(निर्मल)	जलेन ।
(पक्व)	फलानां ।	(शुष्क)	वृक्षात् ।
(सुशील)	बालिकाभिः ।	(सुशील)	बालिके ।

5. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਿਅ ਪਦਾਂ ਵਿਚ ਠੀਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਪਦ ਚੁਣ ਕੇ ਜੋੜੋ। ਜਿਵੇਂ—

पहली पंक्ति में विशेषण-पद दिए गये हैं और दूसरी पंक्ति में विशेष्य-पद। विशेष्य पदों के साथ उचित विशेषण पद जोड़ें।

जैसे—**शुष्काणां काष्ठानाम्।**

वीरः, रक्तासु, तीव्रा, विपुलम्, सुसज्जिताभिः,
दीर्घाः, शुष्कानां, शीतलम्, पक्वम् ।

काष्ठानां, वृक्षाः, बुद्धिः, धनं, लतासु,
नौकाभिः, जलं, फलं, पुरुषः ।

6. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

ਏਹ ਮੁੰਡਾ ਪੁਰਾਣੀ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ। यह लड़का पुरानी किताब पढ़ता है।

ਮੇਰਾ ਕਪੜਾ ਚੰਗਾ ਹੈ ।	मेरा कपड़ा अच्छा है ।
ਗਰੀਬ ਭਿਖਾਰੀ ਭੀਖ ਮੰਗ ਰਿਹਾ ਹੈ ।	गरीब भिखारी भीख माँग रहा है ।
ਉਹ ਠੰਡੇ ਪਾਣੀ ਵਿਚ ਨਹਾਉਂਦਾ ਹੈ ।	वह ठण्डे पानी में नहाता है ।
ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਚਾਰ ਮਾਸਟਰ ਹਨ ।	पाठशाला में चार मास्टर हैं ।
ਇੱਥੇ ਬਹੁਤ ਛਾਤਰ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ ।	यहाँ बहुत छात्र पढ़ते हैं ।
ਚੰਗੇ ਮਿੱਤਰ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਨਾਲ ਮਿਲਦੇ ਹਨ ।	अच्छे मित्र दुर्लभ हैं ।

दधि मधुरं मधु मधुरं, द्राक्षा सिताऽपि मधुरैव ।
तस्य तदेव हि मधुरं, यस्य मनो यत्र संलगति ।।

पञ्चविंशः पाठः

ਸ਼ਤ੍ਰ ਪ੍ਰਤਿਆ, ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ, ਵ੍ਰਿੱਧਿ ਸੰਧੀ।

शतृ प्रत्यय, प्रथमा विभक्ति, वृद्धि सन्धि।

तुषारः गीतं गायन् गच्छति ।

बालकाः पठन्तः आसन् ।

अहं क्रीडन् तं पश्यामि ।

विद्यालयं गच्छन्तः बालकाः गायन्ति ।

गृहं गच्छती बालिका पथि अपतत् ।

गीतं शृण्वन्ती माधुरी अस्वपत् ।

बालिकाः पुस्तकं पश्यन्त्यः पठन्ति ।

गायिकाः गायन्त्यः गीतं शिक्षयन्ति ।

गङ्गैषा हिमालयात् निर्गच्छति ।

ममैतत् पुस्तकं जीर्णम् अस्ति ।

तवैतानि बस्त्राणि नवीनानि सन्ति ।

हनुमान् गन्धमादनपर्वतात् महौषधिम् आनयत् ।

गङ्गौघः सदैव पवित्रः भवति ।

घनेषु वनेषु वनौषधयः मिलन्ति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

गै = गाना	(ਗਾਣਾ)	पथिन् = मार्ग	(ਰਸਤਾ)
श्रु = सुनना	(ਸੁਣਨਾ)	स्वप् = सोना	(ਸੌਣਾ)
शिक्ष् = सीखना	(ਸਿਖਣਾ)	जीर्ण = पुराना	(ਪੁਰਾਣਾ)
नवीन = नया	(ਨਵਾਂ)	गङ्गौघ = गङ्गा का प्रवाह	(ਗੰਗਾ ਦੀ ਧਾਰਾ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देश:)—

1. ਵਰਤਮਾਨ ਕਾਲ ਦਾ ਅਰਥ ਦੱਸਣ ਲਈ ਸ਼ਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰਤਿਆ ਦਾ ਪਰਯੋਗ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਜਿਵੇਂ—'सः पठन् अस्ति' । ਉਹ ਪੜ੍ਹ ਰਿਹਾ ਹੈ । ਇਸ ਪਰਯੋਗ ਤੋਂ ਪਤਾ ਚਲਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕ੍ਰਿਆ ਜਾਰੀ ਹੈ ।

   वर्तमान काल का अर्थ बोध कराने के लिए शतृ प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'सः पठन् अस्ति' (वह पढ़ रहा है)। इस प्रयोग से सूचित होता है कि क्रिया अभी जारी है ।

2. ਪਰਯੋਗ ਵਿਚ ਸ਼ਤ੍ਰਿ (शतृ) ਪ੍ਰਤਿਆ ਦਾ 'ਅਤ' ਹੀ ਸ਼ੇਸ਼ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ 'त' ਦਾ 'न' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—पठ् + शतृ < अत् < अन् = पठन् (ਪੁਂ०) पठन्ती (ਇਸਤ੍ਰੀ०) ।

   प्रयोग करने पर शतृ प्रत्यय का 'अत्' अवशेष रहता है और 'त' का 'न' हो जाता है। जैसे—पठ् + शतृ < अत् < अन् = पठन् (पुं०) पठन्ती (स्त्री०) ।

3. ਜਦੋਂ 'अ' ਜਾਂ 'आ' ਦੇ ਬਾਦ 'ए' ਜਾਂ 'ऐ' ਆਏ ਤਦੋਂ ਦੋਨਾਂ ਦੀ ਥਾਂ ਤੇ 'ऐ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ।

   ਜਦੋਂ 'ओ' ਜ਼ਾਂ 'औ' ਆਏ ਤਾਂ ਦੋਨਾਂ ਦੀ ਥਾਂ ਤੇ 'औ' ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਸੰਧੀ ਨੂੰ ਵ੍ਰਿਧੀ (वृद्धि) ਸੰਧੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ।

   पदान्त 'अ' अथवा 'आ' के बाद पदादि 'ए' अथवा 'ऐ' आवे तो दोनों के स्थान पर "ऐ" हो जाता है, और जब पदादि 'ओ' या 'औ' आवे तो दोनों के स्थान में 'औ' हो जाता है। इस सन्धि को वृद्धि सन्धि कहते हैं ।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

शतृ प्रत्ययान्त, गम् (गच्छ) धातु, प्रथमा विभक्ति

	ए० व०	ब० व०
पुं०	गच्छन्	गच्छन्तः
स्त्री०	गच्छन्ती	गच्छन्त्यः
नपुं०	गच्छत्	गच्छन्ति

वृद्धि सन्धि—

आ + ए = ऐ   गङ्गा + एषा = गंगैषा
ओ + ओ = औ   वन + ओषधि = वनौषधिः
आ + ओ = औ   गङ्गा + औघः = गङ्गौघः

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਪਾਠ ਵਿਚ ਪਰਯੋਗ ਕੀਤੇ ਗਏ ਸ਼ਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਪਛਾਣੋਂ ।
   पाठ में प्रयुक्त शतृ-प्रत्ययान्त पदों को पहचानिए ।

2. ਪਾਠ ਵਿਚ ਪਰਯੋਗ ਕੀਤੇ ਗਏ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਸ਼ਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਅਲੈਦਾ ਕਰੋ ।
   पाठ में प्रयुक्त स्त्रीलिंग शतृ-प्रत्यान्त पदों को अलग कीजिए ।

3. ਹੇਠਾਂ ਦਿਤੀਆਂ ਹੋਇਆ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਸ਼ਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰਤਿਆ ਜੋੜ ਕੇ ਇਕ ਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਪੁੰਲਿੰਗ ਸਬਦਰੂਪ ਬਣਾਓ । ਜਿਵੇਂ—
   निम्नलिखित धातुओं से शतृ प्रत्यय जोड़कर एकवचन तथा बहुवचन में पुंलिग शब्दरूप बनाइए ।
   जैसे—पा (पिब्) + शतृ (अन्) = पिबन् (ए० व०) पिबन्तः (ब० व०) ।

   पा, हृ, वद्, पत्, भ्रम्, भू, गम् ।

4. ਹੇਠਾਂ ਦਿਤੀਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਸ਼ਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰਤਿਆ ਜੋੜ ਕੇ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਪ੍ਰਥਮਾ ਵਿਭਕਤੀ ਦੇ ਇਕਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਸ਼ਬਦਰੂਪ ਬਣਾਓ। ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित धातुओं से शतृप्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंग प्रथमा विभक्ति के एकवचन तथा वहुवचन में शब्दरूप वनाइए।

जैसे—खाद् + शतृ + (अन्) = **खादन्ती** (ए० व०) **खादन्त्यः** (व० व०)।

पा, कृ, गम्, हस्, लिख्, चल्, क्रुध्।

5. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਪੁਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਰੂਪ ਬਣਾਓ। ਜਿਵੇਂ—

निम्नलिखित, शतृ प्रत्ययान्त पुंलिङ्ग शब्दों का स्त्रीलिङ्ग में रूप बनाइये।

जैसे—तरन् = **तरन्ती** (स्त्री०)।

गच्छन्, पठन्, पश्यन्, स्मरन्, गायन्।

6. ਸੰਧੀ ਜੋੜੋ। ਜਿਵੇਂ—

सन्धि विच्छेद कीजिये। जैसे—तथैव = **तथा + एव**।

वनौषधि, महौषधि, गङ्गैषा, सैव, तदैव, सदैव।

7. ਸੰਧੀ ਕਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

सन्धि कीजिये। जैसे—अद्य + एव = **अद्यैव**।

एक	+	एकः	=
तथा	+	एव	=
तव	+	औषधम्	=
जल	+	ओघः	=
मत	+	ऐक्यम्	=

8. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਹਰੀਸ਼ ਖਾਂਦਾ ਹੋਇਆ ਕਿਤਾਬ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ ।	हरीश खाता हुआ पुस्तक पढ़ता है ।
ਰਮਾ ਪੜ੍ਹਦੀ ਹੋਈ ਖਾਂਦੀ ਹੈ ।	रमा पढ़ती हुई खाती है ।
ਮੈਂ ਸੌਂਉਂਦਾ ਹੋਇਆ ਬੋਲਦਾ ਹਾਂ ।	मैं सोता हुआ बोलता हूँ ।
ਅਸੀਂ ਹਸਦੇ ਹੋਏ ਗਾਣੇ ਸੁਣਦੇ ਹਾਂ ।	हम हँसते हुए गाना सुनते हैं ।
ਆਰਾਧਨਾ ਗੀਤ ਗਾਂਦੀ ਹੋਈ ਕੱਮ ਕਰਦੀ ਹੈ ।	आराधना गीत गाती हुई काम करती है ।

9. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

अपनी भाषा में अनुवाद कीजिये ।

अहं ग्रामं गच्छन् कृषिम् अपश्यम् ।
सीता फलं खादन्ती विद्यालयं गच्छति ।
वालकाः तरन्तः स्नानं कुर्वन्ति ।
माता स्तोत्रं पठन्ती देवं पूजयति ।
सः कन्दुकं क्रीडन् अपतत् ।
भिक्षुकाः भिक्षां याचन्तः भ्रमन्ति ।
बालिकाः गायन्त्यः क्रीडन्ति ।
विकसत् पुष्पं मनोहरं भवति ।

स्पृशन्नपि गजो हन्ति, जिघ्रन्नपि भुजङ्गमः ।
हसन्नपि नृपो हन्ति, मानयन्नपि दुर्जनः ।।

षड्विंशः पाठः

ਇਕਾਰਾਂਤ ਪੁੰਲਿੰਗ, ਈਕਾਰਾਂਤ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ।

इकारान्त पुंलिंग, ईकारान्त स्त्रीलिंग ।

मुनयः आश्रमे निवसन्ति । ते सूर्योदयात् प्राक् एवोत्तिष्ठन्ति ।
तत्र शिष्याः मुनीन् प्रणमन्ति । प्रभातकाले भक्ताः हरिं भजन्ति ।
कविना काव्यं रचितम् । कविभिः काव्यपाठः कृतः ।
सा अतिथिभ्यः स्वादुभोजनं ददाति । गिरेः लङ्घनं दुष्करं भवति ।
कवीनां हृदयं कोमलं भवति । गिरौ वन्याः जन्तवः भ्रमन्ति ।
गिरिषु हिमालयः श्रेष्ठः । हे हरे ! अस्मान् रक्ष ।
संस्कृतपठने मम रुचिः अस्ति । अधुना नार्यः अपि संस्कृतं पठन्ति ।
प्रयत्नशीलः नरः उन्नतिं प्राप्नोति । भक्त्या ईश्वरः प्रसन्नः भवति ।
नद्याः जलेन बहवः लाभाः सन्ति । सर्वासां नदीनां पतिः सागरः ।
नद्यां स्नानं हितकरम् । वर्षाकाले नदीषु जलवृद्धिः भवति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

प्राक् = पहले (ਪਹਿਲਾਂ) रवि = सूर्य (ਸੂਰਜ)
लङ्घन = लांघना (ਲੰਘਣਾਂ) वन्य = जंगली (ਜੰਗਲੀ)
दुष्कर = कठिन (ਮੁਸ਼ਕਲ) जन्तु = जानवर (ਜਾਨਵਰ)
प्रयत्नशील = कोशिश करने वाला (ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਨ ਵਾਲਾ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਪੁਲਿੰਗ ਈਕਾਰਾਂਤ (ईकारान्त) ਸ਼ਬਦ ਅਕਸਰ ਦੇਖਣ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਔਂਦੇ ਹਨ, ਇਸਲਈ ਇਸ ਪਾਠ ਵਿਚ ਈਕਾਰਾਂਤ ਪੁਲਿੰਗ ਦੇ ਉਦਾਹਰਣ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਹਨ।

संस्कृत में पुं० ईकारान्त शब्द प्रायः देखने में नहीं आते हैं, अतएव इस पाठ में ईकारान्त पुं० के उदाहरण नहीं दिये गये हैं।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

इकारान्त पुं० 'कवि' शब्द

विभक्ति	ए० व०	ब० व०
प्र०	कविः	कवयः
द्वि०	कविम्	कवीन्
तृ०	कविना	कविभिः
च०	कवये	कविभ्यः
प०	कवेः	कविभ्यः
ष०	कवेः	कवीनाम्
स०	कवौ	कविषु
सं०	हे कवे !	हे कवयः !

ਦੂਜੇ ਇਕਾਰਾਂਤ ਪੁਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦਾ ਦੇ ਰੂਪ ਵੀ ਕਵਿ ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਤਰਹਾਂ ਹੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

मुनि, हरि, ऋषि, इत्यादि ह्रस्व इकारान्त पुं० शब्दों के रूप भी कवि शब्द की ही तरह होते हैं।

ईकारान्त स्त्री० 'नदी' शब्द

विभक्ति	ए० व०	ब० व०
प्र०	नदी	नद्यः

विभक्ति	ए० व०	ब० व०
द्वि०	नदीम्	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभिः
च०	नद्यै	नदीभ्यः
प०	नद्याः	नदीभ्यः
ष०	नद्याः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	नदीषु
सं०	हे नदि !	हे नद्यः

ਦੂਜੇ ਈਕਾਰਾਂਤ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵੀ 'ਨਦੀ' ਸਬਦ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

पार्वती, गौरी, जानकी, कुमारी, भगिनी, नगरी आदि दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी 'नदी' के समान होते हैं।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਉੱਤਰ ਦਿਓ।

   अपने पाठ से संस्कृत में उत्तर दीजिए।

   आश्रमे के निवसन्ति ?

   कस्य लङ्घनं दुष्करम् ?

   शिष्याः कं प्रणमन्ति ?

   गिरिषु कः श्रेष्ठः ?

   प्रयत्नशीलः नरः किं प्राप्नोति ?

   ईश्वरः कया प्रसन्नः भवति ?

   वर्षाकाले कुत्र जलवृद्धिः भवति ?

2. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ਜੋਗ ਵਿਭਕਤੀ ਲਗਾਓ।

कोष्ठक में दिए गये शब्दों में उचित विभक्ति जोड़िये ।

अस्मिन् आश्रमे ···· ···· ···· अस्ति । (मुनि)
पृथिव्याः शोभा ···· ···· ···· भवति । (भूपति)
भ्रातरः ···· ···· ···· रक्षकाः भवन्ति । (भगिनी)
गृहस्थानां गृहेषु···· ····आदरः भवति । (अतिथि)
नवरात्रेषु ···· ···· ···· पूजनं भवति । (कुमारी)
संसारे जनाः···· ···पीडिताः भवन्ति । (व्याधि)

3. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਦਾ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪਰਯੋਗ ਕਰੋ ।
निम्नलिखित पदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

भगिन्याः, कुमारीम्, नगरीषु, नदीनाम्, ऋषीणाम्,
गिरौ, रुचिः, कवये, शशिना ।

4. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਤੀਜੀ, ਚੌਥੀ, ਛੇਵੀਂ ਅਤੇ ਸਾਤਵੀਂ ਦੇ ਇਕਵਚਨ ਅਤੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਲਿਖੋ ।
निम्नलिखित शब्दों के रूप तृतीया, चतुर्थी, षष्ठी तथा सप्तमी के एकवचन एवं बहुवचन में लिखिए ।

गिरि, ऋषि, रवि, पति, नारी, गौरी ।

5. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਠੀਕ ਪਦ ਛਾਂਟ ਕੇ ਵਾਕਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰੋ ।
कोष्ठक में दिए गये पदों में से योग्य पदों से वाक्य पूर्ति कीजिए ।

गजाः कदलीफलं खादिष्यन्ति/द्रक्ष्यन्ति ।
नद्यः जलं स्वयं पिबन्ति / न पिबन्ति ।
सज्जनानां संगत्या लाभः / हानिः भवति ।
वानराः फलानि मुखेन / चरणेन खादन्ति ।
रामस्य विवाहः जानक्या/जानक्याः सह अभवत् ।
पृथिव्याः शोभा भूपतिना / भूपतेः भवतिः ।

6. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

ਹਰੀ ਨੇ ਹਾਥੀ ਦੀ ਰਕਸ਼ਾ ਕੀਤੀ।	हरि ने गज की रक्षा की।
ਬਾਂਦਰਾਂ ਨੇ ਰਾਮ ਦੀ ਸਹਾਇਤਾ ਕੀਤੀ।	कपियों ने राम की सहायता की।
ਮੁਨੀਆਂ ਨੇ ਦੇਵਤਾਵਾਂ ਦੀ ਸਤੁਤੀ ਕੀਤੀ।	मुनियों ने देवताओं की स्तुति की।
ਕਵੀਆਂ ਨੇ ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਪੜ੍ਹੀਆਂ।	कवियों ने कविताएँ पढ़ीं।
ਨਾਰੀਆਂ ਨੇ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਕੀਤੀ।	नारियों ने क्रान्ति की।
ਲਛਮੀਬਾਈ ਝਾਂਸੀ ਦੀ ਰਾਣੀ ਸੀ।	लक्ष्मीबाई झांसी की रानी थी।

7. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਰਥ ਲਿਖੋ।
अपनी भाषा में अर्थ लिखिए।

कपीनां सहायतया रामः विजयी अभवत्।
काश्यां श्रीविश्वनाथस्य मंदिरम् अस्ति।
रवेः प्रकाशः स्वास्थ्यकरः भवति।
मुनेः आश्रमः रमणीयः शान्तिप्रदश्च भवति।

8. ਵਚਨ ਅਤੇ ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਕਰੋ।
वचन तथा विभक्ति का निर्देश कीजिए।

महीपतेः, कुमार्याः, रवौ, हरीन्, कवयः, भूपतिषु,
नदीभिः, भगिनीभ्यः, लक्ष्मीणाम्, स्त्रीः।

सत्यानुसारिणी लक्ष्मीः, कीर्तिस्त्यागानुसारिणी।
अभ्याससारिणी विद्या, बुद्धिः कर्मानुसारिणी।

सप्तविंशः पाठः

ਉਕਾਰਾਂਤ ਪੁੱਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਸਾਰੀਆਂ ਵਿਭਕਤੀਆਂ ਵਿਚ ਰੂਪ ।

उकारान्त पुल्लिंग शब्द के सभी विभक्तियों में रूप ।

पूर्वस्यां दिशि भानुः उदेति ।
शत्रवः सर्वे पराजिताः ।
इन्दुं पश्यति बालकः ।
भक्तः साधून् सेवते ।
शत्रुणा पराजितः राजा ।
वन्यैः जन्तुभिः मनुष्याः हताः ।
शिशुभ्यः मोदकं रोचते ।
तरोः पक्वं फलं पतति ।
मनुष्याः जन्तुभ्यः भयभीताः भवन्ति ।
शिशूनां क्रीडनकम् एतत् ।
उदिते भानौ कमलानि विकसन्ति ।
तरुषु चन्दनतरुः श्रेष्ठः ।
प्रभो ! मां विपदः त्राहि ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

भानु = सूर्य (ਸੂਰਜ) इन्दु = चन्द्रमा (ਚੰਦਰਮਾ)
सेव् = सेवा करना (ਸੇਵਾ ਕਰਨਾ) जन्तु = जानवर (ਜਾਨਵਰ)
मोदक = लड्डू (ਲੱਡੂ) क्रीडनक = खिलौना (ਖਿਡੌਣਾ)
तरु = पेड़ (ਰੁਖ) विपत् = विपत्ति (ਬਿਪਦਾ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

ਜਿਸ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਆਖੀਰ ਵਿਚ ਉਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਸ ਨੂੰ ਉਕਾਰਾਂਤ ਸ਼ਬਦ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਉਕਾਰਾਂਤ ਸ਼ਬਦ ਤਿੱਨਾ ਲਿੰਗਾ ਵਿਚ ਮਿਲਦੇ ਹਨ।

जिस शब्द के अन्त में 'उकार' हो, उसे उकारान्त शब्द कहते हैं। उकारान्त शब्द तीनों लिगों में मिलते हैं।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

उकारान्त पुंल्लिग 'भानु' शब्द के रूप

	ए० व०	ब० व०
प्र०	भानुः	भानवः
द्वि०	भानुम्	भानून्
तृ०	भानुना	भानुभिः
च०	भानवे	भानुभ्यः
पं०	भानोः	भानुभ्यः
ष०	भानोः	भानूनाम्
स०	भानौ	भानुषु
सं०	हे भानो !	हे भानवः !

ਹੋਰ ਉਕਾਰਾਂਤ ਪੁੰਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵੀ ਇਸੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

शत्रु, इन्दु, साधु, जन्तु, गुरु, शिशु, तरु इत्यादि शब्दों के रूप भी इसी प्रकार होते हैं।

ਅਭਿਯਾਸ (अभ्यासः)—

1. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਉੱਤਰ ਦਿਓ।

अपने पाठ से उत्तर दीजिए।

कस्यां दिशि भानुः उदेति ?

कं पश्यति बालकः ?

भक्तः कान् सेवते ?
मोदकं केभ्यः रोचते ?
कस्मिन् उदिते कमलानि विकसन्ति ?

2. ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਕਰੋ ।
विभक्ति का निर्देश कीजिये ।

इन्दुना, शत्रुभ्यः, साधून्, गुरूणां, जन्तुभिः,
तरुषु, शिशोः, इन्दुं, साधोः ।

3. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए ।

पशुः वने तिष्ठति ।
नद्याः तीरे चन्दनतरुः शोभते ।
छात्रः गुरुं सेवते ।
बालिका इन्दुं पश्यति ।
शत्रुभिः नृपः हतः ।

4. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਰੂਪ ਲਿਖੋ ।
निम्नलिखित शब्दों का कोष्ठक में दिए निर्देश के अनुसार रूप लिखिए ।

गुरु (षष्ठी ए० व०) साधु (प्रथमा व० व०)
पशु (द्वितीया व० व०) विभु (चतुर्थी ए० व०)
भानु (पञ्चमी ए० व०) पशु (षष्ठी व० व०)
तरु (सम्बोधन ए० व०) शम्भु (तृतीया ए० व०)
इन्दु (सप्तमी व० व०) रिपु (सप्तमी व० व०)

5. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਵਿਭਕਤੀ ਦੇ ਨਾਲ ਰੂਪ ਵਿਖਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ, ਉਨਾਂ ਦੇ ਮੂਲ ਸ਼ਬਦ ਲਿਖੋ।
नीचे कतिपय शब्दों का विभक्ति के साथ रूप दिखाया गया है, उनका मूल शब्द लिखिये।

वेणवे, परमाणोः, अणुनः, प्रभवः,
इन्दोः, शत्रूणाम्, साधौ, भानुषु।

6. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

ਉਹ ਦੁਸ਼ਮਣ ਤੋਂ ਡਰਦੇ ਹਨ।	वे शत्रु से डरते हैं।
ਇਹ ਜੰਗਲ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਜਾਨਵਰ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ।	इस वन में बहुत से जानवर रहते हैं।
ਬੱਚਾ ਗੇਂਦ ਨਾਲ ਖੇਡਦਾ ਹੈ।	शिशु गेंद से खेलता है।
ਗੁਰੂ ਦਾ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ ਭਲੇ ਲਈ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।	गुरु का आशीर्वाद हित के लिए होता है।
ਉਹ ਚਾਂਦ ਨੂੰ ਵੇਖਦੀ ਹੈ।	वह चाँद को देखती है।
ਸਾਧੂ ਸਬ ਦੀ ਭਲਾਈ ਕਰਦਾ ਹੈ।	साधु सब की भलाई करता है।

यथा चित्तं तथा वाणी, यथा वाणी तथा क्रिया।
चित्ते वाचि क्रियायां च, साधूनामेकरूपता ॥

अष्टाविंशः पाठः

ਉਕਾਰਾਂਤ, ਊਕਾਰਾਂਤ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਸਾਰੀਆਂ ਵਿਭਕਤੀਆਂ ਵਿਚ ਰੂਪ ।

उकारान्त, ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द के सभी विभक्तियों के रूप ।

सायंकाले धेनवः गृहम् आगच्छन्ति ।
वधूः गुरोः सेवां करोति ।
धेनवः तृणानि खादन्ति ।
राजा विप्रेभ्यः धेनुं ददाति ।
श्वश्रूः वध्वा पूजिता ।
गोपालः रज्जूभिः धेनूः बध्नाति ।
कृष्णः धेनवे घासं ददाति ।
माता वधूभ्यः वदति ।
शिशुः धेनुभ्यः भयभीतः ।
कृष्णधेन्वाः दुग्धं मधुरं भवति ।
सर्वे प्राणिनः पृथिव्यां निवसन्ति ।
वधूषु कनिष्ठा विनीता ।
तीर्थस्य रेणुभिः अपि पापक्षयः भवति ।
हे चमु ! पराक्रमं कुरु ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

धेनु = गाय	(ਗਾਂ)		वधू = वहू	(ਵਹੁਟੀ)
तृण = घास	(ਘਾਂ)		विप्र = ब्राह्मण	(ਬਾਹਮਣ)

रज्जू	= रस्सी (ਰੱਸੀ)	वध्	= बाँधना (ਬੰਨ੍ਹਣਾ)
कनिष्ठा	= छोटी (ਛੋਟੀ)	रेणु	= धूल (ਧੂੜ)
चमु	= सेना (ਸੈਨਾ)	पराक्रम	= वीरता (ਵੀਰਤਾ)

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द के रूप ।

	ए० व०	ब० व०
प्र०	धेनुः	धेनवः
द्वि०	धेनुम्	धेनूः
तृ०	धेन्वा	धेनुभिः
च०	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्यः
पं०	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्यः
ष०	धेन्वाः, धेनोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वाम्, धेनौ	धेनुषु
संबो०	हे धेनो !	हे धेनवः !

ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द के रूप

	ए० व०	ब० व०
प्र०	वधूः	वध्वः
द्वि०	वधूम्	वधूः
तृ०	वध्वा	वधूभिः
च०	वध्वै	वधूभ्यः
पं०	वध्वाः	वधूभ्यः
ष०	वध्वाः	वधूनाम्
स०	वध्वाम्	वधूषु
संबो०	हे वधु !	हे वध्वः !

'ਤਨੁ', 'ਰੇਣੁ' ਆਦਿ ਉਕਾਰਾਂਤ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ 'ਧੇਨੁ' ਅਤੇ 'ਚਮੂ', 'ਰੱਜੂ', 'ਸ਼ਵਸ਼੍ਰੂ', ਊਕਾਰਾਂਤ ਇਸ਼ਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ 'ਵਧੂ' ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਲਦੇ ਹਨ।

तनु, रेणु, इत्यादि उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'धेनु' तथा चमू, रज्जू, श्वश्रू इत्यादि ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप 'वधू' के समान चलते हैं।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਉੱਤਰ ਦਿਓ।

अपने पाठ से उत्तर दीजिए।

सायंकाले काः गृहं आगच्छन्ति ?
धेनवः किं खादन्ति ?
गोपालः काभिः धेनूः बध्नाति ?
कस्याः दुग्धं मधुरं भवति ?
कस्यां निवसन्ति प्राणिनः ?
विनीता कासु कनिष्ठा ?
काभिः पापक्षयः भवति ?
कृष्णः घासं कस्यै ददाति ?

2. ਵਿਭਕਤੀ ਦਾ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਕਰੋ।

विभक्ति का निर्देश करें।

रज्वा, वधूः, धेनुम्, वध्वाः,
श्वश्रूः, धेनूनाम्, तरुषु, चमूनाम्।

3. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਰੂਪ ਲਿਖੋ।

निम्नलिखित शब्दों का कोष्ठक में दिये गये निर्देश के अनुसार रूप लिखें।

धेनु (तृ० व० व०)	वधू (द्वि० ए० व०)
रज्जू (पं० ए० व०)	लघु (तृ० ए० व०)
तनु (स० ए० व०)	सुभ्रू (स० व० व०)
चमू (प० ए० व०)	श्वश्रू (संबो० ए० व०)

4. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਦੇ ਮੂਲ ਸ਼ਬਦ ਲਿਖੋ।
निम्नलिखित पदों के मूल शब्द लिखिए।

वध्वा, भुवा, रज्ज्वाः, तनुम्,
लघुभिः, धेन्वाम्, चमूषु, श्वश्रूम्।

5. ਸੰਸਕ੍ਰਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

ਗਊ (ਧੇਨੁ) ਜੰਗਲ ਵਿਚ ਚਰਦੀ ਹੈ।	धेनु जंगल में चरती है।
ਉਹ ਜਾਨਵਰ ਨੂੰ ਰੱਸੀ ਨਾਲ ਖਿਚਦੀ ਹੈ।	वह जानवर को रस्सी से खींचती है।
ਧਰਤੀ ਉੱਤੇ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਾਣੀ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ।	धरती पर बहुत प्राणी रहते हैं।
ਧੇਨੂ ਦਾ ਦੁੱਧ ਮਿੱਠਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।	धेनु का दूध मीठा होता है।
ਨੂੰਹ ਸੱਸ਼ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਦੀ ਹੈ।	वहू सास की सेवा करती है।
ਧੇਨੁ ਘਾਸ ਖਾਂਦੀ ਹੈ।	धेनु घास खाती है।
ਪ੍ਰਿਥਵੀ ਬਹੁਤ ਸੁੰਦਰ ਹੈ।	पृथ्वी बहुत सुन्दर है।
ਪ੍ਰਿਧਵੀ ਦਾ ਆਕਾਰ ਗੋਲ ਹੈ।	पृथ्वी का आकार गोल है।
ਸੇਵਕ ਘੋੜੇ ਨੂੰ ਰੱਸੀ ਨਾਲ ਬਾਂਧਦਾ ਹੈ।	सेवक घोड़े को रस्सी से बाँधता है।

6. ਬਰੇਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾ ਨਾਂਲ ਜੋਗ ਵਿਭਕਤੀ ਲਗਾ ਕੇ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

कोष्ठक में दिए गए शब्दों के साथ उपयुक्त विभक्ति लगाकर रिक्त स्थान भरें।

जैसे—(भू) .... प्राणिनः सुखिनः भवन्तु।

भुवि प्राणिनः सुखिनः भवन्तु।

(श्वश्रू) .... वध्वै क्रुध्यति ।

(वधूः) ....स्वभावः प्रशंसनीयः।

(धेनु) .... वने चरन्ति।

(रज्जू) .... गां बध्नाति।

(भू) ....राजा शासति।

7. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए।

धेनवः वनं गच्छन्ति ।

चम्वः राष्ट्ररक्षकाः भवति ।

गोपालः धेनुम् आनयन्ति ।

वधूः श्वश्रूं प्रणमति ।

श्वश्रूः वध्वै उपहारं ददाति ।

8. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਦੂਤਿਆ, ਚਤੁਰਥੀ, ਸ਼ਸ਼ਠੀ ਅਤੇ ਸੰਬੋਧਨ ਵਿਚ ਰੂਪ ਲਿਖੋ ।

निम्नलिखित शब्दों का द्वितोया, चतुर्थी, षष्ठी तथा सम्बोधन में रूप लिखिए।

लघु, तनु, भू, वधू, धेनु ।

नमस्त्रिभुवनोत्पत्ति - स्थिति -'संहार - हेतवे।

विष्णवेऽपार - संसार - पारोत्तरण - सेतवे ॥

एकोनत्रिंशत् पाठः

ਰਿਕਾਰਾਂਤ ਪੁਲਿੰਗ, ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦ ।

ऋकारान्त पुं०, स्त्री० शब्द ।

संसारस्य पालनकर्ता ईश्वरः ।

पुत्राः पितरं प्रणमन्ति ।

विधात्रा अखिलस्य विश्वस्य रचना कृता ।

दातृभिः दानं दातव्यम् ।

लक्ष्मणः भ्रात्रे समर्पितः आसीत् ।

भगिनी भातृद्वितीयायां भातॄन् तिलकं करोति ।

स्वसारः भ्रातृभ्यः मङ्गलकामनां कुर्वन्ति ।

भ्रातरः तस्मिन् दिने स्वसॄणां गृहे आगच्छन्ति ।

भ्रातरः स्वसृभ्यः वस्त्रादिकं च ददति ।

पितुः आज्ञया रामः वनं गतवान् ।

वक्तॄणां भाषा सरसा सरला च भवितव्या ।

कमला स्व - भ्रातरि स्निह्यति ।

दुहितरः मातरं स्निह्यन्ति ।

मातुः अंके निलीयते कृष्णः ।

वालकैः मातुः सेवा कर्तव्या ।

हे विधातः ! अपनय दोषान् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोश:)—

विधातृ = विधाता	(ਵਿਧਾਤਾ)	दातृ = दाता	(ਦਾਤਾ)
भगिनी = बहन	(ਭੈਣ)	स्वसृ = बहन	(ਭੈਣ)
वक्तृ = बोलने वाला	(ਬੋਲਣ ਵਾਲਾ)	दुहितृ = लड़की	(ਕੁੜੀ)
अंक = गोद	(ਗੋਦ)	नि√ली = छुपना	(ਲੁਕਣਾ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देश:)—

1. ਜੇੜੇ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਆਖੀਰ ਵਿਚ 'ऋ' ਜਾਂ 'ॠ' ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਸ ਸ਼ਬਦ ਨੂੰ ਰਿਕਾਰਾਂਤ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਪਾਠ ਵਿਚ ਰਿਕਾਰਾਂਤ ਪੁਲਿੰਗ ਅਤੇ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਦੱਸੇ ਗਏ ਹਨ।

   जिस शब्द के अन्त में 'ऋ' या 'ॠ' होता है, उस शब्द को ऋकारान्त कहा जाता है। इस पाठ में ऋकारान्त पुं० तथा स्त्री० शब्दों का रूप बताया गया है।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

ऋकारान्त पुं० 'पितृ' शब्द

	ए० व०	ब० व०
प्र०	पिता	पितर:
द्वि०	पितरम्	पितॄन्
तृ०	पित्रा	पितृभि:
च०	पित्रे	पितृभ्य:
पं०	पितु:	पितृभ्य:
ष०	पितु:	पितॄणाम्
स०	पितरि	पितृषु
सम्बो०	हे पित: !	हे पितर: !

ऋकारान्त स्त्री० 'मातृ' शब्द

	ए० व०	ब० व०
प्र०	माता	मातरः
द्वि०	मातरम्	मातॄः
तृ०	मात्रा	मातृभिः
च०	मात्रे	मातृभ्यः
पं०	मातुः	मातृभ्यः
ष०	मातुः	मातॄणाम्
स०	मातरि	मातृषु
सं०	हे मातः !	हे मातरः !

2. ਏਦਾਂ ਹੀ 'भ्रातृ, जामातृ, नृ' ਅਤੇ ਲਗਭਗ ਸਾਰੇ ਰਿਕਾਰਾਂਤ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਚਲਦੇ ਹਨ। ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਰਿਕਾਰਾਂਤ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਦੁਤਿਆ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਥੋੜਾ ਬਦਲਾਵ ਔਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ—'मातृ' (ਮਾਤਾ) ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਦੁਤਿਆ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ 'मातॄः' ਰੂਪ ਬਣਦਾ ਹੈ। ਬਾਕੀ ਰੂਪ ਪੁੰਲਿੰਗ 'पितृ' ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਤਰਹਾਂ ਹੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

भ्रातृ, जामातृ, नृ आदि सभी ऋकारान्त शब्दों के रूप इसी प्रकार चलते हैं। स्त्रीलिंग ऋकारान्त शब्दों के द्वितीया बहुवचन में थोड़ा परिवर्तन होता है। जैसे—मातृ (माता) शब्द के द्वितीया ब० व० में 'मातॄः' रूप बनता है, शेष रूप पुंलिग 'पितृ' शब्द की ही भाँति होता है।

ऋकारान्त पुंलिग दातृ (दाता)

	ए० व०	ब० व०
प्र०	दाता	दातारः
द्वि०	दातारम्	दातॄन्

ਸ਼ੇਸ਼ ਰੂਪ 'ਪਿਤ੍ਰ' ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ। ਏਦਾਂ ਹੀ 'ਕਰ੍ਤ੍ਰ, 'ਧਾਤ੍ਰ, ਵਿਧਾਤ੍ਰ, ਵਕਤ੍ਰ, ਸ਼੍ਰੋਤ੍ਰ' ਆਦਿ ਦੇ ਰੂਪ ਵੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

शेष रूप पितृ शब्द की भाँति। इसी प्रकार कर्तृ, धातृ, विधातृ, वक्तृ, श्रोतृ, आदि के रूप भी होते हैं।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਉੱਤਰ ਦਿਓ।

अपने पाठ से संस्कृत में उत्तर दीजिये।

कः संसारस्य पालनकर्ता ?
लक्ष्मणः कस्मै समर्पितः आसीत् ?
कस्य आज्ञया रामः वनम् अगच्छत् ?
वक्तृणां भाषा कीदृशी भवितव्या ?
बालकैः कस्य सेवा कर्तव्या ?

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਦੇ ਵਿਭਕਤੀ ਅਤੇ ਵਚਨ ਦਾ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਕਰੋ।

निम्नलिखित पदों के वचन तथा विभक्ति का निर्देश करें।

मातुः, दातुः विधात्रे, श्रोतारः,
कर्तॄणाम्, धातृभिः, दात्रा, पितॄन्।

3. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਚੌਥੀ, ਛੇਵੀਂ ਅਤੇ ਸੱਤਮੀ ਦੇ ਬਹੁਵਚਨ ਵਿਚ ਰੂਪ ਲਿਖੋ।

निम्नलिखित शब्दों के चतुर्थी, षष्ठी तथा सप्तमी वहुवचन में रूप लिखिये।

स्वसृ, दुहितृ, कर्तृ, भ्रातृ तथा वक्तृ।

4. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਠੀਕ ਵਿਭਕਤੀ ਨਾਲ ਵਾਕਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਕਰੋ।

कोष्ठक में दिये गये शब्दों में उचित विभक्ति लगाकर वाक्य-पूर्ति कीजिए।

(वक्तृ)···· ···· ···· भाषणं समीचीनम् आसीत् ।
(हे मातृ)···· ···· ···· अन्नं देहि ।
(दातृ)···· ···· ···· अभिमानरहितैः भवितव्यम् ।
(मातृ)···· ···· ···· आज्ञायाः पालनं कर्तव्यम् ।
(भ्रातृ)···· ···· ···· सह स्नेहः कर्तव्यः ।
(मातृ)···· ···· ···· बुभुक्षितः बालकः आह्वयति ।
(पितृ)···· ···· ···· पुत्रात् पराजयम् इच्छति ।

5. ਹੇਠਾ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਠੀਕ ਪਦ ਛਾਂਟ ਕੇ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ।
निम्नलिखित पदों में से उचित पदों द्वारा रिक्त स्थान भरें ।

मातरम्, पितरम्, स्वसारं, भ्रातृभ्यः, मातुः, दातरम् ।

भ्राता ···· ···· ···· ···· ···· आमन्त्रयति ।
भगिन्यः ···· ···· ···· ····मोदकानि ददति ।
बुभुक्षितः शिशुः ···· ···· ···· ···· स्मरति ।
पुत्रः ···· ···· ···· ···· ···· पत्रं लिखति ।
रामः···· ···· ···· ···· प्रणामम् अकरोत् ।
याचकः ···· ···· ···· ···· ···· ···· पश्यति ।

6. 'स्वसृ' ਅਤੇ 'दातृ' ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਸਾਰੀ ਵਿਭਕਤੀਆਂ ਵਿਚ ਲਿਖੋਂ ।
'स्वसृ' तथा 'दातृ' शब्दों के रूप सभी विभक्तियों में लिखिये ।

7. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए ।

पुत्रैः पितुः सेवा कर्तव्या ।
भ्रातृणां स्वसृषु स्नेहः वर्तते ।
दुहितृणां कृते अपि अध्ययनम् आवश्यकम् ।
अद्य स्वसारः स्व-भ्रातृणां गृहे आगमिष्यन्ति ।
भ्रातरः परस्परं कलहं कुर्वन्ति ।

7. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।

संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिये ।

ਹੇ ਵਿਧਾਤਾ ! ਤੂੰ ਇਹ ਕੀ ਕੀਤਾ ।	हे विधाता ! तूने यह क्या किया ।
ਚੰਗੇ ਸ੍ਰੋਤਾ ਘਟ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।	अच्छे श्रोता दुर्लभ होते हैं।
ਕਾਰਜਕਰਤਾਵਾਂ (ਕੱਮਕਰਣਵਾਲੇ) ਨੂੰ ਕਰਮਠ ਹੋਣਾ ਚਾਹਿਦਾ ਹੈ।	कार्यकर्ताओं को कर्मठ होना चाहिये ।
ਮਾਤਾ ਦਾ ਦਿਲ ਕੋਮਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ।	माता का हृदय कोमल होता है ।
ਭੈਣ ਭਾਈ ਦਾ ਪਰੇਮ ਪਵਿਤਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।	वहन भाई का प्रेम पवित्र होता है ।
ਪੁੱਤਰ ਪਿਤਾ ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ।	पुत्र पिता का सम्मान करता है ।
ਭਾਈ ਭੈਣ ਦਾ ਰਖਵਾਲਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।	भाई बहन का रक्षक होता है।

किं करिष्यन्ति वक्तारः, श्रोता यत्र न विद्यते ।
नग्नक्षपणके देशे, रजकः किं करिष्यति ।।

त्रिंशः पाठः

ਹਲੰਤ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਕੁਛ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਰੂਪ)

हलन्त शब्द के कुछ प्रचलित रूप ।

चन्द्रमा आकाशे शोभते ।

विद्वांसः प्रायशः धनिनः न भवन्ति ।

भवन्तः कुत्र गच्छन्ति ?

भक्ताः भगवन्तं पूजयन्ति ।

हस्तिनः केवलं स्वस्वामिनं शृण्वन्ति ।

जन्मना जायते शूद्रः ।

सत्कर्मभिः सत्पुरुषाः भवन्ति ।

राजा विदुषे धनं ददाति ।

गुणिभ्यः नमः ।

हे प्रभो ! मां विपदः रक्ष ।

सन्यासिनः संपद्भ्यः विरक्ता भवन्ति ।

अत्रागमने भवतां कोऽभिप्रायः ?

भवतः पत्रं प्राप्तम् ।

सर्वे संपत्सु सखायः भवन्ति ?

सरसि हंसाः तरन्ति ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

चन्द्रमस् = चाँद (ਚੰਦ) सरस् = तालाब (ਤਲਾ)

तृ = तैरना (ਤਰਨਾ) विपत् = विपत्ति (ਵਿਪਦਾ)

विरक्त = वैरागी (ਵਿਰਾਗੀ) अभिप्राय = आशय (ਮਤਲਬ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

1. ਜਿਹੜੇ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਆਖੀਰ ਵਿਚ ਸਵਰ ਨਾ ਹੋਏ ਉਸ ਨੂੰ ਹਲੰਤ (हलन्त) ਸ਼ਬਦ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।

   जिस शब्द के अन्त में स्वर न हो, उसको 'हलन्त' शब्द कहते हैं। जैसे—सरित्, विद्वस् आदि।

ਵਿਆਕਰਣ (व्याकरणम्)—

	'भवत्' पुं०		'सरित्' स्त्री०	
	ए० व०	ब० व०	ए० व०	ब० व०
प्र०	भवान्	भवन्तः	सरित्/सरिद्	सरितः
द्वि०	भवन्तम्	भवतः	सरितम्	सरितः
तृ०	भवता	भवद्भिः	सरिता	सरिद्भिः
च०	भवते	भवद्भ्यः	सरिते	सरिद्भ्यः
पं०	भवतः	भवद्भ्यः	सरितः	सरिद्भ्यः
ष०	भवतः	भवताम्	सरितः	सरिताम्
स०	भवति	भवत्सु	सरिति	सरित्सु
सं०	हे भवन् !	हे भवन्तः !	हे सरित्/सरिद् !	हे सरितः !

'भवत्' ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਤਰਹਾਂ ਵੀ श्रीमत्, धीमत्, हनुमत्, बुद्धिमत्, भगवत् ਆਦਿ ਹਲੰਤ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵੀ ਚਲੰਣਗੇ। ਇੰਜ ਹੀ 'सरित्' ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ विद्युत्, शरद्, आपद्, विपद् ਆਦਿ ਇਸਤ੍ਰੀਲਿੰਗ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

'भवत्' शब्द की भाँति श्रीमत्, हनुमत्, बुद्धिमत्, भगवत् आदि पुं० हलन्त शब्दों के रूप भी चलेंगे। योषित्, आपद्, विपद्, संसद् आदि स्त्री० हलन्त शब्दों के रूप 'सरित्' की तरह चलेंगे।

'नामन्' नपुं०

	ए० व०	ब० व०
प्र०	नाम	नामानि
द्वि०	नाम	नामानि
तृ०	नाम्ना	नामभिः
च०	नाम्ने	नामभ्यः
पं०	नाम्नः	नामभ्यः
ष०	नाम्नः	नाम्नाम्
स०	नाम्नि/नामनि	नामसु
सं०	हे नाम/नामन् !	हे नामानि !

ਇੰਜ ਹੀ ਧਾਮਨ੍, ਵ੍ਯੋਮਨ੍, ਪ੍ਰੇਮਨ੍, ਦਾਮਨ੍ ਆਦਿ ਨਕਾਰਾਂਤ ਨਪੁੰਸਕਲਿੰਗ ਵਾਲੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।
इसी प्रकार धामन्, व्योमन्, प्रेमन्, दामन् आदि नकारान्त नपुंसक-लिंग वाले शब्दों के रूप भी होते हैं।

ਅਭਿਜਾਸ (अभ्यासः)—

1. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਮੂਲ ਸ਼ਬਦ ਲਿਖੋ। ਜਿਵੇਂ—
निम्नलिखित शब्दों के मूल शब्द लिखिए।
जैसे—आत्मनः = आत्मन्
स्वामिनम्, विद्वांसः, नाम्ना, विपदः, भवतः।

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਵਿਭਕਤੀ ਅਤੇ ਵਚਨ ਪਛਾਣੋਂ।
नीचे दिये हुये शब्दों की विभक्ति और वचन पहचानिए।
संपत्सु, गुणिनः, विदुषे, जन्मना, धनिनः, नाम्नः, विपदि।

3. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਸ਼ਬਦ ਰੂਪ ਲਿਖੋ।
कोष्ठक में दिए गये निर्देश के अनुसार शब्द-रूप लिखिए।
जैसे—संपत् (तृतीया ए० व०) = सम्पदा

संपत्	(चतुर्थी ए० व०)
भवत्	(षष्ठी ब० व०)
चन्द्रमस्	(प्रथमा ब० व०)
भवत्	(तृतीया ए० व०)
आत्मन्	(द्वितीया ए० व०)

4. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिए ।

सेवकः राज्ञे निवेदयति ।
राजा भिक्षुकाय धनं ददाति ।
भवतां गृहं कुत्र ?
भगवान् व्यासः गीताम् अलिखत् ।
का भवतीषु ज्येष्ठा ?

5. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦਾਂ ਨਾਲ ਵਾਕ ਬਣਾਓ । ਜਿਵੇਂ—
निम्नलिखित पदों के साथ वाक्य बनाइये ।

जैसे—गुणिनः = भवतां बालकाः **गुणिनः** सन्ति ।

हस्तिम्, भवता, भगवन्, श्रीमद्भिः, नाम्ना ।

6. ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिये ।

ਸੰਪੱਤੀ ਵਿਚ ਸਾਰੇ ਮਿੱਤਰ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ।	संपत्ति में सभी मित्र होते हैं ।
ਮੁਸ਼ੀਬਤ ਵਿਚ ਮਿੱਤਰ ਵੀ ਦੁਸ਼ਮਣ ਬਣ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ।	विपत्ति में मित्र भी शत्रु बन जाते हैं ।
ਚੰਦਰਮਾ ਤੋਂ ਸ਼ੀਤਲਤਾ ਮਿਲਤੀ ਹੈ ।	चन्द्रमा से शीतलता मिलती है।
ਜਗਤ ਵਿਚ ਸਾਰੇ ਸੁਖੀ ਨਹੀਂ ਹਨ ।	जगत् में सभी सुखी नहीं है ।
ਹਨੁਮਾਨ ਨੇ ਰਾਮ ਕੀ ਸਹਾਇਤਾ ਕੀਤੀ ।	हनुमान् ने राम की सहायता की ।

7. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਉੱਤਰ ਦਿਓ ।

अपने पाठ से उत्तर दीजिये ।

चन्द्रमा कुत्र शोभते ?
भक्ताः कं पूजयन्ति ?
राजा कस्मै धनं ददाति ?
सन्यासिनः केभ्यः विरक्ताः भवन्ति ?
हंसाः कुत्र तरन्ति ?
सर्वे कदा सखायः भवन्ति ?

8. ਉਚਿਤ ਵਿਭਕਤੀ ਨਾਲ ਵਾਕ ਪੂਰਤੀ ਕਰੋ ।

उपयुक्त विभक्ति के साथ वाक्य-पूर्ति कीजिए ।

(मरुत्) .... पुष्पाणि भूमौ पतन्ति ।
(जगत्) .... सर्वे स्वार्थपराः सन्ति ।
(विद्वत्) .... पूजा सर्वत्र भवति ।
(बुद्धिमत्) .... इमे बालकाः सन्ति ।
(चन्द्रमस्) .... उदयः रात्रौ भवति ।

कोऽतिभारः समर्थानां, किं दूरं व्यवसायिनाम् ।
को विदेशः सविद्यानां, कः परः प्रियवादिनाम् ॥

एकत्रिंशः पाठः

ਸ਼ਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰਤਿਆ (ਪੁੰ०) ਦੁਤਿਆ ਅਤੇ ਤ੍ਰਿਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ

शतृ-प्रत्यय (पुं०) द्वितीया और तृतीया विभक्ति ।

माता खेलन्तं पुत्रं पश्यति । शिक्षकः खेलतः बालकान् आह्वयति ।

गच्छता बालकेन पथि सर्पः दृष्टः । भजद्भिः भक्तैः देवः पूजितः ।

जलं पिबन्तं पुरुषं रामः अपृच्छत् । पठतः छात्रान् अध्यापकः कथयति ।

गच्छता मया मार्गः विस्मृतः । विकसद्भिः कुसुमैः सुरभिः प्रसरति ।

हसन्तं मां सरिता अभाषत् । चरतः पशून् सेवकः निवारयति ।

भ्रमता व्याधेन मृगः हतः । खादद्भिः बालकैः जलं पीतम् ।

तरता नाविकेन नौका गृहीता । भ्रमद्भिः सिंहैः गर्जनं कृतम् ।

ਸ਼ਬਦਕੋਸ਼ (शब्दकोशः)—

आ√ह्वे = बुलाना (ਬੁਲਾਉਣਾ) वि√स्मृ = भूलना (ਭੁਲਣਾ)

सुरभि = सुगन्ध (ਸੁਗੰਧ) निर्√वृ = निवारित करना (ਮਨਾ ਕਰਣਾ)

व्याध = शिकारी (ਸ਼ਿਕਾਰੀ) गर्जन = गरजना (ਗਰਜਣਾ)

ਨਿਰਦੇਸ਼ (निर्देशः)—

'ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੁਆ', 'ਲਿਖਦਾ ਹੁਆ', ਆਦਿ ਵਰਤਮਾਨ ਕਾਲ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਦਾ ਬੋਧ ਕਰਣ ਲਈ ਧਾਤੂਆਂ ਦੇ ਬਾਦ ਸ਼ਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰਤਿਆ ਲਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਸ਼ਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਸ਼ਬਦ ਕਰਤਾ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ।

'पढ़ता हुआ', 'लिखता हुआ' आदि वर्तमान कालिक क्रिया का वोध करने के लिए धातुओं के वाद शतृ-प्रत्यय लगाया जाता है। शतृ-प्रत्ययान्त शब्द कर्ता के विशेषण होते हैं।

पठत्—पुं०

	ए० व०	ब० व०
द्वि०	पठन्तं	पठतः
तृ०	पठता	पठद्भिः

ਪੁਲਿੰਗ ਸ਼ਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰਤਿਆਂਤ ਸਾਰੇ ਸਬਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ 'पठत्' ਦੀ ਤਰਹਾਂ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

पुंलिग शतृ-प्रत्यान्त सारे शब्दों के रूप 'पठत्' की तरह होते हैं।

ਅਭਿਆਸ (अभ्यासः)—

1. ਅਪਣੇ ਪਾਠ ਵਿਚੋਂ ਉੱਤਰ ਦਿਓ।
   अपने पाठ से उत्तर प्रस्तुत कीजिए ?

   माता किं कुर्वन्तं पुत्रं पश्यति ?

   अध्यापकः कान् कथयति ?

   सेवकः कान् निवारयति ?

   कैः सुरभिः प्रसरति ?

   कैः गर्जनं कृतम् ?

2. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਤੀਜੀ ਵਿਭਕਤੀ ਵਾਲੇ ਪਦਾ ਨੂੰ ਪਛਾਣੋ।
   निम्नलिखित शब्दों में से तृतीया विभक्ति वाले पदों को पहचानिए।

   चलतः, चलद्भिः, भ्रमता, गच्छन्तं, स्मरता,
   हसन्तं, चरतः, वदन्तं, वदद्भिः ।

3. ਬਰੈਕਟ ਵਿਚ ਲਿਖੇ ਗਏ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਸ਼ਤ੍ਰਿ ਪ੍ਰਤਿਆ ਜੋੜ ਕੇ ਠੀਕ ਵਿਭਕਤੀ ਰੂਪ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

कोष्ठक में लिखे गये धातुओं में शतृ-प्रत्यय जोड़कर उपयुक्त विभक्ति के साथ रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

जैसे—(गम्) ···· ···· ···· बालकम् अहम् अपश्यम्।

गच्छन्तं बालकम् अहम् अपश्यम्।

(गम्) ···· ···· ···· कालेन सूर्यः अस्तंगतः।

(भ्रम) ···· ···· ···· चक्रैः शत्रु आहतः।

(धाव्) ···· ···· ···· चौरान् प्रहरी अपश्यन्।

(गम्) ···· ···· ···· गजं बालकाः अपश्यन्।

(हस्) ···· ···· ···· शिशुं दृष्ट्वा माता प्रसन्ना भवति।

(पठ्) ···· ···· ···· छात्रान् गुरुः आह्वयति।

4. ਠੀਕ ਪਦ ਦੇ ਨਾਲ ਖਾਲੀ ਥਾਂ ਭਰੋ। ਜਿਵੇਂ—

उपयुक्त पद के साथ रिक्त स्थान भरें।

जैसे—जले तरतः / तरद्भिः जनान् पश्य।

जले **तरतः** जनान् पश्य।

गच्छन्तं / गच्छता सर्पं बालकः पश्यति।

नृत्यन्तं / नृत्यतः वानरं जनाः पश्यन्ति।

गायन् / गायन्तः गायकः प्रशंसितः अभवत्।

धावता/धावद्भिः कुक्कुरैः चौराः गृहीता।

हसन् / हसन्तं बालकः अकथयत्।

क्रीडतः / क्रीडन्तं बालकान् मा निवारय।

5. ਹੇਠਾਂ ਦਿੱਤੇ ਹੋਏ ਪਦ ਕੇੜੀਆਂ ਧਾਤੂਆਂ ਨਾਲ ਬਣੇ ਹਨ ?

निम्नलिखित पद किन धातुओं से बने हैं ?

तरन्, कुर्वता, पठन्तः, चलतः, स्मरता ।

6. 'ਪਠ੍' ਅਤੇ 'ਚਲ੍' ਧਾਤੂ ਦੇ ਪੁਲਿੰਗ ਵਿਚ ਪ੍ਰਥਮਾਂ, ਦੁਤਿਆ ਅਤੇ ਤ੍ਰਿਤੀਆ ਵਿਭਕਤੀ ਦੇ ਰੂਪ ਲਿਖੋ ।

पठ् एवं चल्-धातु के पुंल्लिग में प्रथमा, द्वितीया तथा तृतीया विभक्ति के रूप लिखिए ।

7. ਹੇਠਾਂ ਲਿਖੇ ਪਦਾਂ ਨੂੰ ਸੰਸਕ੍ਰਤ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰੋ ।
निम्नलिखित पदों से संस्कृत-वाक्य वनाइए ।

वहन्तम्, भ्रमन्तः, खादता, पिवद्भिः, गच्छता, चलन्तः, कथयन् ।

8. ਸੰਸਕ੍ਰਤ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

ਗੁਰੂ ਦੀ ਸ਼ੇਵਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਛਾੱਤਰ ਨੇ ਵਿਦਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀ ।	गुरु की सेवा करते हुए छात्र ने विद्या प्राप्त की ।
ਨੱਚਦੇ ਹੋਏ ਬਾਂਦਰਾ ਨੇ ਪੈਸੇ ਮੰਗੇ ।	नाचते हुए वानरों ने पैसे माँगे ।
ਮਾਤਾ ਨੇ ਰੋਂਦੇ ਹੋਏ ਮੁੰਡੇ ਨੂੰ ਚੱਪ ਕੀਤਾ ।	माता ने रोते हुए वालक को शांत किया ।
ਬੋਲਤੇ ਹੋਏ ਨੇਤਾਵਾਂ ਦੇਖੋ ।	बोलते हुए नेताओं को देखो ।
ਕੱਮ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਮਜ਼ਦੂਰਾਂ ਨੂੰ ਲਿਆਓ ।	काम करते हुए श्रमिकों को लाओ ।
ਦੌੜਦੇ ਹੋਏ ਬਾਲਕ ਤੋਂ ਮੈਂ ਹਾਰ ਗਿਆ ।	दौड़ते हुए वालक से मैं हार गया ।

—23—

9. ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕਰੋ ।
अपनी भाषा में अनुवाद कीजिये ।

चलता गोपालेन फलं खादितम् ।
भिक्षां याचन्तः भिक्षुकाः भ्रमन्ति ।
क्रीडतः बालकान् अहं पश्यामि ।
कार्यं कुर्वन् सेवकः अपृच्छत् ।
मार्गं पश्यन् गच्छ ।
खादन् मा गच्छ ।

करारविन्देन पदारविन्दं, मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥